भिखमगो की पेन्शन कथा

(व्यग्य सग्रह)

भिखमगो की पेन्शन कथा

(व्यग्य सग्रह)

ईश्वर शर्मा

पचशील प्रकाशन, जयपुर

उन तमाम
पाठको और शुभचिन्तको को
जिन्होने मुझे
व्यग्य लेखन की ऊर्जा दी

क्रम

भिखमगो की पेन्शन कथा

यदि चुनाव न आए, तो सरकार की बहुत सी परेशानिया आप से आप दूर हो जाए। लेकिन बुरा हो इस चुनाव का, जिसके कारण सरकार को जब-तब संवेदनशील बनन का नाटक करना पडता है और किसी की गरीबी पर, किसी की निरीहता पर गिलसरीन के आसू टपकाने पडते हैं। इस बार सरकारी सवेदना की गाज गिरी निराश्रितो पर। सरकार ने घोषणा की, "लूले, लगडे, अपग निराश्रित लोगो को भीख मागने की जरूरत नही है। उन्हे नियमानुसार सरकार द्वारा पेशन दी जाएगी।"

सरकार की इस घोषणा से भिखमगो मे खुशी की लहर दौड गई। सोचने लगे—"चलो सरकार की कृपा से भिखमगो के दिन फिर गए। दरवाजे दरवाजे भटकने की झझट से तो मुक्ति मिली।" कुछ भिखमग जो सरकार की सवेदनशीलता नही समझ पाए थे, अब भी भीख मागते घूम रहे थे। उन्हे दुकानदारो ने सरकारी घोषणा की जानकारी देकर दुत्कारना शुरू कर दिया।

घोषणा होते ही सरकारी कारिन्दो ने भिखमगो को पेंशन देने के लिए नियम बनाना प्रारम्भ कर दिया। जिनकी आयु 60 वष से ऊपर हो जो अपग हो जिनका कोई आश्रयदाता न हो, जिनकी जीविकोपाजन का कोई साधन न हो ऐसे लोगों को निराश्रितो की परिभाषा मे शामिल किया गया। यह नियम बनाया गया कि ऐसे निराश्रितो को शासन की ओर स प्रतिमाह 60 रुपये पेन्शन दी जाएगी। इसके साथ ही सरकार ने भीख मागने पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया।

मेरे एक परिचित मत्री जी हैं जिनके यहा मेरा आना-जाना लगा

रहना है। मैंने उनसे पूछा, "भिखमगो को पेन्शन दिए जाने वाली बात तो समझ मे आ गई, लेकिन भीख मागने का प्रतिबन्ध क्यो लगाया गया है ?"

मत्री जी ने बताया, "भीख मागने से सरकार की छवि धूमिल होती है।"

मैंने पूछा, "और सरकार जब स्वय दूसरो से भीख मागती फिरती है तब क्या छवि धूमिल नहीं होती है ?"

मत्री महोदय ने जवाब दिया, 'वह भीख नही होती बल्कि परस्पर सदभाव और सहयोग का आदान प्रदान होता है। भीख मागना निकृष्ट कार्य है। इसमे व्यक्ति का स्वाभिमान नष्ट हो जाता है। सरकार की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह हर नागरिक के स्वाभिमान की रक्षा करे।"

इसी बीच मत्री महोदय के फोन की घटी बजी, सामने फोन पर शायद कोई बडा ठेकेदार था। मत्रीजी गिडगिडाने लगे हैलो हा देखो चुनाव सामने आ रहा है पार्टी-फण्ड म रुपयो की सख्त जरूरत है तुम्हार सगठन से पाच लाख रुपये मिलने ही चाहिए नही तो हाईकमान के सामने मुझे नीचा देखना पड जाएगा।'

यह सब सुनने के बाद मैंने भिखमगो के स्वाभिमान के सम्बन्ध म अधिक बात करना उचित नही समझा।

कुछ दिनो के पश्चात सरकारी प्रक्रिया तय हो गई।

नियम बना दिया गया कि जिस शहर मे नगरपालिका अथवा ग्राम-पचायत जहा जैसी व्यवस्था हो वहा से निर्धारित प्रपत्र लेकर पात्र भिखमगे को पूर्ण विवरण स्वय भर कर कार्यालय म जमा कराना होगा। प्रपत्र की कुछ बातें इस प्रकार थी—

नाम पिता का नाम जन्म तिथि, स्थायी पता आदि साफ साफ भरने के बाद आवेदक भिखमगा को अपनी अधिकतम वार्षिक आय घोषित करनी होगी जिसे सक्षम राजस्व अधिकारी से प्रमाणित कराना आवश्यक होगा। भिखमगे को यह घोषणा भी करनी होगी कि उसका देश अथवा विदेश के किसी बैंक मे कोई खाता नहीं है और यदि खाता हो तो उसम जमा राशि का विवरण देना होगा। आवेदक को स्पष्ट उल्लेख करना पडेगा कि वह स्वय को किस हैसियत से भिखमगा मानता है तथा उस नगर के दो

प्रतिष्ठित व्यक्तियो स इस तथ्य को प्रमाणित कराना होगा। आवदन के साथ ही आवदक भिखमगे को प्रदेश का मूल निवास प्रमाण पत्र भी सलग्न करना होगा। आवेदक को आवेदन पत्र के अतिरिक्त एक हलफनामा भी दना होगा जिसम यह घोषित करना होगा कि आवेदन पत्र मे भरी गई समस्त जानकारी सत्य तथा सही है और गलत पाये जाने पर आवदक भिख-मगा दण्ड का भागी होगा।

इतनी लम्बी प्रक्रिया देख कर मैंने एक अधिकारी मित्र स पूछा, "भिखमगो के लिए इतनी लम्बी खाना पूरी ?'

अधिकारी ने बताया, 'यदि इतनी सावधानी न बरते तो नगर के अधिकाश लोग भिखमगो की लाइन मे लग कर पेशन ले जाएग।"

मरे द्वारा इस बात पर आश्चय व्यक्त करने पर उस अधिकारी न आगे बताया, "और लाइन म सबस पहले नताओ के रिश्तदार व चमचे ही दिखाइ पडेंगे। सही भिखमगे तो फिर भी भीख मागते मिलेंगे।"

मैंन इसके बावजूद भी विरोध प्रकट करते हुए कहा, "वह सब तो ठीक है लेकिन ये अपग अपनी कागजी खाना पूरी कैसे कर पाएगे ?"

अधिकारी ने जवाब दिया "सरकारी नियमो की खाना-पूरी तो अच्छे पढे लिखे भी नहीं कर पाते ये भिखमगे क्या खाक करेंगे ? नियम सरकारी कमचारी बनाते हैं, उन्हे कस पूरा करना है उसे वही बतात हैं। भिखमगो की जानकारी भी वही क्लक पूरी कर लेगा जो टेबल पर बैठेगा।"

मैंने हष प्रकट करत हुए कहा, 'मतलब उस क्लक को यह सब करने के लिए सरकार न आदेश दिया है।"

अधिकारी न पलट कर मुझे जवाब दिया ' मैंने यह कब कहा कि क्लक को आदश दिए गए हैं। मैंन तो यह बताया है कि वह सब जानकारी भर लेगा। इसका अथ यह हुआ कि भिखमगे जब असमथता प्रकट करेंगे तब वह क्लक उन्हे सहयोग दगा।"

मैंने भोलेपन से पूछा, ' जब आदेश नही है तो क्लर्क को क्या पडी है जो वह सहयोग देगा।"

अधिकारी ने मन्द मुस्कान के साथ कहा, ' तुम्हे कभी सरकारी आफिसो मे काम नहीं करना पडा मालूम पडता है, नहीं तो समझ जाते कि

सरकारी बाबू कब और क्यो सहयोग देता है।"

अधिकारी की गूढ़ रहस्य वाली बात तो मुझे सचमुच समझ म नही आई। हां, इतना अवश्य समझ गया कि भिखमगो के पास अवश्य कोई चीज ऐसी है जिसका आकषण सरकारी बाबुओ से किसी तरह काम करवा लेगा। और मैं पहली बार किसी सरकारी घोषणा के प्रति आश्वस्त हुआ कि उसका लाभ सम्बंधित व्यक्ति को मिल जाएगा।

तीन माह बाद मुझे सरकार की इस घोषणा की अचानक याद आई। मन म यह इच्छा जागत हुई कि कितने भिखमगे पेंशन पा रहे हैं, इसका पता लगाया जाए।

मैं नगरपालिका दफ्तर पहुचा। वहा पता चला कि तीन महीने म अभी तो आवेदन ही पूण किए गए हैं। पेंशन मिलने मे तो काफी विलब होगा।

मैंने सम्बधित क्लक से जानना चाहा, 'आवेदन पूरे हो गए हैं तो पेंशन राशि मिलने म विलब किस बात का है ?'

क्लक न जवाब दिया यदि समस्या आते ही उनका निराकरण हो जाए तो फिर सरकार और सरकारी दफ्तर खाली बैठे क्या मक्खिया मारेंगे ?'

मैंने पूछा मक्खिया नही मारेंगे तो फिर काम मे लगे रहन क लिए क्या करेंगे जिससे इन भिखमगो को पेंशन मिल जाए ?"

क्लक ने बताया "सरकारी दफ्तर के काम मे लगे रहना अलग मुद्दा है और भिखमगो को पेंशन मिल जाना दूसरी बात है।'

मैंने उलझाव से बचने के लिए सीधी बात पूछी और क्या कायवाही बाकी रह गई है ?"

उसन बताया 'अभी तो पारम्भ हुआ है। सम्पूण प्रक्रिया तो काफी लम्बी है।'

मैंन बडी श्रद्धापूवक पूरी प्रक्रिया की लम्बाई जानने की जिज्ञासा प्रकट की।

टेबल पर फैले सब कागजो को एक जगह समेट कर पेपरवेट से दबात

हुए क्लर्क ने जेब से तम्बाकू की डिबिया निकाली। कुरसी को थोडा पीछे खिसका कर झुलाते हुए उसने बडे इतमीनान से तम्बाकू चूना निकाल कर मला और उसकी फांक मुह मे डाल कर मुह चलाया। थोडी देर बाद पास रखी जालीदार टोकरी मे पीक मार कर तब मेरी ओर इस भगिमा मे मुखातिब हुए मानो भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता रहस्य से परिचित कराने जा रहे हो।

उसने मुझे भिखमगो का पेंशन रहस्य समझाते हुए बताया कि आवेदन पत्र पूर्ण हो जाने के पश्चात सबसे पहले शासकीय चिकित्सक के पास भेजे जाएगे। चिकित्सक द्वारा भिखमगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उसके रोगो की पुष्टि की जाएगी। इसके बाद इस बात की तसल्ली की जाएगी कि ये भिखमगे सचमुच निराश्रित हैं। यह पता लगाया जाएगा कि इनके आय के स्रोत कौन-कौन से हैं, इतनी सब पुष्टि हो जाने के बाद समस्त आवेदनो को स्वीकृति हेतु जनपद पचायत के माध्यम से समाज कल्याण विभाग को प्रेरित किया जाएगा। जनपद पचायत इस पर अपनी टिप्पणी लिखकर समाज कल्याण विभाग को भेजेगी। समाज कल्याण विभाग बजट आबटन के अनुपात मे भिखमगों की सख्या का निर्धारण करेगा जिसमे अनुसूचित जाति व जन-जाति के लिए तीस प्रतिशत कोटा आरक्षित रहगा। वह स्वीकृत सूची जनपद पचायत के माध्यम से नगरपालिका कार्यालय पहुचेगी। इतना सब हो जाने के बाद पेंशन राशि का इतजार किया जाएगा। जब समाज कल्याण विभाग को राशि की सुविधा होगी तब वह धनराशि का चेक जनपद पचायत को भेजेगा। जनपद पचायत उस चेक को पहले अपने खाते मे जमा कर अपनी सुविधानुसार जनपद का चेक नगरपालिका को भेजेंगे।

हनुमान की पूछ से भी लम्बी इस प्रक्रिया को सुनकर भिखमगो का तो क्या होगा, नहीं मालूम लेकि मुझे चक्कर आने लगा था। पास खडे चपरासी से मैंने तत्काल पानी मगवाया और ताबडतोड दो गिलास पानी पीने के पश्चात लम्बी सास छोडते हुए पूछा, "इसके बाद तो इन भिखमगो को पेंशन मिल जाएगी ना?"

क्लर्क ने हसते हुए जेब से माचिस की डिबिया और बीडी का बडल

निकालते हुए कहा, "अभी कहा अभी नियम पूरे थोडी हुए हैं, जो इह पेन्शन मिल जाएगी।"

मैं लगभग पस्त भाव से कुरसी पर पसर गया। और थके स्वर म मैंन पूछा, "भिखमगो को पेन्शन प्राप्त करन के लिए और क्या क्या पापड बेलने पडेंगे, वह भी बता डालिए।"

उसने मेरी जानकारी मे वद्धि करते हुए बताया, "जनपद पचायत द्वारा भेजा गया चेक पहले नगरपालिका के खात म जमा होगा। और जब हमे फुरसत मिलेगी तब भिखमगो का अलग वाउचर बनाकर उतनी राशि का नगरपालिका का चेक को आपरेटिह बक को भेजा जाएगा।"

मैंने चौंकत हुए तत्परतापूर्वक पूछा, "बैंक मे चेक क्यो भेजा जाएगा ?"

क्लक ने तसल्लीपूर्वक जवाब दिया, 'भिखमगो को पेन्शन राशि का भुगतान बैंक से प्राप्त होगा।'

मैंन फिर पूछा, 'बैंक से भुगतान करने के पीछे सरकार की क्या मशा है ?'

उसन बताया, सरकार नही चाहती कि भिखमगे जैसे शोपित, पीडित वग को रुपय देन म किसी किस्म का भ्रष्टाचार पनपे। इसलिए उन्हे सीधे बैंक से रुपया दिलाने की योजना बनाई गई है।'

एकबारगी तो मन म यह विचार आया, इसका तात्पय यह हुआ कि सरकारी विभागो मे सीधे जो भुगतान होत हैं उनमे भ्रष्टाचार होता है। लेकिन वातावरण खराब न हो जाए इस ख्याल के मैंने यह बात नहीं कही। लगभग हथियार डालत हुए मैंन पूछा 'फिर वहा बक म इन भिखमगो को कौन कौन सी खाना पूरी करनी पडेगी यह भी बता ही दीजिए।'

क्लक ने उगलियो के बीच मे दबी बीडी का अतिम कश मार कर वही से बैठे बैठे बचा हुआ टुकडा आफिस के कान म लापरवाहीपूवक फेंका और कहा, सबसे पहल इन भिखमगो को स्वय के खच स अपना फोटो खिचवा कर बैंक म देना होगा।'

मैंन पूछा ' बक फोटो का क्या करेगा ?

उसने कहा सभी भिखमगे साले देखन मे एक जैस लगते हैं। बैंक

वाला उन्हें कैसे पहचानेगा। उनकी फोटो पास बुक में लगी रहेगी उससे पहचान कर रुपया दे पाएगा।"

मन ही मन क्लर्क की बात से मैं पहली बार सहमत हुआ कि वास्तव में भिखमंगे, चाहे व किसी भी वर्ग या लिबास में हों, एक जैसे ही दिखते हैं।

मैंने पूछा, फोटो देने के बाद क्या करना होगा ?"

उसने बताया, "भिखमगों को बीस रुपये जमा करवा कर बैंक में अपना बचत खाता खोलना होगा। तब उन्हें पास बुक मिल सकेगी।"

मैंने जानना चाहा, "भिखमगों को ये बीस रुपया कौन देगा ?"

उसने जवाब दिया, 'यह बीस रुपया हर भिखमंगे को अपने पास से देकर खाता खोलना होगा और यह रकम हमेशा उनके खाते में जमा रहेगी।"

आगे की विस्तत कार्यवाही का विवरण देते हुए उसने यह भी बताया कि नगरपालिका द्वारा भिखमगों का वाउचर और चेक बैंक में भेजे जाने पर बैंक द्वारा भिखमगों के खातों में अलग-अलग रकम जमा की जाएगी। इसके पश्चात ही भिखमंगे अपनी जमा रकम निकाल सकेंगे। इसके लिए उन्हें बैंक में फारम भर कर देना होगा तब उन्हें बैंक से रकम मिल जाएगी।

उस क्लर्क ने इतने इतमीनान से 'तब उन्हें रकम मिल जाएगी' कहा मानो भिखमंगों को निश्चित रूप से रकम मिल गई हो। इतनी लम्बी प्रक्रिया और इतनी लम्बी अवधि के बीच आफिस दर आफिस उनके भटकाव और प्रतीक्षा की कल्पना से मेरी तो सास ही उखड़ने लगी थी। भिखमगों का तो शायद दम ही निकल जाएगा।

कुछ माह बाद यह जानने की गरज से कि भिखमगों को पेंशन का रुपया मिला या नहीं, मैं बैंक पहुंचा।

वहां मैंने देखा कि बैंक के अधिकारी, बाबू और चपरासी मिलकर भिखमगों की भीड़ खदेड़ने में लगे हैं और गुस्से में उन्हें गालियां बक जा रहे हैं, मैंने उन्हें शांत करते हुए गुस्से का कारण जानना चाहा।

बैंक अधिकारी ने आक्रोशपूर्वक बताया, ये साले भिखमंगे समझते हैं

कि बैंक वाले बस केवल इन्ही का काम करने के लिए बैठे हैं। सुबह से शाम तक दरवाजे पर धरना दिए बैठे रहते हैं सामने, नगें भूखों की तरह, दो दिन भी सब्र नही कर सकत हैं। उधर नगरपालिका से कागज पाया नहीं कि इधर हमारी छाती पर सवार हो जाते हैं।

मैंने उन्हे शान्त करते हुए कहा, "चलो जाने भी दो, भिखमगें हैं बेचारे। पैसो की तगी किसको नही होती। दे दो उनका रुपया अपना क्या जाता है।"

मेरी बातो से थोडा ढीला पडते हुए वह अधिकारी ने मुझे विश्वास में लेत हुए बताया 'बात तो आपकी ठीक है लेकिन हमारी भी कुछ मजबूरिया हैं। आप तो जानते हैं कि ये को आपरेटिव्ह बैंक की छोटी सी ब्राच है। यहा ज्यादा रकम तो जमा रहती नही है। नगरपालिका ने भिखमगों की रकम भेजी थी तो उससे हमने बैंक के स्टाफ को तनखा बाट दी। अब और कही स रुपया आएगा तो इन भिखमगो को दे सकेंगे।"

इस जवाब के बाद कुछ कह सकने अथवा कर सकने की स्थिति म मैं नहीं रह गया था। बैंक से बाहर निकलने पर मुझे एक परिचित अपग दिखाई पडा। मैंने उससे पूछा, "प्रति माह कितना रुपया मिल जाता है?'

उसने बताया सब कट-कुटाकर आखिर मे तीस रुपया महीना हाथ म आना है बाबूजी।"

आगे उसके बताए बिना ही मैं समझ गया कि बाकी तीस रुपया इतनी लम्बी प्रक्रिया के दौरान कई लोगो की सवेदनाओं को सन्तुष्ट करने म लग जाता होगा। क्योंकि जटिल शासकीय प्रक्रियाए आफिस दर-आफिस कितने ही भिखमगो को अस्तित्व मे ला देती है, जिनका उदर पोषण ऐस अपगो को करना पडता है।

सरकार की सवेदनशीलता के प्रति मेरा हृदय श्रद्धावनत हो गया जिसने भिखमगो को भीख मागने के निकृष्ट काय से उबार कर स्वाभिमान से जीने की लाईन मे लगा दिया।

सभावनाए और जूते की दुकान

पिछले दिनो नगर मे बडी विचित्र बात देखने को मिली। एक के बाद एक जूते की तीन दुकाने खुल गईं। मैं बडी अचरज मे पडा आखिर इन दुकानो की उपयोगिता क्या है? लोक सभा के चुनाव तो कब से निपट गए। नगरपालिका और मडी के चुनावो को भी सम्पन्न हुए एक अरसा हो गया है। इस देश मे यही तो मुश्किल है। गर्मी के दिनो मे पानी की त्राहि त्राहि मचती है और कुआ खोदने की स्वीकृति बरसात के मौसम मे आती है। बीमार कर्मचारी इलाज के लिए एडवास मागता है और रकम तब मिलती है जब उसके परिवार वाले क्रिया कर्म निपटाने की तैयारी मे होते हैं। पुलिस परम्परागत तरीके से सब कुछ हो जाने के बाद ही मौका ए वारदात पर पहुचती है।

नई-नई जूता दुकानें थीं, हर दुकानदार जूता चप्पलो की मजबूती की बात कर रहा था। अब उन्हें कैसे अजमाए? अरे ऐसा ही था तो कुछ दिन पहले दुकान खोल देते। चुनावो मे बडी मारा मारी चल रही थी। मुझे इतने वर्षों म जूते चप्पलों की मजबूती का दूसरा कोई उपयोग अब तक समझ मे नहीं आया। अब इस बात को तो मैं स्वीकार कर ही नही सकता कि मजबूत पादुकाए अधिक दिनो तक चलती हैं। य मजबूत हो या कमजोर, सस्ती हो या महगी बस, यही तीन चार महीने चलती हैं वैसे भी पादुकाए, कोई कुर्सी पर स्थापित नेता नही हैं जो कार्य-काल पूरा होने भी कुर्सी से चिपकी रहे। इन पादुकाओ को तो घिसन के बाद हटना ही पडता है।

बहुत माथा-पच्ची के बाद भी मैं नगर मे जूता सस्कृति की

मम को समझ नहीं पाया। आखिर सही जानकारी के लिए एक जूता दूकान के संचालक गोला राम के पास पहुंचा। कमजोर और फटी चप्पलें पहने गोला राम मजबूत जूता की वकालत कर रहा था। मुझे अहसास हुआ कि यह आदमी जूते नहीं बेचता तो भी जिरह करके जिन्दा रह सकता था। यह व्यक्ति किसी भी जूते को आदमी और किसी भी आदमी का जूते मे फिट करने की काबिलियत रखता है। बन्द मुट्ठी के तीसरे छेद म फंसी बीडी का कश लेते हुए जिस पैनी निगाह से उसने मुझे ताडा तो मुझे ऐसा लगा मानो जूते के अनुपात म वह मेरी मजबूती आक रहा है। मुझे महसूस हुआ कि मजबूत जूते, हर आदमी के बूते की बात नहीं है।

बीडी दबे हाथ से चुटकी बजाकर बीडी की गुल झाडते हुए मुह से ढेर सारा धुआ उगल कर गोला राम ने पूछा—"क्या दू जूता या चप्पल?" मैंने थोडा सकुचाते हुए कहा—"नहीं, मुझे अभी यह नहीं चाहिए। मैं तो सिर्फ यह जानकारी करने आया हू कि नगर मे अचानक जूता संस्कृति कैसे विकसित हो रही है।"

गोला राम पक्का दुकानदार था। समझ गया— नेता नहीं हैं, जूतो की मजबूती का रौब नहीं खायेगा।" उसने कहा—"यहा कहा जूता संस्कृति वह तो विधान सभा मे चलती है। हम तो नगर को मजबूत आधार दे रहे हैं ताकि सनद रहे और वक्त जरूरत पर काम आए।"

मैंने पूछा—"किस तरह का मजबूत आधार?

पहली बार नये जूते की तरह काटने वाला गोला राम इस बार पुराने जूते की तरह कुछ ढीला पडा। दार्शनिक अन्दाज मे वह बोला— देखो, जब धरातल ठोस नहीं होता है, तब आधार मजबूत रखना होता है। और आज अगर समाज म किसी चीज की कमी है तो केवल ठोस धरातल की। इस गलित धरातल पर हमारे मजबूत जूते ठोस आधार देकर सामजस्य स्थापित करते हैं।'

मैं चकित हाकर गोलाराम की ओर ताकता रहा। यह व्यक्ति जूते बेच रहा है या किसी राष्ट्रीय पर्व पर राष्ट्र के नाम सदेश प्रसारित कर रहा है मैं यह भी तय नहीं कर पा रहा था कि गोला राम जूते बेचते-बेचते दार्शनिक हो गया अथवा दार्शनिक होने के बाद जूते बेचने लगा है।

मैंने थोडा पालिश लगाने वाले अन्दाज मे पूछा—' नरम धरातल पर ठोस आधार देने वाला आपका चिंतन तो समझ मे आया, लेकिन एक साथ तीन तीन दूकानें खुल जाने का क्या कारण है ?"

वह बोला—"माग और पूर्ति का नियम मालूम है या नही ? मार्केट म जिस वस्तु की माग बढ जाती है उसकी पूर्ति की उतनी ही व्यवस्था करनी पडती है। नही तो कालाबाजारी की सभावना बढ जाती है। अब क्या हमे इस देश मे जूतो की भी कालाबाजारी करवानी है ? सभावनाए बढती देखकर तीन तीन दूकानें खुल गई। हो सकता है एकाध और खुल जाए।"

अब यह गोलाराम मुझे अर्थशास्त्री लगने लगा। मुझे कुछ अटपटा-सा लगा। हर पहलू पर ठोस दलील पेश करने वाला, दार्शनिक सा चिंतन और अर्थशास्त्रियो का ज्ञान रखने वाला गोलाराम जूते बेच रहा है। लेकिन सभव है देश का वातावरण ही ऐसा हो गया होगा कि चिंतक और अर्थशास्त्रियो को जूते बेचने पर मजबूर होना पड गया है। मुझे तो केवल जिज्ञासा का समाधान चाहिए था।

मैंने पूछा— 'लेकिन वर्तमान मे कौन-सी सभावनाए बढ जानी हैं ?"

यह पूछते ही गोलाराम का चेहरा नये जूते सा चमकने लगा। सीजन्ड नेताओ की भांति उसने कुरते को झाडा, सिर को हल्की सी जुबिश दी धीरे से खखारते हुए दोना हाथो को सामने लाकर एक मुद्रा बनाई और बाला—' देख नही रहे हो नगर मे सभावनाए किस कदर बढ रही हैं। रस्सा खीच इतनी ज्यादा हो गई है कि ठीक झडा फहराते वक्त रस्सी टूट जाती है शिलान्यास का शिवाम्बु से अभिषेक हो रहा है। धर्मस्थल पर गले मिलने के बदले गला काटन की स्कीमे बनाई जा रही हैं। युवा शक्ति विशुद्ध रचनात्मक कार्यों मे लगी है। पुलिस वाले और कुछ नहीं मिला तो चाहे जिस पर 151 का पोस्टर चिपकाते घूम रहे हैं भोपाल दिल्ली एक-दूसरे को खो करने मे लगे हैं, मजदूर किसान स, किसान व्यापारी से, व्यापारी अफसर से, और अफसर मन्त्री से परेशान है मन्त्री को अपनी सात पीढी का चिंता परेशान किय हुए है। अब तुम ही बताओ इतनी वहद सभ ... ओ। देखते हुए जूता दुकान न खोलें तो और क्या करें ? हम तो ...

जिस चीज की सभावना देखेंगे उसकी ही दूकान खोलेंगे।"

इतना गहन अध्ययन सूक्ष्म विवेचन और दूरदर्शितापूण प्रवचन सुनकर मैं सोच म पड गया।

'ठीक कहते हो, चुनाव तो निपट जाते हैं उसके बाद भी पूरी सभावनायें विद्यमान रहती हैं।" कहता हुआ मैं दुकान से बाहर आ गया।

रास्ते म एक विचार मेरे दिमाग मे चक्कर काट रहा था—"क्या इन सभावनाओ का एकमात्र इलाज जूते की दुकान ही रह गई है?"

कटी पूछ वाला कुत्ता

बडी चौकाने वाली बात थी। पुलिस कुत्ते ने, नही-नही कुत्ता नही डाग ने, काम करने से इकार कर दिया था। यह खबर सुनते ही मामले का जायजा लेने मैं थाने जा पहुचा। पुलिस डॉग महोदय कुर्सी पर बैठे हुए थे। इस्पेक्टर प्रधान आरक्षक और कई सिपाही उनके चारो ओर खडे थे। सामने टेबल पर काजू किशमिश, बिस्कुट की अनछुई प्लेटें सजी हुई थी।

मैंने फुसफुसाकर एक सिपाही से पूछा—'तुम सबके सब एक कुत्ते के सामने क्यो खडे हो ?"

उसने बताया—"पुलिस डॉग महोदय सर्किल इस्पेक्टर ग्रेड के हैं अनुशासन का सवाल है इसलिए खडे हैं।" मैंने सोचा भारतीय पुलिस मे अब अनुशासन के सिवाय बचा ही क्या है?

मैंने महसूस किया कि कथित सर्किल साहब थोडा गुस्से म थे। तेज सासें ले रहे थे और लगातार गुस्से मे सिर हिला रहे थे। वे नाराजी से कह रहे थे— मैं चोर का पता नही लगाऊगा तुममे यदि कूबत है तो जाओ और पकड लो।'

इस्पेक्टर ने खुशामदाना स्वर में कहा— श्रीमान् जी, हमसे यदि चोर पकड म आ जाता तो आपको कष्ट क्यो देते। हमने तो पहले ही भरसक प्रयास करके देख लिया है। सब तरफ म निराश हो गए तब आपको सलाम भेजा है।"

—"सीधा-सीधा क्यों नहीं कहते कि अपनी बला हमारे सिर डाल रहे हो। हमे सब मालूम है। तुम लोग अपनी बदनामी से बचने के लिए ऐसा ही करते हो। हम चोर को पहचान लेंगे तो तुम चोर पकडने का पूरा

श्रय ल लोगे और जब चोर पकड के बाहर रहेगा तो यही कहते फिरोग कि पुलिस कुत्ता भी असफल रहा तो हमारा क्या वश चलता ।" सर्किल साहब न गुस्से से कहा ।

— नही श्रीमानजी, आप नाराजी म ऐसी तोहमत हम पर लगा रहे हैं। यकीन मानिए, हम तो हमेशा आपके कृतज्ञ रहे हैं। सच पूछिये तो हम आपके दम पर ही थानदारी का रुतबा बनाए हुए हैं जब भी आपने चोर को पहचाना है, हमने इसका पूरा श्रेय आपको ही दिया है यकीन न हो तो पुलिस रिकार्ड देख लीजिए ।

— अच्छा, यदि हम श्रेय देते हो तो बताओ अखबार म कब हमारी फोटो और तारीफ छपी है ? हम सब ध्यान रखत हैं। अभी चोर को पकडना है तो मीठी मीठी बाते कर रह हो और जब चोर पकडा जाएगा तो तारीफ अपनी छपवाओगे। जाओ, हम चोर नही पकडना है। तुम्हारा थाना है। तुम जानो और छानबीन करो।" पुलिस डाग महोदय का गुस्सा शात नही हो रहा था।

थानदार साहब न स्वर म नम्रता का प्रतिशत और बढाते हुए कहा—' श्रीमान्जी लीजिए ठडी बीयर का सवन कीजिए। आपको कुछ गलतफहमी हो रही है । हम आपका ध्यान हमेशा ही रखते हैं। आपको नकार कर हम अपनी पतिष्ठा कायम रखना है या नही ? आपक हुनर के दम पर ही तो हम पुलिस का रोब कायम किय हुए हैं ।

सर्किल साहब गुर्राए । बोले—"क्या ध्यान रखते हो यदि एसा ही ध्यान रखते हो तो बताओ पिछली चोरी मे जो दस तोले सोने के जेवर की कम जप्ती बनी थी उसमे से हमारा बटवारा कहा गया ? तुम क्या समझते हो कि हमे मालूम नही रहता ? हम अखबार पढते हैं और पुलिस डायरी का अध्ययन भी करते हैं। चोरी हम पकडें और माल तुम अकेले ही पचा जाओ।

इन्स्पेक्टर थाडा गडबडात हुए बोले— श्रीमान्जी, आपका यह कथन बिल्कुल सही है कि दस तोल सोने क जेवर की कम जप्ती बनाई गई थी। लकिन वह माल मैंने अकेल नहीं पचाया था। उस सोन से थाने म सभी ने अपनी अपनी दशा सुधारी थी और ऊपर भी ता पहुचाना पडा था नही

तो इतनी बडी बात क्या दब सकती थी ?"

—'हू ऊपर पहुचाना था तो क्या हम नीचे वाले हैं ?" डाग महादय भभक पडे ।

—"नही श्रीमान्जी ऐसी बात नही है। आप तो हमसे ऊपर वाले ही हैं लेकिन हमने सोचा कि इन सासारिक वस्तुओं से आपको क्या मोह ? बढिया खाने पीने और आराम करने को मिल जाय तो आपको सतुष्टि हो जाती है। यही सोचकर हमने आपको शेयर अलग स नही दिया।" इस्पेक्टर न सफाई दी।

—'हम डॉग हैं तो क्या हुआ। है तो आखिर पुलिस वाले ही। हमारे भी बाल बच्चे हैं। कल को उन्हे भी पुलिस म भरती करवाना है क्या यह सब फाक्ट मे हो जायगा ? हमारे खा पी लेने से कोई उनका काम तो नही चल जायेगा। इसके लिए रुपया लगगा और अभी से तैयारी करनी होगी। सकिल साहब बोले।

—"श्रीमान्जी, यकीन मानिये हमसे गलतफहमी के कारण ऐसी भूल हो गई। भविष्य मे अब ऐसा नही होगा। आपस निवदन है कि अब गुस्सा छोडिए और जलपान ग्रहण कीजिए। फिर चलकर चोर पकडने मे हम मार्गदर्शन दीजिए। आपके पीछे ही हमारा भी पेट लगा हुआ है।" इस्पेक्टर ने सकिल साहब को ठडा पडते देख मक्खन की मात्रा बढाई।

इस आश्वासन के बाद सकिल साहब काम करने के लिए तैयार हो गए। व आगे थे और पुलिस वाले पीछे पीछे चल रहे थे।

मैंने देखा पुलिस डॉग की पूछ कटी हुई थी। एक सिपाही से मैंने पूछा —इसका कारण क्या है ? तो उसने जवाब दिया— हर पुलिस डाग की पूछ कटी हुई होती है।"

मैंने पूछा—' ऐसा क्यो होता है ? '

वह बोला— कुत्ते के मुख्यत दो गुण होते हैं। या तो वह दुम हिलाता है या दुम दबाकर भाग जाता है। इसीलिए पुलिस म भरती होते ही कुत्ते की दुम काट दी जाती है तब वह न तो दुम हिला सकता है और ना ही दुम दबा कर भाग सकता है। ऐसी स्थिति म उसका दिमाग काम करने लगता है और वह जासूस डॉग बन जाता है।"

अपनी जिज्ञासा को शात करने के उद्देश्य से मैंने नया प्रश्न किया—"इसका अथ यह हुआ कि पुलिस म दुम कटा कर ही भरती हुआ जा सकता है ?"

इस पर उसने जुबान से तो कोई उत्तर नही दिया लेकिन उसकी आखो म मैंने पुलिस की जो भाषा पढी तो वहा से भागने म ही अपनी खैरियत समझी।

वहा से वापस आने के बाद मैं सोच रहा था—"इस देश म जाने कैसी विसगतिया देखने को मिलती हैं। जि हे दुम हिलाना चाहिये व दुम कटा कर दिमाग से काम लेन लगे हैं और जिनका काम दिमाग लडाना है वे दुम लगा कर हिलाने म समय बिता रहे हैं।"

क्रिकेट की चमक मे

क्रिकेट का मौसम शुरू हो गया। अब सरकार की चिन्ता खत्म हुई। बहुत दिनो से लोग बोफोस, फेयर फेक्स सूखा, अकाल का हल्ला मचा कर नीद हराम कर रहे थे। लोगो के पास कुछ काम तो था नही, खाली बैठे क्या करते। एक एक बयान बडे ध्यान से पढ़ रहे थे। सभाओ मे भारी भीड इकटठा हो रही थी। जब भी आपस मे मिलते दलाली, कमीशन स्वीटजरलैण्ड की चर्चा के सिवाय दूसरी काई बात नहीं होती थी।

सरकार बेचारी बडी परेशानी मे थी। एक मामले की पोल क्या खुल गई लोग गलतफहमी पाल बैठे थे कि बस यही अकेला मामला है। सरकार का जो कुछ बिगाडना है बस इसी इकलौते मामले से बिगाड देना है। प्याज के छिलके की तरह उघाडे चले जा रहे हैं। पीछा ही नही छोड रह हैं। उन बेचारो को कौन समझाए कि—"भैया इतनी बडी सरकार है, ऐसे अकेले मामले के दम पर नही चलती है।" वह तो भला हो गोपनीयता के नियमो का नही तो दूसरे मामले की हडिया भी बीच चौराहे मे फूटते क्या देर लगती। तब तो लोग सोना भी छोड देते। सिर्फ बहस के दम पर ही जिन्दगी गुजार देन वाले ये लोग चौबीसो घटो म छत्तीस घटे के लायक बहस करते नजर आते।

अरे खुल गया एक मामला, तो कौन सा पहाड टूट पडा है। ले लिया होगा किसी ने कमीशन, इस देश के किसी काम मे कोई अन्तर तो नही आ रहा है ना। ट्रेनें अब भी आ रही हैं जा रही हैं। पहले भी टकराती थी, अब भी टकरा रही हैं। अनाज का उत्पादन बढ रहा है, तो महगाई भी पहले की तरह बढ रही है। परिवार नियोजन बढ रहा है तो बच्चे भी बढ

रह है। बेरोजगारी मे अपना विश्व रिकाड टूटा तो नही, बरकरार है ना। फिर क्या फिजूल की बहसबाजी और चिन्ता मे पडे हुए हो। जाने दो, छोडो। व अपना रास्ता ढूढ रहे हैं हम अपना तरीका ढूढें लेकिन फालतू लाग हैं कि जिस चीज को एक बार पकड लिया छोडने का नाम ही नही लेते हैं। छोडो भई अब उसका पीछा सुन सुनकर कान पक गए हैं कौन सी सरकार है जो यह सब नही करेगी, ले सकते हो इसकी गारन्टी दूसरो की छोडो अपने आपकी गारन्टी ही ले लो तो जानें। यह तो भइया सवमान्य परम्परा है आज तुम बाहर हो तो चिल्ला रहे हो। कल को तुम कुर्सी पर बठोगे और वे बाहर रहेग तो व ऐसे ही चिल्लाएगे। तब तुम कहोगे— भ्रष्टाचार का कोई सबूत नही है सिद्ध करके दिखाओ।' और जहा तक सिद्ध करने का सवाल है न तो तुम सिद्ध कर पाओगे न आगे कभी वे कर पाएगे।

बेशक बडी परशानी की बात थी। मामला कुछ ज्यादा ही लम्बा खिचा चला जा रहा था। सरकार ने हर तरह से कोशिश करके देख लिया। थाडी माग मानने का नाटक कर लिया, जाच का झुनझुना पकडा दिया निष्कासन की बन्दर-घुडकी भी देकर देख लिया। सरकार के समयन म बडी बडी रैली निकाली गइ। जगह जगह से आस्था की आवाज उठ रही है। लकिन ये हैं कि दलालो म हुए काले हाथो को धोने का मौका ही नही द रहे हैं। अर जो हुआ सो हुआ ये जो आस्थाए प्रकट की जा रही हैं उन पर भी तो ध्यान दो। इतना सब हो चुकने के बाद भी लोगो के मन म उनक प्रति कितनी आस्था और विश्वास है जरा इसे भी तो देखो और कोई दूसरा देश होता तो लोगो की इतनी बडी आस्था के बाद तो आरोप लगाने वाला का सडक पर निकलना ही बन्द हो जाता।

लेकिन अब चिन्ता की काई बात नहीं है क्रिकेट का मौसम शुरू हो गया। क्रिकेट के नक्कारखाने म सूखा बोफोस जसी तूती की आवाज अब काई सुनन वाला नहीं है। अब कहीं काई फयर फेक्स नहीं रहेगा। सब फयर हो जाएगा। लोगों के पास क्रिकेट की चर्चा क सिवाय दूसरा कोई विषय नही होगा। इस देश की जनता की सही नब्ज यही है। किसी चर्चा म उनका ध्यान हटाना हो तो दूसरी बडी चर्चा का विषय सामन रख दो। लाग इमस हटकर उसम उलझ जाएग। जैस कि अभी सूखा, अकाल अंसे

भयानक सकट को कमीशन, स्विटजरलैण्ड के आगे भूले बैठे हैं। अब क्रिकेट के आग सब को भूल जाएगे। आज क्रिकेट राष्ट्र की मूलधारा है। राष्ट्रीय चरित्र है। राष्ट्रीय बहस का केन्द्र बिन्दु है। राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है क्रिकेट।

इस देश मे लोग किसी भी मुद्दे पर एक मत नही हो पाते हैं, चाहे य मुद्दे सोलहो आना सही हो, लोग या तो युद्ध के समय या क्रिकेट मैच के दौरान ही एकता प्रदर्शित करते हैं। सरकार भी अच्छी तरह समझने लगी है इस बात को। सरकार के समक्ष भी कुछ मजबूरी होती है इस कारण युद्ध तो शुरू नही करा सकती है। इधर लोग भी समझदार हो गए हैं। वे युद्ध के समय तो एक हो जाते हैं लेकिन युद्ध के भय मे नही होते हैं। वे जानत हैं सरकार ऐसा भय कुछ कारण वश दिखाती ही रहती है। इस स्थिति मे क्रिकट ही एकमात्र उपाय है, जो सरकार के पास बच रहता है। कराते रहा लगातार भिडत, बैठाए रहो लोगो को टी०वी० के सामने। ध्यान मत हटन दो कमन्ट्री स। अब क्या खाक दूसरो की बातों को सुनेंगे, और पढेंगे, खाली वक्त ही नही मिलेगा ता कहा की बहस करेंगे, किनकी सभाओ मे जाएगे।

वस सच पूछो तो इस बार सरकार जरा धोखा खा गई थी। उसे क्रिकेट का ध्यान ही नही आया। कई महीनो से परेशानी झेलती रही बेचारी। अर बुलवा लेती किसी क्रिकेट टीम को और दे देती जनभावनाओ को एक सुन्दर मोड। लोग कमीशन का हिसाब भूल जाते और गावस्कर के रना तथा कपिल देव के विकेटो का हिसाब लगाने मे मशगूल हो जाते। फिर इधर सरकार मत्री मडल और पार्टी से भले ही लोगो को निकालती रहती उधर लोग चेतन शर्मा शिवराम कृष्णन, मनिन्दर का टीम म लेने—निकालने की बहस म ही माथा खपाते रहते।

पिछले दिनो विवाद चल रहा था कि टेलीविजन पर क्रिकेट मैच नही दिखाया जाएगा। बडे ना-समझ लोग हैं। फिजूल की बहसबाजी मे लगे हैं। अर भई, जब टेलीविजन पर नही दिखाना है तो फिर क्रिकेट मैच करान से फायदा ही क्या है। फिर तो बस खिलाओ तुम अपना क्रिकेट चुपचाप, लाग तो चले आम सभाओ म भाग लेन के लिए। सरकार भला ऐसी गलती क्या करने चली। वह तो चाहती है लोग अधिक से अधिक देर तक टी० वी० के

सामने बैठे रहें, और क्रिकेट की चकाचौंध मे अपनी दृष्टि खोत रह।

यह तो कहिए। अब तक सरकार को सही सलाह देने वाले नहीं मिले नहीं तो क्या विपक्षियो की एक भी सभा सफल हो पाती ? जिस शहर मे सभा हो, वहा सरकार एक क्रिकेट मैच आयोजित करा देती, तब नेताओं को भाषण सुनने वाले क्या दरी बिछाने वाले भी नही मिल पाते। अब तो क्रिकेट मैच मे जीतना देश की नाक का सवाल हो गया है। मानो देश का नाक की कीमत के एवज म कौन भला सूखा महगाई, बेरोजगारी का दद सुनना पसन्द करेगा। नाक सलामत रहे, इन समस्याओ से तो कभी भी निपट लेंगे और नहीं भी निपटे तो कौन सा पहाड टूटे पडा है, लोग तो पहले नाक देखत हैं। बाकी शरीर बाद मे नजर आता है।

वास्तव मे देखा जाए तो हम तेज चिल्लाकर अपने इद-गिद उठती आहो-कराहो की आवाजो को दबा देन की असफल कोशिश कर रहे हैं। नकली चमक पैदा करके अपने काले धब्बो को छुपाने का नकारा प्रयास कर कर रह हैं। जब अपने देश मे बेइज्जत हो जाते हैं, तब विदेश मे अपनी छवि सुधारन की जोकराना हरकत करने लगते हैं। हम हकीकत को छगाकर झूठे सपनो मे जीना चाहते हैं। विसगति यह है कि सपनो मे जीते तो हैं लेकिन उन सपनो को मूतरूप देने का प्रयास भी नही करना चाहत हैं। केवल रगीन सपने देखना चाहते हैं, दिखाना भी चाहते। झूठ हम, उथले सस्कारो स्वार्थी सभ्यता, और दभी आभिजात्य की चकाचौंध ने हमारी आखो को चुधिया कर रख दिया है। हम सामने रखे आइने को नही देख पा रहे हैं जिसम हमारी वास्तविक छवि प्रतिबिम्बि हो रही है। आज क्रिकट वह चमक है जिसन अकाल भूखमरी व अन्य समस्याओ को धुधला करके रख दिया है।

सरकार ने घोषणा की है

उधर दिल्ली मे घोषणा हुई ।

"अब महगाई को और अधिक बर्दाश्त नही किया जाएगा । व्यापारीगण वस्तुओ के दाम शीघ्र कम करें नही तो सरकार को सख्त कदम उठाना पडेगा ।"

इधर घोषणा होते ही हमारे कस्बे के व्यापारियो ने दाम और बढा दिए । मैंने अपने एक व्यापारी मित्र से पूछा—"क्यो भाई, सरकार दाम गिराने को कह रही और तुमने बढा दिया, सरकार का कोई भय नही रहा क्या ?"

उसने जवाब दिया—"सरकार से भय तो इस देश मे कभी किसी को नहीं रहा । हा, सरकार की उक्त घोषणा के बाद हमे दाम बढाना जरूरी हो गया है ।"

'बडा उल्टा गणित बता रहे हो यार ।" मैंने कहा ।

"गणित बिल्कुल सीधा है" उसने कहा— देखो, शहर के व्यापारियो को तो चीजो के दाम कब कितने बढ रहे हैं इसका पता लगता ही रहता है । वे तो उसी के अनुसार अपनी दुकान मे भी भाव बढा लेते हैं । लेकिन हम ठहरे कस्बे के व्यापारी । हमे पता नही चलता तो हम कम दामो मे ही चीजें बेचते हैं ।"

मैंने पूछा—"तो अब कौन सा कारण हो गया जो तुमने दाम बढा दिया ।'

उसने कहा—"सरकार ने दिल्ली म घोषणा कर दी है ना ।'

"सरकार की घोषणा से तुम्हारे दाम बढाने का क्या सबध है ?"

'क्योंकि हमे अब सरकार के माध्यम से जानकारी हो गई है कि दूसरे शहरों म बढे हुए दामो म चीजें बिक रही हैं, इसलिए हमने भी दाम बढ़ा दिए, इतनी बडी सरकार कह रही है, ठोक बजाकर कह रही होगी।" उल्टे उसने जवाब दिया।

मैंने कहा—"यार, तुम व्यापरियो का गणित तो हमारी समझ के बाहर है, बडा उलझा हुआ मामला नजर आता है, अरे भाई तुमने दाम नही बढाया था तो अब भी न बढाते, सरकार बढे हुए दामो को कम करने में ही तो लगी है।"

मेरी बात सुनकर व्यापारी मित्र खिलखिलाकर हस पडा। उसने कहा—'कलम घिसने से कुछ नही होता बन्धु। जब व्यापार की लाइन मे आओगे, तब सरकार का गुणा भाग सब जान जाओगे।"

मैंने जवाब दिया—"भइया व्यापार तो तुम्ही करो और यह गुणा भाग भी तुम ही समझो। मुझे तो केवल मूल बात समझा दो।'

उसने मुझे समझाया—'देखो, सरकार दाम कम करने को कह रही है ना? अब बताओ जब हमने दाम बढाया ही नहीं तो कम कैसे करेंगे?

मैंने कहा—'ठीक है, तुमने नही बढाया है तो तुम कम मत करो लेकिन जिसने दाम बढ़ाया है वह कम कर लेगा।'

उसने कहा—'इसलिए तो कहता हू नासमझ हो। भइया जब सरकार ने कहा कि दाम कम करो, इसका मतलब होता है, हम भी दाम कम करना पड़ेगा। इसलिए हमने दाम बढा दिया। हम घर से घाटा थोड़े खाता हैं।'

मैंने हथियार डालते हुए कहा— अच्छा छोडो इस बहस को। तुम तो ये बताओ कि अब ये दाम कब कम करोगे।

उसने कहा— अब आए ना लाइन पर। य दाम कम कैसे होंगे। कम होंगे या नही यह बताने की बात है तुम दो-तीन दुकान म आकर इसी तरह बैठते रहो। आप ही सब समझ जाओगे।

मुझे मामला दिलचस्प नजर आ रहा था। मैंने तत्काल ही उसका ऑफर स्वीकार कर लिया और दिन बीतते न-बीतते मुझे मामले की प्रगति भी दिखाई पड़ने लगी।

दोपहर की गर्मी की तेजी थोडी-सी कम होते ही सत्ताधारी पार्टी के

स्थानीय पदाधिकारी दुकान पर आ धमके, आते ही उन्होंने साधिकार गल्ले वाली गद्दी पर आसन जमाया। मेरा व्यापारी मित्र नेताजी को देखकर पहले ही गद्दी छोडकर उठ खडा हुआ था। थोडी देर आराम से बठन व पसीना पोछ लेने क बाद नेताजी ने दुकानदार से पूछा—"और कहो, कैसा चल रहा है धधा ?"

"सब आपकी कृपा की दृष्टि है भइयाजी, ठीक ठाक चल रहा है।" दुकानदार ने दोना हाथ जोडकर लगभग भैयाजी क पैरो म झुकते हुए विनम्रता पूवक जवाब दिया।

जवाब सुनकर नेताजी गद्दी पर थोडा और पसर गए। बोले—'महगाई के बारे मे आज सरकार ने अपील जारी की है उसकी जानकारी हुई या नही ?"

'हो गई है भैया जी।"

'तो क्या कर रहे हो ?" नेताजी ने पूछा।

"आपका इलाका है भैयाजी। हम तो पहले ही कम दामो मे चीजें बेच रहे हैं। आगे आप जैसा हुकुम करें। हम आपसे अलग थोडे ही हैं।" दुकानदार ने दीनता और विनम्रता एक साथ प्रकट की।

भैया जी का सीना कुछ फूल सा गया। गदन को अकडा कर उन्होने दुकान के चारो ओर देखा कि कितन लोग उनकी बात सुन रहे हैं।

नेताजी ने व्यापारी को आश्वस्त किया—"ठीक है ठीक है। जब तुमने दाम बढाया ही नहीं है तो कम कैसे करोगे।

बस इसी दाम पर बेचते रहो चीजें, सरकार को बट्टा लगे ऐसा काम नही करना।"

फिर कुछ देर को मौन साधने के बाद जैसे अचानक कुछ याद आया हो, नेताजी कुछ चौंकते हुए बोले—"और हा अच्छी याद आई। घर म तुम्हारी भाभी बोल रही थी शक्कर खत्म हो गई है, जरा "

दुकानदार ने नेताजी की बात को बीच मे ही लपकते हुए कहा— आप चिता न करें भाभीजी की नाराजगी मैं दूर कर दूगा।'

इसके बाद जलपान के तगडे दौर के बाद नेताजी सरकार की घोषणा का सही क्रियान्वयन कर वहा से रवाना हुए और व्यापारी मित्र मेरी ओर

देखकर आखो आखो मे ही मुस्कुराते रहे।"

नेताजी ने अभी गली पार भी नही की होगी कि सत्तारूढ पार्टी की युवा शक्ति दुकान मे धमकी, उनका तेवर ऐसा था मानो, महगाई से क्या निपटना और दुकानदार से क्या निपटना, निपटना ही है तो दुकान से निपटो ताकि न दुकान रहे और न महगाई की जड रहे।

युवा शक्ति ने आते ही जोश दिखाया—' सरकार ने कह दिया है महगाई कम करना है जल्दी महगाई कम करो। हम बातो पर नही काम पर विश्वास करते हैं।"

इस बीच कुछ शक्तिया दुकान मे फैल कर काम दिखाने लगी थीं।

व्यापारी मित्र ने पहले की अपेक्षा विनम्र होकर कहा—' बिल्कुल ठीक कहना है आपका। इतनी महगाई मे आम आदमी का गुजारा हो ही नहीं सकता। महगाई तत्काल ही कम होनी चाहिए।"

'तो फिर करो दाम कम देर क्यो कर रहे हो?" युवा शक्ति ने ललकार बताई।

व्यापारी ने और अधिक विनम्रता प्रदर्शित की। मुझे शक होने लगा उसकी रीढ की हड्डी है अथवा नहीं। वह बोला— 'यह लिस्ट देखो मैंने तो पहले ही रेट कम कर दिया है। लेकिन मेरी सलाह मानो तो एसे मे सरकार की इच्छा पूरी होने वाली नही है। मेरे अकेले के दाम कम कर देने से महगाई खत्म नही होगी। बाकी दुकानदार हैं उनसे भी कहना पडगा तभी काम बनेगा। उनसे भी आप लोगो को इसी स्तर पर निपटना पडेगा।"

युवा शक्ति ने दहाड लगाई—' हम किसी को नही छोडेंगे।'

तब तक कई शक्तियो की जेबें भरपूर हो चुकी थी वे आग बोले— हम रली निकालेंगे जो हमारी बात नही मानेगा उसे देख लेंगे। हम हमारी सरकार को बदनाम नहीं होन देंग।'

इस बीच जिन शक्तियो की जेबें फुल हो गई थी वे हाथो को भरने म लग गए।

युवा नेता ने त्योरी चढ़ाकर आखें लाल कर कुरते की बांह को ऊपर खीचते हुए कहा— चलो साथियो, हम तत्काल रैली निकालना होगा।'

जाते जाते व्यापारी मित्र से रैली की व्यवस्था और रैली के बाद की आवश्यकता के लिए रुपये माग कर ले गए। जिन्हें देने मे व्यापारी मित्र ने कोई आना-कानी नही की बल्कि प्रसन्नता ही प्रकट की।

युवा शक्ति के लौटने पर व्यापारी मित्र ने मुझसे पूछा—'देख रहे हो ना महगाई कैसे कम हो रही है?"

मैं कुछ जवाब देता इसके पहले एक वरिष्ठ अधिकारी बगल म चमडे का बैग दबाए आ धमके, अब तक मैं जान चुका था कि मेरा वह व्यापारी मित्र अपनी समस्त विनम्रता ऐसे ही अवसरो के लिए बचाए रखता है अन्यथा बाकी समय मे उसके व्यवहार की कटुता की जानकारी तो मुझे अच्छी तरह थी। अधिकारी महोदय का यथोचित मान-सम्मान करने के पश्चात व्यापारी ने पूछा—"कैसे आना हुआ साहब? आपने क्यो कष्ट किया, हमे ही बुलवा लिया होता।"

आवभगत से प्रसन्न अधिकारी ने कहा—"सरकार का निर्देश आ गया है कि चीजो के दाम कम होने चाहिए। इसलिए जानकारी करने चला आया कि बाजार मे क्या दाम चल रहे हैं।"

अधिकारी की बात सुनकर मैं सोच रहा था—कभी पैसा देकर चीजें खरीदी होती तो पता चलता कि क्या दाम चल रहा है।

व्यापारी मित्र ने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया—'पहले दाम ठीक चल रहा था साहब लेकिन सरकार की घोषणा सुनते ही इधर दाम बढ़ाना पड गया है। अब आपसे क्या कुछ छिपा है। ऐसे समय म हम व्यापारियो की परेशानिया कितनी बढ़ जाती हैं, आप तो सब जानते हैं। सबेरे से अब तक कई लोगो को महगाई के नाम पर निपटा चुका हू। अब आप जैसी आज्ञा दें। आप कहें तो जो दाम हमने बढ़ाया है, उसे कम कर दें या फिर अभी कुछ दिन ऐसे ही चलने दें, पता नहीं महगाई के मारे कौन कौन टपकने वाले हैं।'

अधिकारी कुछ व्यावहारिक प्रतीत हुए, उन्होंने धीमे धीमे सिर हिलाते हुए व्यापारी मित्र की बातो को गम्भीरतापूर्वक सुना और एक तरह से उनकी बातों के प्रति सहमति सी जताई, फिर बोले—"ठीक है, अभी कुछ दिन ऐसे ही चलने दो यदि सरकार नही मानेगी और ज्यादा कड़ाई करने

को कहेगी—तब देख लेंगे भाव कम करके रिपोर्ट भेज देंगे, हमारी भी वाह वाही हो जाएगी।"

इसके आगे की बात अधिकारी महोदय को बोलने की जरूरत नही पडी। अनुभवी व्यापारी मित्र ने ही कहना शुरू किया—"आप निश्चित रहिए साहब आपकी इज्जत को बट्टा नही लगने देंगे। अभी दो चार दिन पूर्व ही आपके व्यवहार की सभी व्यापारी तारीफें कर रहे थ, हम व्यापारियो की एक दो दिन मे मीटिंग होने वाली है जिसम आपके व्यवहार और सहयोग के सम्बन्ध मे हम लोग निणय लेने वाले हैं। मीटिंग होते ही मैं स्वय आपके यहा आऊगा। आप बिल्कुल चिन्ता न कीजिए, बस ऐसी ही कृपा दृष्टि बनाए रखें।"

कुछ देर मे औपचारिक वार्तालाप के पश्चात अधिकारी महोदय निश्चिन्तापूवक वहा से रवाना हुए और मैंने व्यापारी मित्र से कहा—'अब यह बढी हुई महगाई कब और कैसे कम होगी यह तो मैं अच्छी तरह जान गया हू लेकिन एक बात मेरी समझ मे नही आई।"

उसने मुस्कुराते हुए पूछा—"कौन-सी बात ?'

मैंने कहा—"तुमने नेताजी को और युवा शक्तियो को तो दाम बढान की बात नही बताई लेकिन अधिकारी को स्वय होकर बता दिया कि सरकार की घोषणा के बाद ही तुम लोगों ने दाम बढाया है, इसका क्या कारण है ?'

व्यापारी मित्र ने कहा—' धधे म यही तो गुर है जिन्हे सीखना और समय पर अमल म लाना पडता है। नेताजी और युवा शक्ति को दाम बढे हैं या नहीं, कम होंगे या नही, इससे कोई मतलब नहीं था, उन्हे तो घर शक्कर और चन्दे की रकम के लिए अनुकूल अवसर जिसकी व लोग हमेशा तलाश म रहते हैं, प्राप्त हो गया था। उन्हे वस्तु स्थिति बताने से कोई फायदा नहीं था। वे तो अपन लक्ष्य की पूर्ति करके ही टलने वाले थ।"

और अधिकारी महोदय को दिए गए जवाब के पीछे कौन सी व्यापारी नीति थी ?" मैंने पूछा।

उसने बताया— अधिकारी वह दाई है जिससे पेट छुपाया नहीं जा सकता और अधिकारी सरकार तथा व्यापारी दोनों का पेट जानता समझता

है। वह जानता है सरकार कब आदश मनवाना चाहती है कब घोषणा करके राजनीतिक इमेज बनाना चाहती है। जब तक अधिकारी को यह विश्वास नहीं हो जाता कि सरकार अपनी बात को मनवाने के लिए कटिबद्ध है, तब तक व्यापारी से कड़ा रुख अपना कर अपना नुकसान क्यो करना चाहेगा। जब तक सिलसिला चलता रहेगा अधिकारी की चादी रहेगी जब देखेगा सरकार नही मान रही है तब स्वय व्यापारी को कहकर एकाध महीने के के लिए दाम गिरवा कर अपनी प्रशासनिक क्षमता का प्रमाण पत्र सरकार से हासिल कर लेगा, इसलिए अधिकारी से स्पष्ट बात करने मे कोई खतरा नहीं है।"

मैंने दीघ नि श्वास लेते हुए कहा—"भैया, ये सब गुर तुम्हे मुबारक। इस गरीब भारतवर्ष के एक आम नागरिक की हैसियत से मैं तो सिफ यह कह सकता हू यदि सरकार महगाई कम करने की घोषणा नही करती तो ज्यादा अच्छा था।

अध्यक्षो के बीच फसा झडा

वह समय कुछ और था जब किसी शहर मे मुश्किल से एकाध अध्यक्ष टाइप आदमी हुआ करता था। वरना उसे भी इम्पोर्ट करने की जरूरत पडती थी। अब ऐसा समय आ गया है कि जिसे दखो वही अध्यक्ष और मुख्य अतिथि के खाचे म फिट दिखाई पडता है। छाटन की समस्या है। कम्पीटीशन इतना अधिक कि ऊची से ऊची बोली लगाकर अध्यक्ष बनने वालो की भीड लगी हुई है।

पिछले दिनो एक ध्वजारोहण मे उपस्थित होने का मौका लगा। ध्वज तो खैर सही सलामत फहर गया। सलामती की बात इसलिए कि ऐसे ही एक मौके पर झडा फहराने के लिए रस्सी को थोडा झटका पडा और रस्सी टूट कर जमीन पर गिर पडी। वैसे भी पद रूपी झडा सम्बन्धो की डोर से ज्यादा समय तक बधा रहना पसद नही करता। झडे को डोर की जरूरत केवल ऊपर तक पहुचने तक ही है, फिर तो उसे भय बना रहता है कहीं यही डोर उसे नीचे न खीच ले। यही कारण है कि लोगो ने सम्बन्धो की डोर को जब भी हल्का-सा झटका दिया और झडे ने डोर का साथ छोडा। लेकिन इस वक्त ऐसा कोई भय नहीं था। क्योकि झडे की स्थिति तक पहुचने वाले सभी भयाजी अभी जमीन पर थ।

हा तो बात ध्वजारोहण की चल रही थी। झडा पूरे सम्मान के साथ (यह कहना भी अब परम्परा हो गई है) फहरा दिया गया। बेसुरे ताल क साथ आदरपूर्वक राष्ट्रगीत भी सम्पन्न हो गया। समस्या इसके बाद खडी हुई। कई वर्षो से ऐसी परम्परा चली आ रही है कि इसके बाद कुछ लिस्टेड
। की जय का नारा अवश्य लगवाया जाता है। यह मान्यता भी स्थापित

हो चुकी है कि जय बुलवाने का काम कार्यकर्ता ग्रेड के लोगों का है। लेकिन वहां जो अट्ठारह अदद लोग खड़े थे, उनमें कोई भी कार्यकर्ता ग्रेड का नहीं था। गिन कर पूरे आठ व्यक्ति किसी न किसी संस्था के अध्यक्ष थे। पांच व्यक्ति भूतपूर्व अध्यक्ष होने के बाद भी स्वयं को रिटायर्ड नहीं मानते हुए अध्यक्षीय गरिमा ओढ़े हुए थे। दो व्यक्ति संयोजक का लेबल लगाए हुए थे। बाकी बचे तीन व्यक्ति उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और सचिव पद से नीचे उतरने को तैयार नहीं थे। अब आप ही बताइए क्या ये लोग, स्वतन्त्रता दिवस पर ही सही, जय के नारे लगाने के काबिल थे? ठीक है झंडे की गरिमा है तो आखिर इनकी भी कुछ गरिमा होगी कि नहीं?

तो हुआ यह कि राष्ट्रगान समाप्त होने के बाद सभी एक दूसरे की ओर आशा भरी निगाह से ताकने लगे। बड़ी संस्था का अध्यक्ष छोटी संस्था के अध्यक्ष की ओर, छोटी संस्था का अध्यक्ष उपाध्यक्ष की ओर और उपाध्यक्ष सचिव की ओर देखने लगे। लेकिन कोई आदमी अपनी हैसियत छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। कोई कुरते की गर्द झाड़ रहा था, कोई बांह ठीक कर रहा था तो कोई नाक दबने के भय से चश्मा ऊंचा कर रहा था। बड़ी विषम परिस्थिति पैदा हो गयी थी। कुछ देर को तो आशंका हुई कि झंडा बिना नारों के ही अपनी गति को प्राप्त हो जाएगा। इस बीच संस्था का चपरासी रस्सी की गांठ खंभे से बांध कर निवृत्त हुआ। झंडे को मस्ती से लहराता देख लगा मानों रस्सी रूपी संविधान को गांठ डंडे रूपी खंभे में बांधे रहने पर ही पदरूपी झंडा सही फहरता है। चपरासी ने भांप लिया कि जय बुलवाने का गुरुतर दायित्व भी अब उसके ऊपर ही आ गया है। पिछले कुछ अवसरों में वह इन बातों का अनुभवी हो गया मालूम पड़ता था।

बहरहाल, चपरासी ने नारों से रस्म अदायगी प्रारंभ की—बो लो की

उपस्थित मात्र तीन चार लोग के मुंह से फुसफुसाहट निकली—ज य।

महसूस हुआ कि मुंह फाड़कर जोरों से चिल्लाना शालीन व्यक्तियों का काम नहीं है।

चपरासी ने मुट्ठी बांधकर हाथ को झटके से हवा में ऊंचा तान कर

बुलन्द आवाज म पुन नारा लगाया— की

उपस्थित लोगो मे से कुछ ने अपने दो ो हाथो को आगे की ओर तथा कुछ ने पीछे की ओर बाधकर शरीर को ढीला छोड दिया और फुसफुसाहट का स्वर उतना ही आभिजात्य बनाए रखा—ज य।

चपरासी अतिम बार गरज म साथ चीखा—बोलो की

लय टूटी भी नही थी कि एक प्रमुख जनेऊ खीचता नजर आया, कुछ के हाथ जाक्ेट या कुरते की जेब म चले गए। फुसफुसाहट के स्वर पहल से कुछ और मद्धिम हो गए—जय।

सभा बर्खास्त हो गई। लोगो ने एक लम्बी सास छोडी। चलो, एक उबाऊ प्रक्रिया से छुटकारा तो मिला।

मैं समझता हू यह हाल सभी नगरो कस्बो यहा तक की गावो का भी हा गया है। हर नेतानुमा व्यक्ति हैसियतदार हो गया है। इन दिनो एक नया चलन देखने मे आ रहा है नताओ के कुरता की लम्बाई दिनो दिन बढती जा रही है। शायद ये नेता कद छोटा होन पर कुरते की लम्बाई बढा कर अनुपात ठीक करना चाहते है। लेकिन जेबें उनके अनुपात म नीचे नही उतरती हैं कुरते की चमक और सफेदी का यह हाल रहता है कि लोग कह उठते हैं— उसके कपडे मरे कपडो से ज्यादा चमकदार कसे? हर कोई यह समझन लगा है कि बस, कपडे उजले दिखने चाहिए, काले कामो से लोगो को क्या मतलब।

पहल राजनीतिक सस्था का अधिवेशन होता था तो कायकर्ता उसम प्रेरणा लेन जाते थे और लौट कर रचनात्मक काम करते थे। अब छोटे नेता अपन बडे नेता के दशन करने जाते हैं और वापस लौट कर हैसियत भुनान का काम करते हैं। पद की दौड सेवा क लिए नही मेवा के लिए हाती है। छोटा अथवा खोटा कैसा भी पद मिला नही कि अखबार म बधाइयो के साथ फोटो छपना शुरू हो जाता है। पद जितना छोटा होता है फोटो उतनी ही बडी छपवाई जाती है। जैसे इस बात की घोषणा की जा रही हो – 'ठीक से देख लो अच्छी तरह पहचान लो जन सेवा की एक और दुकान पूरी साज सज्जा और चमक दमक के साथ खुल गई है। आओ ट्रासफर पोस्टिग, कोटा, परमिट, ठेका आदि के लिए सम्पक करो।

भ्रष्टाचार के लिए, और फस जाने पर बचन के लिए सेवा का अवसर दो।"

ऐस अध्यक्षधारी नता हर शहर मे थोक के भाव से पटे पडे है। बरसाती मेढको की तरह रोज उनकी सख्या बढती जा रही है। समय के साथ साथ सभी बातें बदलने लगी हैं। अब जय बुलवाने वाले अलग होते हैं, झडा फहराने वाले अलग होते हैं और झडे की तरह फहरने वाले कोई और होत हैं।

जागते रहो

मैं अच्छी गहरी नींद मे सोया पडा था। इसी बीच मुहल्ले की पहरेदारी करन वाले चौकीदार ने तेज आवाज लगाई— जागते रहो।" और मैं जाग गया। कुछ देर तक मुझे नीद उचटने का कारण समझ मे नही आया। चौकीदार न जब सीटी बजा कर दुबारा जागते रहो का तेज नारा बुलन्द किया तो स्थिति स्पष्ट हुई।

पुन सोने की कोशिश करने पर भी जब नीद नही आई तो विचारो की घुड दौड प्रारम्भ हो गई मैं सोचने लगा कि इस चौकीदार को मुहल्ले वालो ने रात्रि पहरेदारी के लिए लगा रखा है, ताकि हम सब अपने घर-सामान की चिन्ता स मुक्त होकर निश्चिन्ततापूर्वक सो सकें। लेकिन यह बडा विचित्र चौकीदार है, जो हम ही आवाज लगाता है—जागते रहो। अरे भाई यदि हमे ही जागना है तो पहरेदारी के लिए उसे लगाने की क्या आवश्यकता थी ?

जब नीद न असन्तुष्टो की तरह समझौता करने से इन्कार कर बगावत का तेवर दिखलाया तो हमन भी हाई कमान की तरह उसे सख्तीपूर्वक खदेड बाहर करन का दृढ निश्चय किया, और बिस्तर से उठकर सडक पर आ गए। बाहर आकर हमने चौकीदार को पास बुलाया।

पास आते ही उसन कहा— 'शलाम शाब क्या बात है ?"

'क्यो भाई, जागते रहो की आवाज लगाकर क्यो लोगो की नीद हराम करने म लगे हो ?" मैंन पूछा।

चौकीदार ने जवाब दिया— आपको आवाज नही लगाएगा शाब तो तुम समझेगा चौकीदार शाला सो गया। हम जाग रहा है येई बताने को

आप लोगो कू आवाज लगाता शाब।"

मैंने कहा—' जब तुम चिल्ला चिल्ला कर रात भर हम जगाए रखेगा तो फिर तुम्हारे को रखन का क्या मतलब ? फिर चौकीदारी हम नही कर लेगा ?"

चौकीदार ने तत्काल कहा—' हम नही रहेगा तो तुमकू जगायगा कौन शाब ? तुम शो जाएगा के नई फेर इधर तुम शोया के उधर चोरी हुआ।"

बडा विचित्र मामला फस गया था। चौकीदार की बात मे मैं ही उलझ कर रह गया। मुहल्ले वालो ने चोरो से बचने के लिए चौकीदार रखा है, और चौकीदार है कि चोरो स बचने के लिए हमे ही जागते रहने का उपदेश दे रहा है।

यह सोचते-सोचते देश का ख्याल आ गया। देश की सरकार न भी आम जनता को जागते रहने तथा सावधान रहने का सदेश दिया है। हमार बीच छुपे दुश्मनो स खतरे की आशका प्रकट की है।हमने लापरवाही बरती तो वह दुश्मन फायदा उठा लेगा।

ईमानदार चौकीदार की तरह सरकार हमे चिन्तित कर खद निश्चिन्त हो गई है—अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। सरकार का क्या। सरकार का काम है आने वाले खतर से आगाह कर देना। उससे निपटना, उससे सावधान रहना हम सबका काम है। इसीलिए तो हमने सरकार का चुनाव किया है। सरकार की जब भी नीद खुलती है तो इस अलाल कामचोर राष्ट्र के नाम एक सदेश पेल कर हम चिन्तित कर दती है और स्वय फिर लम्बी तान कर सो जाती है। और भइया, हमारा तो काम ही है दुश्मनो से लडना है और पिटत रहना है। लेकिन हम सरकार की नीद म खलल नही डालेंगे। सच्चे राष्ट्र भक्त की यही तो पहचान है। जो ऐसा नही करत, हल्ला मचाते हैं सरकार को चन की नीद सोन नही देते। वे देशद्रोही हैं राष्ट्र के नाम पर कलक हैं।

ऐस लोगो को हम भी समझाते हैं—भइया, जब सरकार को चुना है तो उस पर भरोसा करो, उसकी बात पर भरोसा करो। जब सरकार कह रही है कि भ्रष्टाचार नही चलने दिया जाएगा तो चुपचाप मान लो कि नहीं चलेगा। काहे पनडुब्बी, बोफोस, स्वीटजरलैंड की रट लगाए रखे हो।

अरे इतन बडे लोग हैं, क्या जरा सी बात के लिए झूठ बोलेंगे। इतने सारे काम हैं क्या सरकार हर चीज का ध्यान रखती रहेगी। गलती से कोई बात हो गई तो अब जाच हो जाएगी। यदि जाच मे भी कोई गलत बात सामन आ गई तो कानून बनाकर उस रेगूलर कर लेंगे। जरा सबर करना सीखो भइया इसके लिए इतनी हाय-तोबा मचाने की क्या जरूरत है? ये तो नही हुआ कि सकट की घडी मे सहयोग करो। उलटा बदला भजाने को देखने लगे। बुजुर्गों ने सही कहा है भइया सही दोस्त दुश्मन की परख सक्ट के समय ही होती है इतने सारे विदेशी दौरो, दगो आदिवासी दशन तथा स्वागत समारोहो से थकी सरकार को थोडा आराम भी नही करने दिया और नीद हराम करके रख दी विघ्नसतोपियो ने।

देखा कैसा जगाया चौकीदार ने? उसने हमे जगाया चोरो स बचे रहन के लिए और दिमागी घोडे पता नही कहा कहां पहुच गए।

मैंने चौकीदार से पूछा—'तुम हम जगाए रखत हो फिर भी चारी क्यो हो जाती है?"

भेद भरी मुस्कान के साथ चौकीदार न मुस्कराते हुए जवाब दिया—'वाई तो हम भी बोलता साहब तुम ठीक से जगता नही सावधान नही रहता तो चोर चारी करेगा ही हमारा काम तो साब तुमकू जगाना है बाकी सब काम तुमरा है।"

यह कहते हुए चौकीदर 'जागते रहो' का तेज नारा दते हुए आगे बढ गया।

मैं सोच रहा था—शायद सरकार भी तो ऐस ही कुछ कह कर बरी हो जाती है।

पतझड मे उदास नेताजी

नेताजी आज सुबह मे उदास हैं। मैंने पूछा—"क्या बात है नेताजी, सुबह-सुबह उदास दीख रहे हैं?"

वे बोले—'नही समझोगे तुम।"

मैंने कहा—"समझाने की कोशिश तो कीजिए।"

नेताजी ने देवदास वाणी म कहा—"पतझड लग गया है ना मैं थोडा अचरज म पडा। पतझड लग गया है तो इसमे नेता जी को उदास होने की क्या जरूरत है? इनकी तो पतझड मे भी बहार रहती आई है।"

मैंने पूछा—"तो इसमे आप क्यो अखिल भारतीय स्तर पर उदास हुए जा रहे हैं? क्या यौवन की बात याद आ रही हू?"

वे बोले—"मैंने पहले ही कहा ना कि तुम नही समझोगे। कभी नेतागिरी की होती तो समझते। तुम ठहरे वही फिसड्डी लेखक, पतझड, बसत फागुन और प्रेम-श्रेम के सिवाय और कुछ दुनियादारी की बात तो जानते नही।"

नेताजी की आवाज ऊची होते ही उसमे छिपा दद महसूस होने लगा। मैंने वार्तालाप मे कोमल स्वर लगाते हुआ कहा—"आखिर बात क्या है, ठीक से समझाओ तो सही। इस मौसम मे आपका एकाएक उदास हो जाना मुझे अच्छा नही लग रहा है।'

इस पर सरकारी बाध की तरह उनके धैय का बांध टूट पडा। वे बोले—' पिछले वष इसी माह टिकिट बटी थी और मेरी टिकिट कटी थी। टिकिट का कटना हुआ और यह पतझड आ टपका। बस समझ लो ˜ मना रहा हू। तुम्हीं बताओ—अगर टिकिट नही कटती तो कहां

मुझे पतझड़।"

—'ओह ! तो ये बात है, अब छोडिए भी इतना दुःख आपको नहीं मानना चाहिए। आप तो कई वर्षों तक सत्ता सुख भोग चुके हैं अब थोडा मजा दूसरों को भी लेने दीजिए।' मैंने कहा।

— दूसरों को भी लेने दीजिए।" इतने सरल ढग से कह रहे हो जैसे कोई बात ही नही हुई। अरे बच्चू! इस सुख और पीडा को वही जानता है जो इस फील्ड मे घुसा हो। हम तो पैदा ही राज करने और तिरंगे मे लिपट कर जाने के लिए हुए है। वो देखो, हमारे सामने पैदा हुआ कल का छोकरा कैसा अकड कर लालबत्ती मे घूम रहा है—यह देखकर हम कैसे खुश हो सकते हैं। हमारी तो आदत बन गई कि खुश होते हैं तो अपन आप पर दूसरो पर कभी नही।' नेताजी ने बताया।

—लेकिन आप पर तो पत नही कैसे कसे आरोप लगे थे जिसके कारण आपकी टिकिट कटी थी। मैंने नेताजी का मूड देखकर असल बात जाननी चाही।

सब साले फालतू बात करते हैं। ऐसे वैसे आरोप तो हम पर क्या सभी पर लगते रहते हैं राजनीति मे जिन लोगो ने मेरी टिकिट काटी थी वही कौन से दूध के धुले हैं और लाख बात की एक बात कि हम वहा बैठकर यह सब न करें तो और क्या करे? नेताजी उत्तेजना मे बोले।

—क्यो वहा रहकर तो आप लोग बहुत अधिक व्यस्त रहते हैं। देश की चिंता जनहित की समस्या, विकास की जिम्मेदारी और, बैठक योजनाए और फिर ऊपर से अपने परिवार के फलन फूलन का बोझ कोई कम काम रहता है आप लोगो के पास? मैंने उन्हे दिलासा देने वाले भाव से कहा।

—यही तो खूबी है बच्चू कि लोग समझते हैं ये सब काम हम लोग करते हैं। ये आई०ए०एस० रूपी घोडे जो हम गधो के ऊपर बैठे हैं उनके लिए भी तो कुछ बचना चाहिए। देश, जनहित विकास, योजनाए ये सब फालतू काम तो हम उनके माथे डाल देते हैं। आखिर तनख्वाह किस बात की पाते हैं? रही अपने परिवार की बात—तो सात आठ पीढ़ी की व्यवस्था तो हम शुरू मे कर लेते हैं। आगे उनकी किस्मत। बाद के वर्षों

मे कुछ आदर्श सिद्धांत भी तो बताना पडता है न ? नेताजी ने बताया।

—लेकिन इन अफसरो को चलाना भी तो कमाल की बात है। यह सबके वश का रोग नही है। मैंने कहा।

—सो तो है ये अफसर तभी चलते हैं, जब उनके कहन से हम चलत रह। बस, इतना-सा एडजस्टमेंट समझने की बात है फिर कोई अडचन नही होती। अफसर जब और जहा बोले, वहा अगूठा तैयार रहना चाहिए। फिर तो जनता को भी अगूठा दिखाया जा सकता है। नेताजी न शासन करने का गुर समझाया।

—आप तो अपनी जाति मे मुखिया माने जाते थे इसलिए इतने वर्षों तक सत्ता म रहे। फिर अचानक ऐसा क्या हो गया जो बाहर कर दिए गए ? मैंने पूछा।

—"मुखिया माने जाते थे " अरे कौन साला किसको मुखिया मानता है। हम खुद ही ऐसा हल्ला उडाते हैं और कुछ अपने लोगो को टुकडे डालकर माहौल बनवाते हैं। एक बार सत्ता मे पहुच जाओ तो बहुत से भ्रम बनाकर रखने पडते हैं। हमने भी ऐसा ही भ्रम बना दिया था।

—फिर यह भ्रम टूटा कैसे ?

—यहा कोई किसी को खुश थोडे ही देख सकता है ? मुझसे भी ज्यादा हल्ला करने वाला पैदा हो गया वह स्साला उसे तो अच्छी तरह देख लूगा कभी मौका तो आने दो। नेताजी गुस्से म बोले।

—लेकिन आपके पास कुछ टुकडेखोर और थे, वे कहां गये ? आपके नाम का शोर नही मचाया उन्होने ? मैंने जानना चाहा।

—राजनीति नही समझोगे तुम ! अरे ! उन्ही हरामखोरो न तो उसकी तरफदारी की तभी तो मुझे यह दिन देखना पडा। जरा बडा टुकडा मिला और सबके सब उधर हो गए अरे मुझे ही बता देते तो मैं ही टकडे की साइज बढ़ा देता। लेकिन इन छुटभइयो को तो थाली बदल बदल कर खाने की आदत हो जाती है ना।

नेताजी उत्तेजित हो गए थे। मैंने बात की दिशा बदलते हुए पूछा—तो अब क्या कर रहे हैं आप ?

वे गभीर होकर बोले—"लगा हू किसी तरह जुगाड जम जाय। चुप

भी तो नही बैठ सकता ना ?"

मैंने पूछा—"मेरे लायक कोई सेवा ?"

वे बोले—"भई, तुम लेखक हो मेरी राजनीतिक सेवा और त्याग का उल्लेख करते हुए कोई अच्छा सा लेख लिख डालो ना।"

मैंन कहा —"मुझे भी वही टुकडे वाला समझ रहे हो क्या ?"

उन्होने जल्दी से कहा—"नही भाई नही तुम इस ग्रेड के थोडे हो तुम्हारा ग्रेड तो ऊचा है।"

—तब ठीक है। लेकिन आपने तो कोई त्याग-तपस्या की नही है फिर किस बात को उछाला जाए ? मैंने पूछा।

—यही तो तुम लोग फेल हो जाते हो। अरे भाई! किसको पुरानी बातें याद रहती हैं। देखो, किसी बडे नेता ने पुराने समय म जो अच्छा काम किया हो उसे ही मेरे नाम से उछालना शुरू कर दो।

—कोई गडबड तो नही होगी। मैंने भयभीत होते हुए पूछा।

—क्या गडबड होगी। ऐसी गडबड तो हम हमेशा करते आए हैं। तुम्ही बताओ तुम्हे कभी भनक लगी इस बात की। नेताजी ने समझाया।

—फिर ठीक है। मैं शुरू करता हू। यदि कुछ हो तो आप सभाल लेना। मैंने आश्वस्त होते हुए कहा।

वे प्रसन्न होते हुए बोले— सब सम्हला हुआ ही समझो तुम तो बस शुरू हो जाओ।"

फिर थोडी देर इधर-उधर देखकर बोले—"अहा अहा बसत ऋतु का भी क्या आनन्द है!

मैं चौंक गया। अभी तो पतझड की तरह उदास थे अब बसत का आनन्द भी आने लगा।

महाज्ञानी की मुद्रा म लीन होते हुए उन्होने उपदेशात्मक स्वरो म कहा—पतझड इसीलिए आता है कि उसके बाद बसत आए। पुरान सूख पीले पत्ते झरें और नयी कोपलें नया निखार, नई महक आए। अब तो हम भी लग रहा है कि बसन्त बहुत करीब है।

मैं मन ही मन सोचने लगा— हर पतझड के बाद क्या बसत का आना जरूरी है ?

आम आदमी की होली

होली क दिन मैं उदास हो गया। मैं यह कह रहा हू तो आप शायद सोच रहे होंगे—स्साला फुटानी मार रहा है या फिर भाग का तगडा गोला चढाकर डिप्रेसन मे बात कर रहा है।

होली का दिन ही ऐसा होता है कि हर कोई उमग म रहता है, हसता-खिलखिलाता है। अब, मेरे उदास होने की बात पर कौन यकीन करेगा? लेकिन आप यकीन मानिये यह बात इतनी ही सच है जितनी होली पर ऊपर से गले मिलना और अन्दर से दूरी बनाए रखना।

हुआ यह कि मैं वडे प्रफुल्लित मन से होली खेलने घर से निकला। रग मे डूब कर साराबोर हो जान की बडी इच्छा थी। लपकता हुआ मैं चौक पर पहुचा। लेकिन मुझे देखकर रग खेल रहे लडको ने एक दूसरे को सावधान करते हुए कहा—इन पर कोई रग नही डालना रे।

मेरा उत्साह ठडा पड गया। मन मे कुढन भी हुई कि हाय मैं रग के काबिल भी नही रहा।

मुझे बात समझ मे नही आई। लडके हर किसी पर रग डाल रहे हैं। और जो अधिक मना कर रहा है, उस पर-रगो की बरसात कुछ ज्यादा ही की जा रही है, जबकि मैंने कोई अभद्रता नही की अपने आप को रग के लिए समर्पित कर दिया कोई तेवर नही दिखाया और ना ही कभी इन लडको का जाने अनजाने कोई अपमान किया। फिर मुझ पर रग डालने की मनाही क्या?

मैंने युवको का उत्साह बढाते हुए कहा भी—होली है रग खेलो खुशिया मनाओ। मुझ पर भी रग डालो। मैं

हू तुम्हे ।

उन युवको मे से एक थोडा सामने आया। कई चेहरे ऐस भी देखने म आते हैं जिन्हें देखकर कहा जा सकता है कि उनका अनुभव उम्र की अपेक्षा आगे बढ गया है। ऐसी ही अनुभूति मुझे युवक का चेहरा देखकर हुई।

उस लडके ने कहा—आप आम आदमी हैं आप पर हम रग नही डालेग।

यह दलील सुन कर मरा आश्चय कुछ और बढ गया। मैंने पूछा—*क्यो नही डालोगे? क्या आम आदमी को होली मे रग खेलने का हक नही होता?*

युवक ने कहा—नही ऐसी बात नही है। आपकी भावनाओ को चोट पहुचाने का हमारा इरादा नही है। हम लडको ने इस बार ऐसा निणय लिया है कि

मैंने बीच म ही कहा—क्या सोच कर तुम लोगो ने ऐसा निर्णय लिया है?

वह बोला—आम आदमी पहले ही कई तरह की आर्थिक मार से त्रस्त है। सीमित कपडो मे ढके इस आदमी को हम और नुक्सान पहुचाना नही चाहते।

आजकल के युवको का जिस तरह का सोच और काय शैली है उसके विपरीत विचार वाली यह बात सुनकर आश्चय के साथ हप भी हुआ। लेकिन आम आदमी होकर भी मेरे अन्दर रगो म डूब कर बडा हो जाने की दुहरी मानसिकता काम कर रही थी। मुझे लगा, यह उस मानसिकता पर विवशता के माध्यम से किया गया प्रहार है।

मैंने उन्हे समझाया—तुम्हारी भावनाए तो अच्छी हैं लेकिन आम-*आदमी का पूरा जीवन इन रगहीन कपडा की तरह कोरा ही निकल जाता* है। हमने अपन भीतर आम आदमी से ऊपर उठने का जो झूठा सतोष सजोए रखा है उसे तो कम स कम आज के दिन पूरा हो लेन दो।

उन लडको मे एकाएक ऐसी परिपक्वता आ चुकी थी जो पूरी उम्र गुजार देने के बाद भी कई लोगो मे नही आ पाती है। उन्होंने जवाब दिया—*भावनाओ का सवाल नहीं है। वास्तविकता का भावनाओ से दूर-*

दूर तक कोई रिश्ता नही होता। आम आदमी इस तरह की कई झूठी भावनाए अपने मन मे सजोए रहता है और वास्तविक जगत मे पिसते रहता है। इस झूठी मानसिकता को तोडना जरूरी है।

मैंने कहा—रग डाल दोगे तो मुझे सतोष हो जायगा कि मैं अब भी होली खेल सकता हू।

वह बोला—ऐसे झूठे सतोष से क्या फायदा? हम आपके कपडो को रग कर खराब कर देंगे इससे कोरे जीवन मे कोई रगदार क्षण आकर गुजर जायगा एसा तो नही है, उल्टे आपके कपडे जो कुछ दिन और आपका बदन ढकने म सहायक होंगे, वे बेकार हो जाएगे।

—ठीक है जीवन म रग न सही लेकिन रगीन क्षण तो प्राप्त हो जायेंगे। हमे इन रगीन क्षणो से क्यो रोकना चाहते हो?

—आम आदमी इन रगीन क्षणो के भुलावे मे ही तो असल रगो को भूल बैठा है। झूठी तृप्ति प्राप्तकर सही रग को पाने का कोई प्रयास नही कर पाता है और जीवन के अतिम अध्याय म पहुचकर जब पुस्तक को उलट कर देखता है तो सभी पृष्ठो को कोरा ही पाता है। और हमारी तो मान्यता है कि यही भ्रम उसे जिन्दगी के अन्तिम क्षणो तक केवल आम आदमी ही बनाये रखता है।

मैंने महसूस किया कि युवक के स्वर म तल्खी थी। आम आदमी की छदम कल्पनाओं की मार्मिक विसगति को उसने भीतर तक चीर कर रख दिया था। उस युवक की बातों ने मुझे भीतर तक झिझोड कर रख दिया जितनी प्रफुल्लता से रग खेलने निकला था, सारा उत्साह ठडा पड गया। जिस बात को मैंने कपडो से ढकने की कोशिश की थी, उस उन युवका न उघाड कर मुझे बीच चौराहे पर नगा कर दिया था।

होली के दिन आज मैंने सामान्य दिनो की अपेक्षा अच्छे कपडे पहन रखे थे। यह सोचकर कि लोग यह न समझ कि इस आदमी के पा[illegible] फटे हुए कपडे ही हैं, कोई अच्छा नहीं है। मैं आम आदमी जो हूं। [illegible] फटे कपडे पहनकर निकलता तो यही समझा जाता कि इसके [illegible] ही हैं और फटे कपडो मे रग जाया करना बेकार है।

आप इसे मेरी मजबूरी ही समझ लीजिए। [illegible]

पहन भी सकता हू लेकिन फटी इज्जत तो नहीं ओढ सकता ना। और कपडे तो अपने हाथो से पहने जाते हैं, इज्जत तो दूसरो के द्वारा ही ओढाई जाती है।

बडे अच्छे ख्याल लेकर मैं घर से निकला था। सोच रहा था इन कपडो पर लाल-पीले, हरे, नीले रग चढेगे। बाद मे इन रग बिरगे कपडो को घर के सामने ही टाग कर रखूगा।

बडी इच्छा थी लोग चेहरे पर गुलाल मल कर मेरा चेहरा लाल-गुलाबी कर दें जिसकी फोटो खिचवाकर मैं अपने घर की टूटी फूटी दीवारा पर टाग दू। चेहरे पर बहुत सी आडी तिरछी लकीरें गहरा चुकी हैं जिन्हे कोई अनुभव की लकीरें मानता है कोई सवेदनाओ की। लेकिन यह बात केवल मुझे मालूम है कि दिल का दद चेहरे पर उभर कर इन लकीरो को गहरा गया है। सोच रहा था, एक दिन के लिए ही सही लाल गुलाल के आवरण म ये लकीरें तो दब जाती। गुलाल का यह रग मेरे चेहरे स आम आदमी की लकीरें तो मिटा देता।

लेकिन उन युवको ने मुझे निरुत्तर कर दिया था। जिस आम आदमी की दुहरी मानसिकता को मैं ढकने की कोशिश कर रहा था उसे लडको न आज बेनकाब कर मेरा असली चेहरा चौराहे पर दिखा दिया था।

बस यही वजह थी कि मै घर लौट कर उदास हो गया। मैं सोचता हू मेरी ही तरह का दूसरा आम आदमी भी इस परिस्थिति मे इसके अतिरिक्त कुछ नही कर सकता है। वह अपनी विवशता पर उदास हो सकता है, अधिक हुआ तो रो सकता है। समय पडा तो विवशता को छुपाने के लिए नकली मुखौटा झूठा अहम छदम कल्पनाए लाद लेता है। लेकिन उस झूठे अहम से धोखा किसे देता है ? अपने आपको ही तो। इस झूठी तसल्ली से अपने अन्दर छुपे उस आदमी को उम्र भर उभर कर सामने नही आने देता है।

और इस समाज मे वे लोग जो उसका उपयोग सीढियो की पायदानो के रूप मे करते हैं उनकी इसी मानसिकता को कायम रखने के प्रयास म लग रहते हैं, जिससे भीतर छुपा आम आदमी होली के रग दशहरे की पतग और दीवाली के पटाखो म भटकता अपने अस्तित्व से खोता रहे।

इक्कीसवी सदी मे मरने की समस्या

इक्कीसवीं सदी में एक विशेष बात यह हुई कि बुड्ढे नेता मरने का नाम ही नही ले रहे थे। क्योंकि कैलेंडर की तीन सौ पैंसठ तिथियो मे कोई भी तिथि खाली नही थी, बीसवी सदी मे इतने अधिक नेता हो गए थे कि उनके जन्म दिन और पुण्य तिथि के मारे कोई तारीख खाली नही बची थी।

इक्कीसवी सदी के अन्य नता जो युवा से अधेड होते जा रहे थ इस कारण परेशानी महसूस कर रहे थे। बुढऊ मरे तो इनके लिए कुरसी खाली हो। बाल बच्चे, परिवार जन नाते रिश्तेदार जाने कब से इन युवक नेताओ पर आस लगाए बैठे हैं, कुरसी मिले तो इन सबकी मुक्ति दिलाए *लगातार चल रही इस स्थिति से ऊब कर युवा नेताओ का एक डेलीगेशन* बुजुग नेताओं के पास उनके पचतत्त्व मे शीघ्र विलीन होने के एक सूत्री मुद्दे पर चर्चा हेतु पहुचा।

डेलीगेशन के एक नेता ने सहजता पूवक पूछा "किसी खाली तारीख मे ही आप लोगो का मरना जरूरी क्यो है? जब मरना ही है तो किसी भी तारीख मे इस धरती का भार कम कर जाइए।"

बुजुग नता ने उपहासपूण दृष्टि डालते हुए कहा, किसी खाली तारीख में नहीं मरेंगे तो फिर अमर कैसे होंगे। हमे हमेशा याद कैसे रखा जायेगा।'

अपेक्षाकृत एक युवक नेता ने अपनी बात मे व्यग का पुट लाते हुए कहा 'ये जो सात पीढ़ियो के लिए आपने सुरक्षित रख छोडा है क्या इसके एवज में आपको याद नहीं रखा जायगा?'

वृद्ध नेता न युवक को उडाने वाले भाव से देखते हुए कहा, "अभी बच्चे

हो दुनियादारी की बाते नही समझोगे। यह राजनीति है। जिन रिश्तेदारो के लिए रुपया छोडा है, हमारे शाख मूदने की देर है, वही हम भूल जाएगे। पूरे देशवासियो द्वारा याद रखने की तो बात करना ही बेमानी है।"

डेलीगेशन के प्रधान ने बात को सम्हालते हुए कहा 'लेकिन किसी भी तारीख को मरने मे क्या हज है। उस तारीख पर देशवासी आपको याद कर ही लेगे।"

बुजुग नेता ने होठो पर मन्द मुस्कान लाते हुए कहा 'हम क्या बेवकूफ समझते हो? पूरी उमर कुरसी पर काट दी है यदि यह इतना सहज होता तो अब तक क्या हम स्वय जय हिंद नही हो जाते? तुम्ह दो अक्टूबर की याद है? बीसवी सदी म एक महात्मा गाधी हुए थे जो राष्ट्रपिता कहलाते थ। दो अक्टूबर उनका जन्म दिन था। इसी दो अक्टूबर को भारत के भूतपूव प्रधान मत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म दिन भी पडता था। लेकिन उन्हे दो अक्टूबर के दिन कोई याद नही करता। अब तुम ही बताओ प्रधानमत्री होने के बावजूद केवल दो अक्टूबर को पैदा होने के सयोग के कारण जब श्री शास्त्री जी को लोग याद नही करते थे तो हमे क्या याद करेग। हमन कुरसियो म घिस घिसकर कई धोतिया फाड डाली हैं। क्या गुमनामी क अ धेरे मे खो जाने के लिए मर जायें? बीसवी सदी के नताओ से हमारी तुलना करके देख लो। भ्रष्टाचार भाई भतीजावाद, झूठ, मक्कारी, बेईमानी किसी भी मुद्दे पर हम उनसे उन्नीस ठहरते हो तो हम बताओ। इतनी सब योग्यता होने के बावजूद उन नेताओ के नाम पर तारीखे तय रहे और हम भुला दिए जाए, ऐसा कस हो सकता है? हम अपनी मौत को बेकार नही कर सकते। जब तक हमारे अमर होने का विकल्प नही निकल आता, तब तक हम नही मर सकते हैं।

बैठक मे सन्नाटा खिच गया।

बुजुग नेताओ की दलील मे युवा नताओ को दम नजर आया। क्योकि आने वाले भविष्य मे यही स्थिति उनके सम्मुख भी निर्मित हो सकती है।

मामले की गभीरता को देखते हुए युवा नताओ ने समस्या का हल ढढन क उद्देश्य से एक विशाल बठक का आयोजन किया। सभी प्रातों स

महत्व,कांक्षी व पदलोलुप नेताओ को विचार विमश हेतु बुलाया गया। बठक की अध्यक्षता कर रहे डेलीगेशन के प्रधान न बुजुग नेताओ के साथ हुई बातचीत का सार सक्षेप मे बताते हुए विकल्प हेतु सुझाव प्रस्तुत करने को कहा।

एक नेता ने जानना चाहा कि पूरी की पूरी तीन सौ पसठ तिथिया क्या केवल नेताओ की जयन्ती व पुण्यतिथि से ही बुक हुई हैं, अथवा उसम किसी अन्य व्यक्ति ने अपना अधिकार जमा रखा है।

अध्यक्ष ने जानकारी दी अधिकाश तिथियो पर नेताओ ने ही अधिकार जमा रखा है फिर भी कुछ तिथिया ऐसी हैं जिन पर विभिन्न सप्रदायो के प्रमुख देवी देवताओं व गुरुओ न अपना कब्जा जमा लिया है।"

एक युवा नेता, जिसे बीसवी सदी के इतिहास की जानकारी नहीं थी, ने तेवर दिखाते हुए कहा, "इन धार्मिक लोगो को किसने अधिकार जमाने दिया? इन्हे बेदखल क्यो नही कर दिया जाता है? बेकार नेताओ के अधिकार क्षेत्र मे दखलदाजी किए जा रहे हैं।"

बीसवी सदी के इतिहास क जानकार एक नता ने बताया, "बीसवी सदी म देश मे धमनिरपेक्ष व्यवस्था के साथ ही प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली थी। नताओ ने वोट लेने के लिए हर धम के लोगो को खुश करन के उद्देश्य स कुछ तिथिया आबटित कर दी थी जिन्ह उन सप्रदाय वालो न अपन देवी देवताओ और गुरुओ के नाम पर एलाट कर दिया था। इसस नताओ को वाट मिल जाते थे और समय समय पर राजनैतिक स्वाथ साधने के लिए साम्प्रदायिक विवाद खडा करन मे सुविधा प्राप्त हो जाती थी?

इस तथ्य के सामन आन पर कई नताओ ने विचार व्यक्त किया कि सभी धम के तिथिया को कोटा समाप्त कर दिया जाए। तिथिया केवल नताओ क लिए ही सुरक्षित रहनी चाहिए। बडे शम की बात है कि तिथि के अभाव मे हमारे महान नता चन से मर नही पा रहे हैं, और विभिन्न सप्रदाय क लोग बे वजह तिथिया पर कब्जा जमाए बैठे हैं।'

इस पर एक अनुभवी नेता ने पूछा, "लेकिन इक्कीसवी सदी मे भी अभी प्रजातत्र है, चुनाव के वक्त वाट कैसे प्राप्त करोगे?"

कई नेताओं ने समवेत स्वर म कहा कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं

है। प्रजातंत्र को रहने दो और चुनाव व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाए।

बैठक की अध्यक्षता करने वाले नेता ने पूछा, "ऐसा कैसे संभव हो सकता है? जब प्रजातन्त्र रहेगा तो चुनाव भी करवाना पड़ेगा।"

बीसवीं सदी के इतिहास की जानकारी रखने वाले नेता ने उपस्थित नेताओं की ज्ञान वृद्धि करते हुए बताया, 'प्रजातन्त्र तो बीसवीं सदी में भी था लेकिन सदी के अंत में चुनाव की प्रक्रिया को समाप्त करने की कार्यवाही धीरे धीरे प्रारम्भ कर दी गई थी।'

कुछ युवकों ने इस बात को विस्तारपूर्वक समझाने का अनुरोध किया।

इतिहासज्ञ नेता ने बताया 'बीसवीं सदी के प्रजातंत्र में शुरू शुरू में तो सभी निर्वाचन चुनाव द्वारा होते थे चाहे सत्ता के प्रतिनिधियों का चयन हो या फिर संगठन के पदाधिकारियों का। लेकिन सदी के अंतिम वर्षों में यह प्रक्रिया लगभग समाप्त करके तदर्थ नियुक्ति की प्रणाली प्रारम्भ कर दी गई। पार्टी में एक प्रमुख नेता होता था, जिसे सुविधा के लिए हाई कमान कहा जाता था। वह जब चाहे जिसे पद से हटा सकता था और जिसे चाहे पद पर बिठा देता था। उसका निर्णय ही प्रजातंत्र कहलाता था। कहीं कोई चुनाव नहीं होता था। लेकिन पूरे देश में सफल प्रजातान्त्रिक प्रणाली का बराबर गुणगान किया जाता था। हां, एक बात अवश्य थी कभी कभी सुविधानुसार आम चुनाव करवा लिए जाते थे।'

इस पर कई नेताओं ने विचार व्यक्त किया कि बीसवीं सदी की भांति ही तदर्थ नियुक्ति की प्रक्रिया जारी रखी जाए और आम चुनाव जैसे व्यर्थ के कार्य को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाए। इससे फिजूल खर्ची भी रुकेगी।

इस विचार से सहमत होते ही सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित कर लिया गया तथा विभिन्न सम्प्रदाय के नाम पर ऐलाटेड तिथियां रद्द कर दी गई। इस प्रस्ताव के फलस्वरूप पचास साठ तिथियां तत्काल प्रभाव से वृद्ध नेताओं के लिए खाली हो गईं।

इसके पश्चात एक नेता ने सुझाव दिया कि सिलसिले से अन्य तिथियों पर भी विचार कर लिया जाए। यदि कुछ तिथियां और खाली की जा सकें

तो अच्छा है, क्योकि बहुत से बुजुर्ग नेता लाईन लगाए बैठे हैं।

इतिहासज्ञ नता ने जानकारी दी। 'बीसवीं सदी म इस देश मे स्वतन्त्रता संग्राम का आन्दोलन चला था जिसमे कई नेताओ ने भाग लिया था। स्वतन्त्रता के पश्चात् उन नेताओ को राष्ट्रीय नेता मान लिया गया और उनम से कइयो को पुरस्कार स्वरूप तिथियां ऐलाट कर दी गई।"

इस पर युवा नता भडक उठे, एक आन्दोलन म भाग ले लिए तो कई शताब्दियो का ठेका मिल गया है? हम लोग रोज दो-तीन आन्दोलनो म भाग ले रहे हैं। हमे क्या मिल रहा है?

इस मुद्दे पर विस्तृत विचार विमर्श के पश्चात बीसवी सदी के ऐसे पुरान नेताओं के नाम एलाटेड तिथिया खाली करने का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ। लेकिन एक नता ने उसम सशोधन का सुझाव रखा जिसे स्वीकार कर लिया गया। सशोधन यह था—"बीसवी सदी के जिन नेताओ की पीढी अभी इक्कीसवी सदी म भी नेतागिरी के धधे मे लगी है, उनकी तिथिया कायम रखी जाए।"

इस सशोधन के साथ मूल प्रस्ताव सर्वसम्मति स स्वीकार कर लिया गया। इस तरह साठ सत्तर तिथियो को पुराने नेताओ के कब्जे से बेदखल कर इक्कीसवी सदी के नेताओ के लिए खाली करवाया गया।

तिथिया खाली होते ही मरने के लिए वृद्ध नेताओ की लम्बी लाईन लग गई थी। सभी सोच रहे थे समय पर तो ठीक है अन्यथा गलत समय पर मरने से कोई नाम-लेवा भी नही रहेगा।

हाथी के दात

उस दिन चर्चा चल रही थी—शहर मे आया हुआ एक हाथी पागल होने के बाद जगल मे चला गया है। जगल भी कोई ऐसा वैसा नही—अभ्यारण्य शहर के लोग बदूक लेकर उसका पीछा किए जा रहे हैं। उसे जिंदा नही छोड़ने की कसम खाय बठे हैं। और हाथी अपनी जान जोखिम म देखकर भागा भागा फिर रहा है।

मेरी समझ से तो हाथी न किया ही गलत काम था। जगल का प्राणी शहर मे घूम रहा था। अचानक पागल हो उठा। होता कैसे नहीं ? शहर म पहले ही इतने हाथी घूम रहे थे, उनके सामने उसे पूछता कौन ? तरह-तरह के हाथी थे। सरकारी हाथी थे डकार मारते हुए ऊघ रहे थे। समाज-सेवा, जन सेवा के हाथी, सूड म भर भर कर धूल उडा रहे थे। ढेर भर देश सेवा के हाथी भरे पडे थे जो झक्क सफेद कुरते पाजामे पर जाकेट डटाय हुए अपने कालेपन को छुपा रहे थ। इन सब हाथियो के होते हुए जगल का वह निरीह हाथी शहर म कस खप सकता था और उस पर अपने मूल चरित्र को बनाए रखकर असभव ! यहा तो उसे पागल होना ही था। अच्छा भला जगल म रहता पत्तिया खाता और निद्व द्व होकर घूमता रहता। उसकी मति मारी गई थी जो जगल से शहर मे आकर फस गया था।

पुराने जमाने की बात अलग हुआ करती थी जब शहर आज का सा शहर नही था। शहर म हाथी नही, आदमी बसते थ। तब कभी कभार कोई हाथी आ जाता तो घर घर गली-गली घूमता था। लोग बडी श्रद्धा से उसके दशन करते आरती उतारते, खाने को नारियल देते, अपन बच्चो को पास बुलाकर सूड छुआते। कभी उस पर सवारी भी करवा देते और सभी

आनदित हो लेते थे।

अब इधर गली मुहल्लो मे रोज कई तरह के हाथी घूमते हैं। लोग भोग चढा-बढा कर परेशान हो गए हैं। दूर स ही उन्हें देखकर घर के फाटक बद कर लेते है। बच्चा को उनकी छाया से भी दूर रखते हैं वैसे त्रस्त होकर लोग कभी कभार उनकी आरती भी उतार देते हैं। य आरती कुछ दूसरे ही किस्म की होती है। भला बताओ, ऐसे आलम मे जगल का हाथी आएगा तो किसी से क्या पाएगा ?

उसने देख लिया होगा चारो ओर भटक कर। तडफ गया होगा भूख-प्यास के मारे। न तो कोई खिलाता होगा और ना ही कोई अपने पास बिठाता होगा। बिठाएगा भी कैसे कोई इस काले कलूटे हाथी को। मूल चरित्र के असली हाथी को बगल मे बैठा देखकर लोग कही हाथी के चरित्र की तुलना व्यक्ति से करने लग जाते तो फिर ! दूर ही रहे तो अच्छा है, क्यो बेकार म भ्रम पैदा करने का मौका देना।

मेरी समझ मे तो बात ऐसी ही थी। अपने साथ उठाओ बिठाओ नही, बातचीत नही करो, खाने पीने को न दो तो आदमी के भी विक्षिप्त हो जाने का खतरा रहता है। फिर वह तो जगल का सीधा सादा प्राणी था। सरल व सहज हृदय। छल प्रपच से कोसो दूर। लग गई होगी उसकी भावनाओ को ठेस। आखिर जानवर है ना। आदमी तो नही जो शहर के चरित्र को समझ कर पचा लेता। खो बैठा मानसिक सतुलन। हो गया पागल। जानवर होकर आदमियो का भरोसा करता है। यह पागलपन नही तो और क्या है ?

देख लो गलत काम की कैसी सजा भुगतनी पड रही है। क्या गत बन रही है। बडा शौक था शहर आने का। पागल हुआ तो आखिर वापस जगल म ही लौटना पडा ना। अब शहर के लोग हैं कि जगल म भी उसका पीछा नही छोड रहे हैं। बेचारा हाथी पागल होने पर ही सही, उस अकल तो आई थी लेकिन वाह रे आदमी ! जगल मे भी उसका पीछा जारी है। शायद वह शहर की पोल जान गया है। उसका जीवित रहना कईयो के लिए परेशानी का कारण बन सकता है इस कारण उसे मारना जरूरी हो गया है। यह जगल का नही, शहर का कानून है। जो शहर का होकर रह-

गया उसे अभय। जिसने बगावत की उसे मरना पड़ेगा।

कितना भोला है, वह हाथी भी। जो जान जोखिम म देखकर अभ्यारण्य मे घुस आया है। क्या समझता है ? क्या अभ्यारण्य मे शिकार नही किया जाता ? अर निबुद्धि अभ्यारण्य तो बनाए ही शिकार के लिए जाते हैं। य भोले जानवर आदमी की कुटिल बुद्धि का कहा तक पार पाएंगे। अभ्यारण्य म आकर य क्या समझते हैं कि निभय हो जाओ ? निद्व द्व विचरण करो। आदमी से मत डरो। इन बेचारो को क्या मालूम आदमी न जानबूझकर अभ्यारण्य का निर्माण किया है, ताकि उनके खास लोगो को शिकार के लिए मीलो और महीनो न भटकना पडे जब दिल बहलाव की इच्छा हुई पहुच गए अभ्यारण्य म। बीबी बच्चो को पिकनिक मनाना है घुस गए अभ्यारण्य मे। बहुत दिनो से निशाना नही साधा अभ्यारण्य हाजिर है। लगे हैं शहर के लाग बदूक लेकर पीछे पीछे और अभ्यारण्य मे होकर भी हाथी भागा भागा फिर रहा है।

इस बीच एक समाचारसुनने को मिला। पागल हाथी ने अपन महावत को मार डाला। लोग कह रहे हैं हाथी का पागलपन और बढ गया है। उस जल्दी खतम कर देना चाहिए। व्यवस्था की जिम्मेदारी का प्रश्न है।

कोई सही ढग से नही सोच रहा है। यह हाथी का पागलपन कहा, वरन उसकी समझदारी है। किसी न यह सोचने की कोशिश की कि हाथी ने आखिर महावत का मारा क्या ? हाथी बेचारा तो शहर से परेशान होकर अपनी जान बचाने भाग कर जगल मे चला आया था। महावत वहाँ क्या करने गया था। हाथी को फिर से अपन वश मे करन ही ना। महावत उम वश मे करके क्या करता ? फिर स शहर लाता। गली मुहल्ले घुमाता। सफेद हाथिया से मिलवाने की कोशिश करता और पुन उसका मूल चरित्र बदलवाने की कोशिश करता। बताइए इसमे हाथी का क्या दोष ? जिन स्थितियो के कारण विक्षिप्त होकर वह अपन मौलिक परिवेश म लौटा है फिर से उन्ही स्थितियो म फसने के लिए क्या वह महावत के काबू म आ जाता ?

भइया वह जगल का हाथी है। महावत की बात तभी तक मानता रहा जब तक वह उसे सही दिशा पर ले जाता रहा। गलत राह बतान

पर जगल का हाथी महावत को भी पटक देता है। ये तो शहर के सफेद हाथी ही हैं जो गलत राह पर चलते हुए भी अपने महावतो को लादे रहते हैं। उनके अकुश के इशारो पर नाचते हैं। कथित पागल हाथी को तो अब मरना ही पडेगा क्योकि उसने शहर की मर्यादा भग कर दी है। जब शहर पहुच गया था तो शहरी होकर रह जाता था, वापस जगल मे लौटना नही था। शहर के हाथियो मे यह परम्परा भी है कि महावत कितना ही अत्याचार करे, शोषण करे, उसे मारा नही जाता है। हा, मौका पडने पर महावत को बदला जा सकता है। इस जगली हाथी ने गलत परम्परा की शुरुआत कर दी है। शहर के लोग उसे तो सबक सिखाकर ही रहेगे। ढील देने पर तो दूसरो की आँखें भी खुल सकती हैं, उसकी तरह दूसरो के हौसले भी बढ सकते हैं। उसे मारने से एक लाभ यह भी होगा कि दूसरो पर भी भय बनेगा। वे सब मर्यादा मे रहना सीखेंगे। वह पागल हाथी अभ्यारण्य मे तो क्या आकाश पाताल मे भी पहुच जाएगा तो भी लोग उसका पीछा नही छोडेंगे। उचित भी है। एक गलत परम्परा, शुरुआत मे ही जड से समाप्त कर दी जाए तो अच्छा है।

मैं सुबह-सुबह बरामदे मे बैठा अखबार पढ रहा था। मेरे एक मित्र जगल से लौटे थे। वे भी शिकारी दल के साथ कुतूहलवश जगल चले गए थे। वे बता रहे थे—हाथी बडा हट्टा कट्टा, तगडा और ऊचा पूरा है। बडे आराम से जगल मे पत्तिया खाता घूमता रहता है। बर्ताव से पागल नही लगता है बल्कि वह तो आदमियो को देखकर डरता है और भागने लगता है।

मैं मित्र की बातें सुनता हुआ अखबार भी पढता जा रहा था। एक समाचार छपा था—एक शहर मे आदमी और कुत्ते मे एक दूसरे को काटने की प्रतिस्पर्धा प्रारभ हुई। आदमी और कुत्ता मैदान मे आमने सामने पहुचे लेकिन प्रतिस्पर्धा शुरू होने के पहले ही कुत्ता दुम दबाकर भाग खडा हुआ।

राजनीति से सम्बधित समाचारों के ताजे घटना क्रम भी अखबार मे भरे पडे थे। एक समाचार था—राष्ट्रपति ने पत्रकारो को बताया कि प्रधानमत्री से उनका कोई मतभेद नहीं है। उनमे परस्पर सद्भावना,

आत्मीयता तथा सहयोग का रिश्ता बना हुआ है। अखबार के मुखपष्ठ पर एक आकषक फोटो भी छपी हुई थी जिसमे प्रधानमत्री मुदित मन से अपने हाथो प्रसन्नचित्त राष्ट्रपति को लडडू खिला रहे हैं।

मेरे मित्र जगल तथा हाथी का वणन सुनाए जा रहे थे। वे कह रहे थे—हाथी के दात काफी लम्बे और सुन्दर हैं।

शायद कागज की तहो म वे कुछ खोज रहे थे इसलिए किसी भी तह मे कुछ न पान पर उसे कठोर नजरो से घूरा, और फिर कागज को उलट-पुलट कर बार-बार पढने लगे।

इतना सब कर लेने के बाद बिजली साहब ने कहा— हू तो इलेक्ट्रिक कनेक्शन लेने आए हो।"

उसने कहा —' हा साहब।"

साहब ने पूछा—' किस काम के लिए?"

उसने कहा - सिचाई के लिए सरकार।"

कहा की सिचाई?"

' खेतो की सिचाई के लिए हुजूर।"

'खेत किसके हैं?'

'मेरे हैं माई बाप।"

' सिचाई का क्या साधन है?"

"अभी कुछ भी नही है मालिक।"

"फिर खेती कैसे करोगे?"

इसीलिए तो पम्प लगाना चाहता हू सरकार।"

पम्प किसका है?'

मेरा है जी।"

बिजली कनेक्शन लिया है या नही?'

' नही लिया है साहब।

फिर पम्प कैसे चलाओगे?"

"इसीलिए तो आया हू सरकार।"

इतनी लम्बी पूछ-ताछ के बाद शायद बिजली साहब को सही बात समझ मे आयी। उन्होने लम्बी सास छोडते हुए कहा— हू तो तुमको कनक्शन चाहिए।' और अब तक हाथ मे पकडे कागज को पेपरवट स दबा कर रख दिया।

साहब ने कहा— बिजली कनेक्शन कसे मिलता है मालूम है?'

भोलाराम न कहा— इसीलिए तो दरखास्त दिया है ना हुजूर।"

साहब ने उसे ऐसी नजरो से घूरा जैसे वह हिदुस्तान मे नही रहता

ट

हा। फिर कहा—"केवल दरख्वास्त । और क्या देना पडता है नही मालूम।"

भोलाराम न अधिकारी के पीछे वाली दीवाल पर टग गाधी जी की ओर देखते हुए कहा—"मुझे तो कुछ नहीं मालूम साहब क्या लगता है। दरख्वास्त की जानकारी थी सो आपका दे दी।"

साहब ने फिर एक लम्बी हुकार भरी—"हू दरख्वास्त लगाने का सिस्टम नहीं मालूम और चले आए कनेक्शन लने। जिस जगह पर पम्प लगाना चाहते हो वह जगह किसकी है?"

"मेरी अपनी जगह है सरकार।"

"उसका नक्शा लाये हो?" भूमि स्वामी का प्रमाण पत्र है तुम्हारे पास?"

"नही लाया हू साहब। मुझे पता नहीं था कि ये सब भी लगते हैं।"

"हू पता नहीं था! स्साले समझते हैं सरकारी दफ्तरो मे बिना नियम-कायदे के काम हो जाता है। आ जाते हैं मुह उठाए हुए।" साहब ने फुसफुसाते हुए कहा और फिर उसे जवाब दिया—"ठीक है, नक्शा और प्रमाण पत्र लेकर आओ, फिर देखेंगे।"

वह लोट पडा कागजा का जल्द-से-जल्द जुगाड करने का दृढ सकल्प लेकर।

जमीन का नक्शा तो खैर उसन अपने एक मित्र मे बनवा लिया। लेकिन पटवारी से प्रमाण पत्र प्राप्त करने की भाग दौड से यह सिद्ध हो गया कि आदमी को अच्छी सेहत के लिए घूमने दौडने की कोई आवश्यकता नहीं है। बस, एसा ही एराध काम अपने जिम्मे ले लेना चाहिए। सेहत तो पटवारी ही सुधार देगा।

किसी इलेक्शन को जीतने की खुशी हासिल हुई भोलाराम को जब उस भू-स्वामित्व का प्रमाण-पत्र पटवारी से प्राप्त हुआ। प्रमाण-पत्र और नक्शा लेकर विधायक की सी चाल से चलकर वह विद्युत मडल पहुचा और कागजों को बिजली साहब के हवाले किया। लेकिन साहब ने उसे पहचानने से ही इन्कार कर दिया। फिर कई तरह से याद दिलाए जान पर साहब न पूछा—"इन कागजों को लेकर क्या आए हो?"

उसने कहा—"आपन ही तो मगवाया था हुजूर।"

"मैंने क्यो मगवाया था ?" अधिकारी न पूछा।

"विद्यत कनेक्शन दने के लिए साहब।" भोलाराम ने उन्हे याद दिलाया।

'अच्छा अच्छा। तो सब कागजात तैयार हो गए?" साहब ने पूछा।

"हा सरकार। सब तैयार हो गए।" उसने उत्साह से कहा।

अधिकारी ने जरा घुडकते हुए कहा—"तुम्हार कहने से हम मान लें कि तैयार हो गए? यह सरकारी दफ्तर है। यहा का सिस्टम तुम क्या जानोगे। कागज सही तयार करने का एक तरीका होता है इसी बात की तो हम सरकार से तनख्वाह लेते हैं।"

"सिस्टम तो आप ही समझें हुजूर। हम तो केवल हुक्म बजाना ही जानते हैं। देख लीजिए कागज आपके सामने पडे हैं।' भोलाराम ने जवाब दिया।

'हू तो ऊची बात भी करने लगे।" साहब न गुर्राते हुए कहा।

उसने तत्परता पूवक कहा— नही सरकार, मैं तो यह कह रहा था। कि आपके कहे अनुसार सब कागज तैयार करवा कर ले आया हू। उन्हे आप दख लीजिए।

साहब ने कुछ देर तक अनमने ढग से कागजो का निरीक्षण किया और फिर पूछा—' खेत भी तुम्हारे हैं? पम्प भी तुम्हारा है। लेकिन पानी कहा स खीचोगे भोलाराम?'

नदी से साहब।' उसने जवाब दिया।

' नदी किसकी है ? साहब ने पूछा।

भोलाराम हडबडा गया नदी को किसकी बताए? उसने कहा— पता नही किसकी है साहब।

जब पता नही किसकी नदी है तो उनसे जाओ, पता करो कि नदी किसकी है स पानी लेने मे उसे कोई आपत्ति ?

साहब ने जरा गरम होते हुए कहा।

'बहुत अच्छा साहब।" कह कर भोलाराम उस छात्र की तरह लौट आया जिसे शिक्षक पढ़ाता नहीं है लेकिन प्रतिदिन लम्बा चौड़ा होमवर्क सौंप देता है।

वहां से लौटने के बाद वह यह पता लगाने में भिड़ गया कि नदी पर मालिकाना हक किसका है। पूछताछ में प्रमुख नेताओं, प्रख्यात दादाओं और विस्तारवादी ताकतों तक ने नदी का स्वामी बनने से इन्कार कर दिया। भोलाराम चिंतित हो उठा। एकबारगी तो यह विचार भी उसके मन में आया कि पेपर में इस्तहार दे दिया जाए कि "एक नदी लावारिस हालत में मेरे खेत के पास नगर-वधू सी पड़ी हुई है। जिस किसी की हो पहचान बता कर ले जाए। नहीं तो मैं उसे उठाकर अपने खेत में ले जाऊंगा। फिर विवाद की जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी।"

लेकिन उसने यह इरादा त्याग दिया क्योंकि इससे कई सक्षम दावेदार खड़े हो जाने की संभावना थी। फिर सही दावेदार की पहचान कर पाना अदालत के लिए भी कठिन कार्य हो जाता। खैर उसकी तो बिसात ही क्या है और संसद से तो कोई आशा रखना ही व्यर्थ है। वैसे भी आजकल वहां बहस कम और बहिष्कार ज्यादा होता है।

आखिर उसने स्वयं ही हर एक से मिल कर पता लगाने का कठिन संकल्प घोषित किया। नगर के रण-बांकुरों से निराश होकर जंगल दफ्तर की देहरी पर मत्था टेकने पहुंचा।

भोलाराम ने कहा—'साहब जी, नदी आपके अण्डर में आती है। आप मुझे इस नदी से पानी ले जाने का नो आब्जेक्शन दिलवा दीजिए।"

जंगल साहब ने कहा—'कोई नदी-वदी हमारे अण्डर में नहीं है। हमें जंगल काटने से ही फुरसत नहीं है नदी का हिसाब किताब लगाने कहां जाएंगे।'

भोलाराम बोला—'साहब जी, जंगल के भीतर से निकले गिट्टी-बोल्डर भी जंगल दफ्तर के हो जाते हैं यहां तक कि जंगल में रहने वाले परिवार की महिलाएं तक जंगल विभाग की प्रापर्टी हो जाती हैं फिर यह नदी भी तो जंगल से निकल कर आती है मेरे हिसाब से यह आपकी प्रापर्टी होगी हुजूर। जरा पता लगा कर देख तो लीजिए।

इतना सुनने पर जंगल साहब का चेहरा बदल कर जगल होता दिखने लगा। साहब ने गुर्राते हुए कहा— हम सिखाने आया है ? कि नदी किसकी है ? अरे नदी हमारी होती तो जगल के पेडो की तरह कब की साफ हो गई होती फिर तो वह केवल रिकार्ड मे ही दिखाई देती कि यहा कोई नदी है। जाओ खनिज विभाग मे पता करो। नदी पहाड से निकल कर आती है और इसलिए वह खनिज वालो की प्रोपर्टी हो सकती है।'

भोलाराम भागा भागा खनिज विभाग पहुचा और अपनी अरजी लगाई।"

खनिज साहब ने कहा— क्या हम मूख समझते हो ? सरकारी कुरसी पर बठे हैं कोई घास नही छील रहे हैं। नदी खनिज विभाग मे आती तो अभी तक हम उसको बूद-बूद रायल्टी मे उठा देते। जाओ, राजस्व विभाग मे पता करो ऐसी सब मलाई का काम उन्ही के अण्डर मे आता है।"

भोलाराम तुरन्त तहसीलदार शरणम् गच्छामि हुआ। उसने अपनी नियम-व्यथा तहसीलदार साहब को सविस्तार सुनाई।

तहसीलदार ने कहा— राजस्व विभाग तो ठोस धरातल वाला विभाग है। नदी का हमसे क्या सम्बन्ध ?'

उसने कहा—' बहती नदी म हाथ धोना भी आपके भाग्य मे लिखा है हुजूर। आप ही तो नदी म साग सब्जी, फल आदि बोने का ठेका देते हैं सरकारी टेक्स की वसूली कर रसीद काटे बिना यह सब हो जाता है, इसलिए जरूर यह नदी आपके ही अण्डर मे आती होगी। मुझे सर्टीफिकेट दिलवा दीजिए हुजूर तो मेरा काम बन जाए।

तहसीलदार ने थोडी देर तक मनन किया फिर अपने मतलब की बात निकालते हुए पूछा—' जब नदी हमारी है तो क्या हम उसे भी बीस सूत्रीय समिति मे बाट सकते हैं ?'

भोलाराम ने कहा—' क्यों नही बाट सकते हुजूर अवश्य बाट सकत है। जब आप चट्टान और पहाड तक बाट रह हैं तो [illegible] नदी ने क्या बिगाडा है। कुछ देकर ही जाएगी कुछ लेगी तो [illegible]

लेकिन राजस्व विभाग सीधे स किसी बा[illegible] तो फिर राजस्व वसूल कैसे कर पाएगा ?

तहसीलदार ने पटवारी को बुलाया। खसरा और नक्शा देख कर पटवारी रिकार्ड म बनी लाइन को देख कर वहा नदी होने की तसल्ली कर कायदे कानून की स्थिति को पुख्ता किया।

भोलाराम समझ गया कि तहसीलदार साहब घुटे पीर हैं। सरकारी काय प्रणाली को अच्छी तरह समझते हैं। तभी तो उन्होने खसरा-नक्शा मे नदी की लाइन देख कर तसल्ली कर ली, नहीं तो सरकारी कामा म कई बार होता यह है कि मौके पर जमीन तो रहती है लेकिन पटवारी के नक्शे मे गायब होती है। इससे सरकार परेशानी म पड जाती है यह बात तहसीलदार साहब अच्छी तरह जानते थे। सरकारी नियम का अथ होता है कि रिकाड को दुरुस्त बना कर रखो। फील्ड मे लोगो को भले ही मारामारी करने दो।

तहसीलदार साहब की जिम्मेदारी की भावना देख कर भोलाराम के हृदय म सरकारी विभाग के प्रति श्रद्धा उमड पडी। जब सभी तरह से तहसीलदार साहब को यह तसल्ली हो गई कि नदी उसके ही अण्डर मे आती है, तब उन्होने घोषित किया—"नदी तो आ गई हमारे अण्डर मे अब ठीक है।"

भोलाराम की इच्छा जोरो से ताली पीटने की हो गई।

तहसीलदार न फिर कानूनी स्थिति को स्पष्ट समझ लेने के लिए दुनियादारी करते हुए कहा—' यह नदी सीधी बह कर समुद्र मे मिल जाती है या बीच मे ही कहीं गुम हो आती है ?"

भोलाराम ने निहायत भोलेपन से जवाब दिया—' हुजूर आगे जाकर सिचाई वालों ने इस नदी पर एक बाध बना दिया है।"

यह सुनते ही तहसीलदार साहब का नियम-मोह हरकत मे आ गया। साहब ने कहा—फिर तो अड़चन आएगी यदि तुम्हें पम्प का कनेक्शन मिलेगा तो आगे बाध मे पानी कम हो जाएगा ? तुम अपने खेतों के लिए पम्प से पानी खीच लोग तो लाखा रुपयों की लागत से बना बाध बेकार नहीं हो जाएगा ?

भोलाराम ने सफाई दी— सरकार, कवल पाच हार्स हावर के पम्प से इतने बड़े बांध को क्या फर्क पड़ने वाला है।'

साहब न कहा—"फक तो नही पड़ेगा लेकिन यह नियम का सवाल है। हम सरकारी अधिकारी दूर की सोच कर ही काम करते हैं। काम भल ही देर से हो लेकिन पुख्ता हो। जाओ, पहले सिंचाई विभाग से लिखवा कर लाओ कि पाच एच० पी० का पम्प चलाने से उनके अण्डर म बने बाध को कोई नुकसान नहीं होगा।"

भोलाराम सरकारी नियमो के प्रति नतमस्तक हो उठा। काम देर से हो, इतनी देर से हो कि उसकी आवश्यकता ही समाप्त हो जाए। लेकिन पुख्ता होन का विश्वास बना रहे। यही है सरकारी नियम, धन्य हो सरकार और धन्य है तुम्हारा नियम।

मरता क्या नही करता। भोलाराम भागा भागा सिंचाई विभाग पहुचा। ससम्मान उसने अपनी अरजी वहा भी लगाई और हाथ बाध कर दीन मुद्रा मे आम भारतीय नागरिक की तरह खडा रहा। सिंचाई साहब ने अरजी पढते ही जोरो से मुह विचकाया और कहा— नदी से तुम्ह पानी देंगे और बाध म पानी कम हुआ तो कमाड एरिया के खेतो को पानी कहा से देंगे बताओ?"

इस बार भोलाराम ने झल्लाकर कहा—' बाध मे पानी बहुत आता है साहब। हर साल वेस्ट वीयर से अतिरिक्त पानी बहा कर नाले म छोडना पडता है। मेरा पाच एच० पी० का पम्प कोई अगस्त्य मुनि तो है नही कि नदी का पूरा पानी ही पी जाएगा।"

सिचाई साहब ने भी झल्ला कर ही जवाब दिया— हम यह सब नहीं जानते। हम कोई मन्त्री नही हैं सरकारी अफसर हैं। सरकारी अफसर, लिखित म कुछ देते हैं तो पूरी जाच पडताल कर लेते हैं। अभी हम अपने एस० डी० ओ० के मार्फत हेड-वक्स के सब इजीनियर को खबर भिजवाते हैं। वही इस बात की जांच करेगा कि बाध के जल-ग्रहण क्षेत्र स कितने मयूमक पानी के आधार पर बाध को डिजाइन किया गया है और इस तरह सोवल पम्प लगाने स बांध की भरण-क्षमता म कितना फक पडेगा। तभी हम तुम्हें नो-आब्जेक्शन सर्टिफिकेट दे सकेंग। अब तुम जा सकते हो।'

सरकारी नियमों की लम्बी प्रक्रिया स भोलाराम पहल ही टूट चुका था। सिचाई साहब की इस लम्बी व्याख्या पूरी को सुनकर वह भयाक्रांत हो

उठा। सहमते सहमते उसने पूछा—"इस कार्यवाही में कितना समय लग जाएगा साहब ?"

साहब गुर्राये—'हम क्या तुम्हारे ही काम के लिए खाली बैठे हैं ? सरकारी नौकर हैं सरकारी बैठकों, मीटिंगों से फुरसत मिलेगी तब सोचेंगे। यह कोई खड़े खड़े निपटा देने वाला काम नहीं है। पूरी छान बीन करनी पड़ेगी पूरा सर्वे करना पड़ेगा। लगातार करने पर कम-से कम एक माह का समय तो लग ही जाएगा।"

भोलाराम पर लगभग बेहोशी सी छाने लगी। बिना कुछ कहे सुन वह वहां से वापस लौट आया, और महान भारतीय परम्परा के अनुसार उसने बिना कोई अनुमति प्राप्त किए, पम्प फिट कर लिया और ले आया नदी का अपने खेतों तक। लाइनमेन ने विद्युत कनेक्शन देने में खुशी जाहिर की। भोलाराम ने उसे निपटा दिया था।

भोलाराम का पम्प मजे से चल रहा है। फसल अच्छी है। उन्नत खेती का निरीक्षण करने कभी तहसीलदार तो कभी अन्य अधिकारी आते रहते हैं। बिजली साहब भी दो चार बार इधर से गुजर चुके हैं। सिचाई साहब का दौरा भी लग चुका है। फसल देखकर कृषि वाले साहब भी खुश हैं। पम्प की व्यवस्था देखकर सभी अधिकारी कृषि प्रधान देश में लोगों को आत्म निर्भर रहने का महत्व समझा रहे हैं। दूसरे कृषकों को भी ऐसे ही उपाय करने की सलाह दे रहे हैं।

वह नदी अभी भी वैसी ही बह रही है। इन वर्षों में बाध से कई बार अतिरिक्त पानी नाले में बहाना पड़ा है। एक बार तो बाध को फूटने से बड़ी मुश्किल से बचाया गया।

उधर भोलाराम जब भी पांच हार्स पावर के पम्प को पानी की मोटी धार फेंकते हुए देखता है तब-तब उसकी सरकारी नियमों के प्रति बनी आस्था और भी दृढ़ होती जाती है।

जादूगर भैया का मायाजाल

पहले ही कौन सी कमी थी जो अब जादूगर भैया का मायाजाल शुरू हो हो गया।

हमारे नगर मे एक राजनतिक पार्टी का दफ्तर है। दफ्तर का प्रागण काफी बडा है। शहर के मध्य म भी है। खेल तमाशे के लिए अच्छी जगह है। बस तो उस पार्टी का स्वय का खेल तमाशा वहा साल भर होता रहता है जिसका नगरवासी भरपूर आनन्द उठाते रहते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसी स्थिति आ जाती है कि पार्टी का कोई खेल वहा नही चल रहा होता है ऐसे वक्त पार्टी के अध्यक्ष महोदय जगह को किराय पर उठा देते हैं और वहा पर कभी प्रदशनी वाले कभी सकस वाल तो कभी जादू वाले अपनी दुकानें खोलकर बठ जाते हैं।

पार्टी के अध्यक्ष महोदय से कभी पूछो -- जगह को किराये पर दे क्या दते हैं इससे पार्टी की बदनामी होती है।'

इस पर उनका जवाब मिलता है--- क्या करें। पार्टी का खच इस प्रदर्शनी सर्कस व जादू वालो के दम पर ही चलता है।'

इधर बहुत दिनो स पार्टी का खेल थोडा ठडा पडा था तो एक प्रदशनी वाले को वहा विठा दिया गया। उसे कौन समझाय कि भइया अब यहा प्रदशनी का कोई आकर्षण नही रह गया है।

लेकिन उसे सीधी सच्ची बात कहा स समझ म आती। छोटे छोट स्थान घूमकर आया था सोच रहा था इस शहर म प्रदशनी दिखाकर लोगो को भ्रमित कर दूगा। उसे यह बात कहां मालूम थी कि इस प्रांगण म ~~-बड नेता आए ~नि अपनी प्रदर्शनी लगाते ही रहते हैं जिससे अब यहाँ

के लोगों का मन भर चुका है।

लेकिन थोडे ही दिनो मे बात उसके मस्तिष्क मे घुस गई। उसे सच्ची बात समझ म आ गई वह भाग चला रातो रात।

इधर प्रदर्शनी वाला गया ही नही था कि जादूगर भैया आ गए अपना तम्बू लेकर। वे यहा आए हैं सम्मोहन विद्या का प्रदर्शन करने। आजमा देखो भइया तुम भी। खुद ही समझ जाओगे, कुछ दिनो मे।

जादूगर भइया भिडे हैं लोगों को सम्मोहित करने मे—"आप कल्पना करो कि बडे आदमी हो, कार म घूम रह हो।"

सम्मोहित व्यक्ति कार चलान का अभिनय करने लगा। कभी एक्सीलेटर दबा रहा है तो कभी ब्रेक मार रहा है। फिर बडे आदमी की तरह इधर उधर देखता है। कितना बढिया कार्यक्रम चल रहा है लेकिन लोगो को मजा ही नही आ रहा है। आधे कार्यक्रम मे ही लोग हॉल से बाहर निकल पडे।

परेशान हैं जादूगर भइया। क्या कमी है प्रदर्शन मे, समझ ही नही पा रहे हैं, समझेंगे भी कैसे? यहा के लोग तो कई सालो स ऐसा ही सम्मोहन भोग रहे हैं। कभी दिल्ली वाले भइया आकर सम्मोहित कर जाते हैं तो कभी भोपाल वाले भइया जादू चला जाते हैं, और सम्मोहन भी ऐसा कि पूरे पाच साल तक नही टूटता।

अब देखो ना, उस बात को तो तीन-चार साल हो गए होंगे। आए थे हमारे दिल्ली वाले भइया। जिसकी पीठ पर हाथ फेरा वही सम्मोहित हो गया। आज तक नहीं टूटा है सम्मोहन। सब कुछ छूट गया लेकिन सम्मोहन नहीं टूट रहा है।

भइया पूछते हैं— 'कहा पहुच गए हो?"

चमचा बोलता है—"दिल्ली म हू भइया जी।"

—'क्या देख रहे हो?"

—"कुरसी दिखाई पड रही है।"

—'कौन बैठा है उस पर?

—'आप बैठे हैं, भइया जी।"

—"ठीक से देख लो मैं ही हू ना? और कोई तो नहीं है?"

—"एक दमिच आप ही हो भइया जी। कितने अच्छे जच रहो हो।"

अब इधर तीन-चार साल हो गये लेकिन बना हुआ है सम्मोहन का असर बीच बीच मे आ जाते हैं दिल्ली वाले भइया जी और पीठ पर हाथ फेरकर सम्मोहन का रिनीवल कर जाते हैं।

जब भी चमचे से मिलो तो वडवडाता ही मिलेगा—' हो जाने दो मडी का चुनाव। अध्यक्ष बन रहा हू नई जीप भी वहा आ गई है फड भी अच्छा है।" कभी उसके मुह स नगरपालिका का नाम निकलता है तो कभी जनपद का। कभी बोलता मिलेगा—"सगठन चुनाव निपट जाने दो फिर तो कुर्सी पक्की है। देख लूगा एक एक को बहुत कूद रहे हैं ना भोपाल भइया के दम पर।"

होता यह है कि दिल्ली वाले भइया जाते हैं तो भोपाल वाले भइया नगर मे आ धमकते हैं। सम्मोहन का पिटारा लेकर।

भोपाल वाले भइया का चमचा पूछता है—' मडी वाली कुर्सी मरी पक्की है ना ?

भइया कहते हैं—"बिल्कुल पक्की है। मैं तो तुम्हें दो साल से कह रहा हू।'

चमचा अपनी घबराहट का कारण बताता है—' लेकिन दिल्ली वाले भइया तो उस कुर्सी का आश्वासन अपने चमचों को दे रहे हैं ?"

भोपाल वाले भइया आश्वस्त करते हैं - 'देने दो आश्वासन तुम्हें इससे क्या तुम्हें तो मैं दिलाऊगा ना।"

चमचा अभी भी पूरी तरह सम्मोहन अवस्था म नहीं पहुचा। पूछता है—' अपनी पार्टी के सदस्य तो कह रहे थे कि व सब दिल्ली वाले भइया जी का साथ देंगे। फिर समझ मे नहीं आता कुर्सी मुझे कैसे मिल पाएगी ?

भोपाल वाले भइया सम्मोहन मत्र जरा तेज फूकते हुए कहते हैं—य सब मेरा काम है। तुम निश्चिन्त रहो। आखिर विरोधी सदस्य भी तो हैं वे तो अपन ही साथ हैं। मैंने उनस बात कर ली है। वे कोई अपना आदमी थोड ही खडा करने जा रहे हैं। मैं सब निपटा लूगा।"

चमचा शायद विचलित मस्तिष्क का था इसलिए इतना तेज मत्र फूकन के बाद भी सम्मोहित नही हो पा रहा है। अपनी चिंता व्यक्त करता

है—' लेकिन भइया जी, ऐसा ही तो आप नगरपालिका के समय भी कह रहे थे। आखिर धोखा हो गया था ना? कुरसी पर बैठ गया था। दिल्ली वाले भइया का आदमी। आपको क्या है आप तो हम उलझाकर भोपाल चले जाते हैं निपटना तो हम लोगों को ही पड़ता है।"

भोपाल वाले भइया जी समझ गए कि जो सम्मोहन दो-तीन साल से बना हुआ था वह क्यों टूट रहा है। थोड़ी मजबूती आवश्यक हो गई है। उन्होंने अमोघ अस्त्र का प्रयोग किया—"हो गया धोखा एक बार हमेशा थोड़े ही होना है। चुनाव नजदीक तो आने दो दिल्ली वाले भइया जी के दो आदमियों को ही गायब करवा दूंगा फिर व लोग कहा से लाएंगे वोट? अब बताओ तुम्हारी कुर्सी पक्की हुई या नहीं?"

—' तब तो ठीक है भइया जी, अब कोई खतरा नही है।"

चमचा अब हुआ ठीक से सम्मोहित। सम्मोहन मे लगा घूमने। इधर चमचा नगर मे घूम रहा है उधर भइया जी चले भोपाल। अब फुरसत कुछ महीनो के लिए।

अब तुम्ही बताओ जादूगर भइया, दिल्ली—भोपाल वालो से ऊचा सम्मोहन है तुम्हारे पास? जाओ भइया किसी दूसरी जगह पर जहा ऐसे सम्मोहन वाले भइया जी न हो वहा जाकर अपना व बाल बच्चो का पेट पालने की कोशिश करो। यहा क्यो अपने पेट पर स्वय लात मार रहे हो? यहा तुम्हारी दाल नही गलने वाली।

और मेरी सलाह मानो, तो जादूगर भइया तुम्हे एक नेक बात कहता हू, छोड दो यह धधा। अब इसमे कोई मजा नही रह गया है। देख नही रहे पिछले कितने वर्षों से सारा का सारा देश सम्मोहन मे है। जरा भी सम्मोहन टूटते दिखता है कि कोई नया दाव सामने आ जाता है। कभी गरीबी हटाओ का वाद चिपक जाता है तो कभी दस बीस सूत्र बध जाते हैं। ऐसे मे जादूगर भइया तुम नही चला सकते अपनी दूकानदारी। तुम अब भी नहीं समझे तो तुम्हारा भगवान ही मालिक है।

आखिर कब तक डमरू बजाता रहता वह, चला गया जादूगर भइया भी प्रदर्शनी वाले भइया की तरह पिटा पिटा सा खाली कर गया पार्टी का मैदान।

देखें अब वहा कौन मजमा लगाता है।

खाली हाथ मत जाइए हुजूर

जरा सा खटका हुआ और मैं पहले ही झटके मे समझ गया कि घर मे चोर महाशय पधारे हुए हैं। मैं चोर को महाशय कह रहा हू तो आपको बुरा लग रहा होगा। लेकिन शिष्टाचार के नाते हमे कई लोगो को महाशय कहना पडता है। मैं तो इसलिए भी कर रहा हू कि इस घर की देहरी को आज तक किसी बाहरी व्यक्ति ने पवित्र नहा किया। इस घर म अब तक केवल महगाई घुसनी रही। बेरोजगारी घुसी और भुखमरी ऐसी घुसी कि जाने का नाम ही नही लती है। ऐस घर मे जिस व्यक्ति ने कदम रखा वह ता मरे लिए महाशय होगा, आदरणीय होगा ही।

नीद खुल जाा पर भी मैं चुप पडा रहा। लेटे लेटे म उनके दिय स्वरूप का दशन कर रहा था। व महाशय पूरी कोशिश मे थे कि उाकी प्रतिष्ठा के अनुरूप घर मे कुछ मिल जाए। बडी सूक्ष्मता से खोज बीन जारी थी। लेकिन घर म कुछ होता तो उन्हें मिलता जिस घर मे कपडे बर्तन तक बिक कर भूख की होम मे स्वाहा हो गए हो, वहा उसे क्या मिल सकता था? शुरू मे तो मैं उसकी खोजबीन और परेशानी का आनन्द लता रहा लेकिन जब मनं देखा कि महाशय बिल्कुल निराश हो रहे हैं तो मैं भी कुछ चिन्तित हो गया।

मैंने सोचा—आज पहली बार कोई आदमी किसी उम्मीद से इस घर मे आया है। मेरे रहते हुए वह निराश हो जाए यह हो ही नही सकता। भुखमरी आई मैंने उसे निराश नही किया। महगाई आई, उसे निराश नही किया। बेरोजगारी आई, उसे भी निराश नही किया। आज मुझ पर फिर एक जिम्मेदारी का काम आ गया है। चोर महाशय का दुख मुझस

देखा नहीं जा रहा था।

मैं बिस्तर से उठ कर बैठ गया। वैसे मैं जहां सोया था वहां बिस्तर नाम की कोई चीज नहीं थी। लेकिन आम बोल चाल की भाषा में हमारी यह आदत हो चुकी है कि जहां सोते हैं उस बिस्तर मान लेते हैं। हां, तो इधर मैं बिस्तर से उठा और उधर चोर महाशय हड़बड़ाए।

मैंने तत्परता से कहा— नहीं नहीं। घबराने की कोई जरूरत नहीं, आप थक गए होंगे, थोड़ा आराम से बैठ जाइए। पानी पियेंगे आप? माफ कीजिएगा, व्यवस्था नहीं है अन्यथा चाय बनाकर पिलाता आपको।" कहीं वह मुझ पर हमला न कर दे इस ख्याल से मैंने इतनी तत्परता नहीं बरती थी। बल्कि इसलिए बरती थी कि मुझे जागता देखकर कहीं वह भाग न जाए। मेरे ऐसा कहने पर पहले तो वे जरा झिझके, लेकिन मेरी विनम्रता देख कर धीरे से फर्श पर पालथी मारकर बैठ गए। उन्हें क्या मालूम कि मैं इस विनम्रता के सहारे ही इस देश में इतने दिनों तक जी रहा हूं। वर्ना मेरे पास इसके अलावा बचा ही क्या है।

बस तो अब तक मैं अच्छी तरह जान चुका था कि वे महाशय मेरे घर चोरी के नेक इरादे से ही घुसे थे। फिर भी बातों का सिलसिला चलाने के उद्देश्य से मैंने पूछा— 'क्यों भाई साहब, कैसे आना हुआ?"

और उनके उत्तर की राह देखे बिना मैंने ही पूछ लिया—' क्यों चोरी करने घुसे थे ना?'

इस पर उन्होंने जुबान से तो कुछ नहीं कहा लेकिन सकोचपूर्वक सिर हिलाकर मेरी बात स्वीकार कर ली।

मैंने जान बूझकर फिर पूछा —' कुछ मिला?'

उन्होंने हाथ हिला कर इशारे से कहा— कुछ नहीं।"

मैंने कहा—' कहां से मिलेगा श्रीमान्! पूरा सामान तो खोज खोज कर मैंने पहले ही बेच दिया। अब इस घर में खोजने पर मुझे ही कुछ नहीं मिलता है तो आपको कहां से मिलेगा। आप तो यह बताइए कि इस घर में क्या देख कर घुसे थे?'

पहली बार उसकी जुबान खुली। बोले—' बाहर से घर ठीकठाक दिखा तो अन्दर घुस आया था। मुझे क्या पता कि अन्दर की हालत

एकदम खाली डिब्बा खाली बोतल है।"

मैंने कहा—'अन्दर घुस आये यहां तक तो ठीक है लेकिन बाहर जाकर किसी को अन्दर की बात बताना नहीं समझ गए ना?"

—'क्यों साहब?"

—'क्योंकि यह हमारी पूरी समाज की इज्जत का सवाल है।"

— कौन सा समाज?' उसने पूछा।

—"आम आदमी का समाज। अन्दर के खोखलेपन को बाहरी सजावट से ढकने वाला समाज। चार जेबें सिलवाकर उसे हमेशा खाली रखने वाला समाज।" मैंने बताया

—"इसका मतलब हुआ आप आम आदमी हैं?" उन्होंने पूछा।

— हां मैं ही आम आदमी हूं।"

—"आम आदमी को इस तरह दिखावा करना जरूरी होता है क्या?'

"हां, बिल्कुल जरूरी होता है तभी वह आदमी कहलाता है। यह ऊपरी दिखावा न हो तो फिर हम गरीब, असभ्य और गन्दे कहलाएंगे, आदमी नहीं।" मैंने जवाब दिया।

अब उनकी झिझक पूरी तरह मिट गई थी। वे थोड़ा आराम से बैठते हुए किसी आत्मीयजन की तरह मुझसे बातें करने लगे थे। मेरा जवाब सुनकर वे कुछ सोच में पड़ गए। शायद मेरे मानदंड के अनुसार अपनी स्थिति का आकलन करने लग गए थे कि वे किस श्रेणी में आते हैं।

मैंने उनकी बातचीत का लहजा देखकर पूछा—"चोर होकर बातें तो बड़ी अच्छी कर लेते हो। कहां तक पढ़े लिखे हो?"

उसने कहा—'ग्रेजुएट हूं लेकिन डिग्री को चाटने से तो पेट भरता नहीं। और खाली डिग्री को कोई पूछता नहीं।"

यह कहकर अपनी जगह से उठते हुए बोले—'अच्छा अब मैं चलता हूं मुझे माफ कर देना गलती से इधर आ गया था।'

मैंने कहा—'लेकिन इस तरह खाली हाथ कैसे जा सकते हैं आप? मैं जानता हूं कोई भी व्यक्ति महज दिखावे के लिए या दिल बहलाने के लिए चोरी नहीं करता। जब वह किसी मजबूरी में फंस जाता है तभी वह

कदम उठाता है। अब आप इस घर मे आ ही गए हैं तो कुछ लेकर ही जाइए। आप खाली हाथ जाएगे तो मुझे भी अच्छा नही लगेगा।

लेकिन मेरे इस अनुरोध को उन्होने ठुकरा दिया, "चोर हैं तो क्या हुआ हमारे भी कुछ सिद्धान्त होते हैं। इस घर मे घुस पडा इसी से मैं शर्मिन्दा हू। अब आप मुझे और शर्मिन्दा मत कीजिए।'

'इसमे शर्मिन्दा करने जैसी कोई बात नही है चूकि मैं आपकी पीडा जानता और समझता हू, इसलिए कह रहा हू। खाली मत जाइए, कुछ लेकर जाइए।" मैंने आग्रह पूर्वक कहा।

—"मैंने आपसे कहा ना कि हमारे भी कुछ सिद्धान्त होते हैं। हम आपसे लोगो के यहा चोरी करते नही। हमारी और आपकी स्थिति मे कोई लम्बा अन्तर नही है। मैं मजबूर होकर इस पेशे मे आ गया हू लेकिन आपकी सहनशक्ति अभी बाकी है, इसलिए बाहरी दिखावा किए हुए हैं। और फिर आप कुछ लें जाने की जिद कर रहे हैं मैं ले जाना भी चाहू तो इस घर मे बचा ही क्या है?" चोर महाशय ने कहा।

मैंने कहा—'और तो कुछ नही। बस बाहर के दरवाजे पर टगा परदा बचा है। उसे ही ले जाइए आप।'

वे खिलखिला कर हस पडे और बोले—'फिर आम आदमी कैसे रह जाएगे आप? आपको भी गरीब और असभ्य कहलाना है क्या? यह परदा बाहर लगा है तो समझो भीतर का सारा नगापन ढका है। मेरी मानो और इसे ढका ही रहने दो। मैं इसे ले भी जाऊगा तो मेरे पास क्या है जिसे मैं ढाकूगा?"

थोडी देर के लिए वे बोलते बोलते रुक गए। शायद उनका गला भर आया था। फिर मुझे गहरी नजरो से एक बार देखा और बोले—'निश्चिन्त रहो मैं इस घर से खाली हाथ भी जाऊगा तो इस परदे को उघाडूगा नही, ढका रहने दूगा विश्वास रखो मुझ पर।'

यह कह कर चोर महाशय ने पास आकर मेरा कधा थपथपाया और बाहर चले गए।

और, मैं सोच रहा था कि आज वे परदा ले ही जाते तो अच्छा था। शायद यह परदा ही मेरी विवशता है, जो मुझे कही बाध कर रखती है।

परमानेंट गणमान्य

जिस तरह हर शहर मे कुछ स्थायी अध्यक्ष लेबलशुदा मुख्य अतिथि और स्थापित सचालक होते हैं उसी तरह नगर मे परमानेंट गणमान्य होते हैं। इन गणमान्यों की उपस्थिति के बिना कोई भी कायक्रम अपनी गरिमा गति को प्राप्त नही होता है।

आयोजन चाहे जैसा भी हो साहित्यिक हो अथवा सास्कृतिक, क्रीडा का हो धार्मिक हो या फिर सामाजिक सगाई हो या विवाह। आयोजक कोई भी हो लेकिन इन परमानेट गणमान्यो को आवश्यक रूप से आमत्रण भेजा जाता है। क्योकि किसी कायक्रम मे मुख्य अतिथि का जितना महत्व होता है लगभग उतना ही महत्व कायक्रम म शामिल दशको का भी होता है, अन्यथा मुख्य अतिथि कायक्रम मे अपनी उपस्थिति को महत्वहीन मान सकते हैं।

ऐसे परमानेट गणमान्या को दिए जाने वाले आमत्रणो मे यह नही देखा जाता कि आमत्रित करने वाला व्यक्ति इन गणमान्यो को पहचानता भी है या नही। इन गणमान्यो का तो उस विनीत को पहचानने का सवाल ही पदा नही होता है। गणमान्यो को आमत्रित करने का उद्देश्य मात्र यही होता है कि आयोजक लोगो को बता सके— समाज म हमारी भी प्रतिष्ठा है। हमें भुक्खड टाईप आदमी मत समझ लेना। हमारे यहा भी बडे बडे लोग आते हैं।"

समाज मे व्यक्ति की इस झूठी प्रतिष्ठा को बनाए रखने म इन परमानेंट गणमान्यो के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता। य गणमान्य जब किसी व्यक्ति के घर किसी आयोजन म पहुचते हैं तो गृहस्वामी अपने

रिश्तेदारो की ओर गर्वभरी नजरो से देखकर उन्हे अहसास कराता रहता है कि उसके यहा कितने प्रतिष्ठित व्यक्तियो का आना-जाना है।

मजे की बात यह होती है कि अपरिचित विनीतो के यहा जब य गणमान्य पहुचते हैं तो आपस मे ऐसे मिलते हैं मानो उनका जन्म जन्मातर का रिश्ता होता हो। दोनो को ही अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाए रखन के लिए दिखावा करना आवश्यक होता है। और केवल इन्ही की क्यो, आज पूरा समाज, सारा देश ही नकली दिखावे के दम पर चल रहा है। जो जितना गिरा हुआ है, उतनी ही अधिक इज्जत ओढने का दिखावा कर रहा है। चाहे वह मत्री हो, नेता हो अधिकारी हो। या फिर विभिन्न सामाजिक सगठनो पर लदा पदाधिकारी हो।

विनीत और आमन्त्रित गणमान्य का अपरिचय अन्य किसी पर प्रगट न हो जाए यह भी उनकी झूठी प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक होता है। इसके लिए कई आयोजक विशेष व्यवस्था करके रखते हैं। अन्यथा कल्पना कीजिए कोई गणमान्य पधारे और कार्यक्रम की बधाई आयोजक को न देकर अन्य लोगो के सामने ही दूसरो को देने लग, तो सार्वजनिक रूप स कैसी हसी उडेगी। इसीलिए आयोजक एक ऐसा मिडिलमेन पहले से तैयार रखता है जो लगभग सभी परमानेंट गणमान्यो को उनके पद पावर सहित पहचानता हो। मिडिलमन रहने का अर्थ यह कदापि नही है कि वह आजकल चर्चित मिडिलमेन की भाति कमीशन लेता होगा। वैसे वह मिडिलमेन अपनी इस जानकारी के गुण के आधार पर हा बिना किसी पद पावर के नगर का परमानेंट गणमान्य बना रहता है। शायद यही उसका कमीशन भी होता है। यह मिडिलमेन आन बिहाफ आफ" आयोजक आने वाले गणमान्यो का स्वागत करता है और अपनी बगल मे खडे अपरिचित विनीत स गणमान्य का नाम व अलकार के साथ परिचय कराता है। अर्थात वह मिडिलमेन दोनो की झूठी प्रतिष्ठा बनाय रखने मे पुल का काय करता है।

इन गणमान्यो को भी हमेशा यह भय बना रहता है कि उनकी झूठी प्रतिष्ठा बनी रहे और प्रतिष्ठा बने रहने के लिए आवश्यक है कि उन्ह विभिन्न समारोहो के आमन्त्रण मिलते रहन चाहिए। क्योकि उन्हें अपनी गरिमा व प्रतिष्ठा प्रदर्शित करने का दूसरा कोई सस्ता व टिका—

दिखाई नही पडता है। किसी भी समारोह का आमत्रण मिलने के पश्चात् उसम शामिल होना उनके लिए आवश्यक हो जाता है। क्योकि कई बार एसा होता है कि लगातार दो-तीन समारोहा म किसी गणमान्य के शामिल नही होने पर परमानेन्ट गणमान्य की सूची से उनका नाम कट जाने का भय हो जाता है। यही कारण है कि हर समारोह म व बराबर, ठस रहते हैं और अपनी परमानेंसी बनाए रखते हैं। कोई कोई गणमान्य तो इतने जो छुट्टे टाइप होते है कि समारोह स्थल पर मडप नही लग पाता है और वे पहले स ही आस पास मडराने लगते हैं।

गणमान्य व्यक्तियो की इस सूची मे परमानेंट रूप स ठस रहने क लिए मुख्य दो आधार हैं—एक आधार तो व्यक्ति की सामाजिक हैसियत व प्रतिष्ठा का होता है। ऐसे लोगो को व्यक्तिगत रूप से उनका सम्मान देखकर सूची म सम्मिलित रखा जाता है। दूसरा आधार होता है पद वाला। नगर मे कुछ पद होते हैं जिन्ह जन्मसिद्ध अधिकार के अतर्गत इस सूची मे परमानेट रूप से शामिल माना जाता है फिर चाह उस पद पर रहने वाला आदमी बेईमानचद हो या कमीशनदास। एक व्यक्ति के उस पद से हटने के बाद दूसरा जो भी व्यक्ति उस पद पर आता है वह भी आटोमटिक लिस्टेड गणमान्य व्यक्ति की सूची म शामिल हो जाता है। परमानेट सूची म व्यक्ति का सिर्फ नाम बदलता है। पद अगद के पाव की तरह स्थायी रूप से अकित रहता है।

नगर म परमानेंट गणमान्यो के साथ-साथ उनकी अप-टू-डेट लिस्ट बनाने वाले व्यक्ति भी गिने चुने होते हैं। एसी लिस्ट बनाना जिसम सही-सही सभी गणमान्य जो परमानेंट हो, आ जाए यह कुशलता हर किसी म नही हाती। और ना ही एक स्थायी सूची बनाकर ताजिन्दगी उस पर चला जा सकता है। क्योकि नियमानुसार पद वाले गणमान्यो का आना जाना लगा रहता है इसलिए हर आयोजन पर हर नई अप टू डेट लिस्ट बनाना आवश्यक होता है।

एक बार एसा ही धोखा हुआ। लापरवाही के कारण कह लो या समयाभाव के कारण। आयोजनकर्ता ने अप टू डेट लिस्ट नही बनवाई और सही लिस्ट बनाने वाले स सम्पर्क नही किया तथा पुरानी लिस्ट के आधार

पर ही गणमान्य व्यक्तियों को आमन्त्रित कर दिया। अब जो व्यक्ति उस लिस्ट को लेकर निमन्त्रण बाटने निकला तो उसे पता चला कि उसमे से कई गणमान्य जै-हरि हो चुके हैं।

हां, तो बात चल रही थी लिस्ट बनाने वालों की। नगर म ऐसे लोगो का महत्व आपस आप बढ जाता है जो गणमान्यो की लिस्ट बनाने की क्षमता रखते हैं। ऐसे लिस्ट बनाने वाले भी गणमान्यो की सूची मे शामिल माने जाते हैं क्योंकि जो आदमी लिस्ट बनवाएगा वह इतना कृतघ्न तो नही होगा कि लिस्ट बनाने वाले को ही आमन्त्रित न करें। प्रक्रिया यह होती है कि आयोजन की तिथि तय होते ही आयोजक लिस्ट बनाने वाले सज्जन के यहा चक्कर काटना शुरू कर देता है। कहता है—'भइया, जल्दी से लिस्ट बनाकर दे दो ताकि मैं निश्चिन्त हो जाऊ। मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं। मैं तो यह भी नही जानता कि कौन गणमान्य है। मैं तो बस आपके भरोसे ही हू।"

फिर कुछ देर सोचकर आयोजक कहता है—"और हा। उस दिन आप कही मत जाना, नही तो मैं मुश्किल मे पड जाऊगा। आने वाले गणमान्यो को तो आप ही अच्छी तरह पहचानते हो। मैंने तो उन्हे देखा भी नहीं है। आपको मौजूद रहकर सम्भालना है पूरा आयोजन।"

बाद म थोडी बहुत ना नुकुर कर या किसी काम का बहाना बना कर ऊपरी तौर से टालने की कोशिश करता है। अतत आयोजनकर्ता पर अहसान जताने वाले भाव मे मान ही जाता है। वास्तव म मान जाना उसकी मजबूरी है क्योंकि इस तरह उसका अपना नाम भी परमानेंट गणमान्यों की सूची मे बना रहता है और महत्व भी। ऐसे ही एक लिस्ट बनाने वाले मेरे परिचित ने तो बाकायदा एक फाइल बनाकर रखी है जिसका नाम रखा है— नगर के परमानेंट गणमान्यों की सूची। इसमे वह समय समय पर सविधान म हुए सशोधनो की तरह सशोधन करते जाता है औरउस अप टू डेट रखता है जब किसी कारणवश उसे सूची बनाकर नही देना होता है तो वह आयोजनकर्ता को पूरी फाइल ही पकडा देता है और कहता है—'छाट लो इस भीड मे अपनी पसन्द के चाहे जितने गणमान्य।" मानो गणमान्य न हुए, साग सब्जी हो गए। जितनी तादाद चाहिए, अच्छे

अच्छे देखकर छाट लो। ऐसी छटनी मे कई बार स्वगयाप्ता गणमान्य भी आयोजक की सूची मे शामिल हो जाते हैं।

इसलिए इस लिस्ट बनाने वाले के महत्व का अदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कई लिस्टेड गणमान्य विशेष तौर पर लिस्ट बनाने वाले सज्जन का ख्याल रखते हैं। क्योकि वे जानते हैं कि उनकी गणमान्यता इस लिस्टदाता के दम पर ही टिकी हुई है। होता यह है कि कई बार अलकरण छिन जाने या सामाजिक मान्यता मे अन्तर पडने पर उनकी वल्यू पद से उतरे नेताजी की तरह घटने लगती है लेकिन लिस्ट मे बने रहने पर उनकी थोडी बहुत मार्किट वैल्यू बनी रहती है। यह सब लिस्ट बनाने वाले पर ही निर्भर करता है लिस्ट बनाने वाले के साथ उसके सम्बन्ध कैसे हैं। इसी आधार पर तय होता है कि उसका नाम लिस्ट म रहेगा या नही। इन सब बातो की चिंता आयोजक को नहीं होती है। उस तो जो लिस्ट बनाकर दी जाती है। उसके आधार पर वह निमत्रण बटवा देता है। लिस्ट बनाने वाले गणमान्य से उस गिरावट वाले गणमान्यो के सम्बधो म थोडी बहुत दरार आई कि लिस्ट से उनका नाम गायब हुआ। पुराने अनुभवो के आधार पर ऐसे छूटे हुए गणमान्य का नाम लिस्ट म नहीं देख कर यदि किसी ने याद दिलाई भी तो लिस्ट बनाने वाला तत्काल वह देता है—'अब छोडो भी उसको शहर म कौन पूछ रहा है? मैं तो पिछले कई आयोजनो म देख रहा हू कि उसे कोई नहीं बुला रहा है। बेकार भीड बढ़ाने स क्या फायदा जिनसे मतलब है, उन्ही को बुलाओ ना।"

बस इसी एक झटके म समझ लो कि उसकी गणमान्यता समाप्त। नगर म ऐसे ही लोगो को 'चुने हुए गणमान्य' कहते हैं। आप भी देखिए अपने नगर म, नजर दौडाइए। आपको परमानेंट गणमान्य लिस्ट बनाने वाले गणमान्य और उनके साथ-साथ कुछ चुने हुए गणमान्य भी अवश्य ही मिल जाएगे। उन्हे पहचान रखिए और अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाए रखने का शौक है तो उनका समयानुकूल उपयोग कीजिए।

अम्पायर चुप रहे

उधर मियादाद ने आखिरी गेंद पर छक्का मारा और इधर नेताजी की आवाज का बम फटा—"लो सभालो इन छक्को को कही छक्के उड रहे हैं और कही छक्के छूट रहे। क्रिकेट और राजनीति सब एक बराबर हो गए हैं।

मैंने पलटकर देखा तो पडोस वाले नेताजी कमरे मे मौजूद थे। क्रिकेट मैच के उत्साह मे मुझे पता ही नही चल पाया कि कब से आकर बैठे हुए हैं। मैं उनकी बात सुनते ही समझ गया कि नेताजी एक्सपर्ट कमेटस देने को उत्सुक हैं तभी क्रिकेट के साथ राजनीति का सम्बन्ध जोड रहे है।

मैंने कहा – दद्दा आप कब आए, चाय ठडा क्या लेगे ? बताइए फिर थोडा डिटेल मे बताए तो समझ पडे। आखिर क्रिकेट के साथ राजनीति कैसे जुड गई ?

श्रोता मिलते ही नेताओ की वाणी मे जिस गभीरता और चितन का समावेश हो जाता है उसका अहसास मुझे नेताजी की बात सुनकर होने लगा। वे बोले—देखो, भारत की टीम अन्त तक जीत रही लगती थी ना, लेकिन मार दिया मियादाद ने आखिरी गेंद पर छक्का। किसी ने सोचा था कि ऐसा भी हो सकता है ? ऐसा ही इस देश की राजनीति मे हो रहा है। वी० पी० सिंह, विद्याचरण जैसे धाकड बेट्समैन रन आऊट हो जाते हैं। चदूलाल अच्छी बैटिंग कर रहे थे कि ताईवान सीमा पर लपक लिए गए। अरुण नेहरू, आरिफ मोहम्मद आगे बढकर हिट करने मे चूके और स्टम्प आऊट हो गए। प्रणव मुखर्जी जैसे अनुभवी लोग हिट आऊट हो जाते हैं तो कमलापति जैसे बैटसमैन क्लीन बोल्ड। श्यामाचरण जैसे आल राउडर को-

टीम मे शामिल नही किया जाता। सिद्धार्थशकर जैसे अनुभवी खिलाडी को टीम म शामिल किया जाता है तो उसे टवेल्यमैन बनाकर छोड दिया जाता है। अर्जुनसिंह पिछले दिना सटीक बालिग कर रह थे कि उनकी भी लाईन लेंग्थ बिगड गई और उनकी बॉल पर छक्के उडने लगे।

मैं नताजी को अभी तक राजनीतिक का ज्ञाता ही समझता था लेकिन उनका क्रिकेट ज्ञान देखकर आश्चयचकित रह गया। मैंने जिज्ञासा प्रगट की— हुजूर आपकी बाकी बाते तो समझ म आ गई लेकिन अर्जुनसिंह की लाईन लेंग्थ बिगडने की बात पल्ले नही पडी।"

नेताजी न अपनी दायी जाघ को खुजाते हुए पहलु बदला, मानो बालर पेट पर बाल रगडता हुआ ओवर विकेट से राउड दि विकेट आ गया हो। वे बोले—"फस्ट स्पेल मे अर्जुनसिंह ने चीफ मिनिस्टर गेट एण्ड तथा राज्यपाल गैलरी एण्ड से मेडन पर मेडन ओवर फेंके। विद्याचरण, सठी, माधवराव जसे धाकड बैटसमेन अपना विकेट बचाने के सकट म फस गए थे। बाल आऊट साईड दि आफ स्टम्प जाती दिखती और लेट स्विग होकर स्टम्प की ओर आ जाती। गुड लेग्थ स्पाट पर टप्पा खाती और बाउसर हो जाती। बल्लेबाज को डक करन के सिवाय कोई चारा नही था। सेकड स्पल म भी कबिनेट मिनिस्टर एण्ड तथा वाईस प्रेसीडेंट एण्ड से उन्होने अच्छी बालिग की शुरुआत की थी। बढिया याकर डाल रह थे लेकिन कुछ अम्पायर ऐस होते हैं जो अच्छा प्रदशन देख नहीं पाते हैं। एसे ही एक अम्पायर न अर्जुनसिंह की बॉल को नो बॉल करार देना शुरू कर दिया और बिगड गई उनकी लाईन लग्थ।

मैंन पूछा—लेकिन अर्जुनसिंह तो अभी अच्छी बॉलिंग डाल रह हैं। मुझ तो लाईन-लेंग्थ ठीक नजर आ रही है।

ननाजी पहलू बदलकर फिर ओवर दि विकेट आ गए। बोल—तुम्हारा कहना ठीक है। अम्पायर कोई एक ही तो हाता नही है। दूसरा अम्पायर भी होता है। पहले अम्पायर क निणय स टीम क साथियों ने काफी हो-हल्ला मचाया। दूसर अम्पायर क समक्ष अपील की। सभी बातों का अध्ययन कर दूसरे अम्पायर न पहले अम्पायर क निणय को रद्द कर दिया तो बॉलिग की लाईन फिर स सुधर गई।

मैंने मजा लेने की गरज से उन्हे कुरेदा—"दो अम्पायरो ने अलग अलग निर्णय दिया, आपकी नजर म वास्तविकता क्या है ?"

नेता ने लाला अमरनाथ की भाति एक्सपर्ट कमेंट देना शुरू किया—"असल मे सारा दोष अम्पायर का है। भई बॉलर जैसी बालिंग कर रहा है, उसे करने दो, क्यो टोका टाकी करना। बालर क्रीज म जाकर बालिंग करे या पिच मे घुसकर, अम्पायर को नो बाल कहने की कोई जरूरत नही है, क्योकि नो बॉल कहते ही उधर छक्का उड जाता है। कुछ अर्से पहले महाराष्ट्र के निलगेकर की बाल को अम्पायर ने नो बाल करार दिया था जा हिट पडी कि बाल स्टेडियम से बाहर। गनी खान चौधरी की बाल को भी एक अम्पायर ने वाइड करार दे दिया। ऐसी करारी हिट पडी कि बाल ही गुम गई। इन दिनो अम्पायरो से एन०टी० रामाराव, हगडे, राजेश पायलट बहुत परेशान हो रहे हैं।

मैंने क्रिकेट नियमो तथा उनमे होने वाले परिवर्तनो का हवाला देते हुए पूछा— ऐसे मे तो खेल का मजा जाता रहेगा। मेरे विचार से तो शीघ्र ही नियमो मे परिवर्तन होना चाहिए।'

नेताजी ने अपने सिर की टोपी उतार कर मुझे पकडाई और चाय मगाओ का आदेश देते हुए ड्रिंक के समय की भाति कुर्सी पर ही पसर गए।

फिर चाय की प्रतीक्षा मे अपना एक्सपर्ट कमेंट्स चालू रखते हुए बोले—वास्तव मे अब नियम म परिवर्तन करने की आवश्यकता नही है। दरअसल अम्पायर बदलने पडेंगे या फिर अम्पायरो के अधिकारो म कमी करनी पडेगी तभी क्रिकेट का सही मजा आएगा। अम्पायर को सीधे सीधे बोल्ड आऊट या कैच आऊट ही देखना चाहिए। बॉलर कैसी बाल करता है कितनी अन्दर घुस कर करता है थ्रो करता है या अडर आम करता है इस पर प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार अम्पायर का नही देना चाहिए और सच पूछो तो अम्पायरो की टीम म य दो चार अम्पायर ही इन बाता की ओर ध्यान देते हैं बाकी अम्पायर तो वैसे भी काफी लीनियेट हैं लेकिन इन दो-चार अम्पायरा के कारण ही सबकी लाईन लेग्थ बिगडती जा रही है। देखते हैं, यदि नियम नही बदले तो इन अम्पायरो को ही पेनल से

पड़ेगा।'

उधर मैदान मे पुरस्कार वितरण के पश्चात हो हल्ला खत्म हुआ और इधर नताजी न आज के दिन का खेल समाप्त कर जाने की तैयारी की।

लेकिन मैं सोच मे डूब गया कि कहीं ऐसा तो नहो कि भविष्य म क्रिकेट का खेल बिना अम्पायरो के ही खेला जाने लगे।

रामचन्द्र कह गए सिया से

हमारे मित्र हुकुम भाई की विशेषता यही है कि वे मजाक करते-करते व्यग्य कर जाते हैं और व्यग्य करते करते मजाक पर उतर जाते हैं। कल की बठक मे ऐसा ही हुआ। प्रतिदिन की तरह हम सभी मित्र बैठे थे। और हल्क मूड म गप सडाका लगा रहे थे। चर्चा का कोई निश्चित विषय नही था। व्यक्तिगत हाल चाल से देश के स्वास्थ्य पर और क्रिकेट मदान के छक्के स फिल्म इडस्ट्रीज के चरित्र तक तेजी से विषय बदलती गईगपबाजी चल रही थी।

अब ऐसा हो ही नही सकता कि फ्री-स्टाइल गपबाजी चल रही हो और टी० वी० की चर्चा न हो। टी० वी० तो अब भारतीय सस्कृति का हिस्सा बन गई है। टी०वी० सीरियलो पर बात चली तो रामायण की चर्चा होना स्वाभाविक था। चर्चा रामायण पर पहुची तो बहुत देर तक टिकी रही और यहीं आकर हुकुम भाई अपना हुनर बता गए।

उन्होंने बताया कि रामायण सीरियल देखते वक्त उन्होने एक बच्चे से राजा जनक की ओर इशारा करते हुए पूछा था--जानते हो इसे ? कौन हैं य ?

बच्चे ने जवाब दिया--य सीताजी के डैडी हैं और जो उनकी बगल म बैठी हैं वह उनकी मम्मी हैं।

हुकुम भाई न आग बताया--एक दिन बच्चे मुझमे पूछने लगे अकल, ये राम लक्ष्मण जगल म पढ़ने क्यों जाते हैं ? स्कूल म क्यो नही जाते ? मुझे बच्चा का समझाना पड़ा कि उस जमाने मे स्कूल नहीं होते थे। सभी बच्चे पढ़ाई करने गुरु के पास जाया करते थे।

पडेगा।'

उधर मैदान मे पुरस्कार वितरण के पश्चात् हो-
इधर नेताजी ने आज के दिन का खेल समाप्त कर जा-

लेकिन मैं सोच मे डूब गया कि कही ऐसा तो नहीं
का खेल बिना अम्पायरो के ही खेला जाने लगे।

है? संस्कृति के मूल पर चोट पहुचाने की कोई कार्यवाही तो नही हो रही है?

मैं समझता हू इस देश की अधिकाश माताए आज अपने बच्चो से 'मा' सम्बोधन सुनने से वचित हो गई हैं और मा से मम्मी हो जाने पर न तो उनमे मा का वात्सल्य उमडता है और ना ही मा की ममता। मात्र इस सम्बोधन परिवर्तन ने मां बेटे मे कितनी दूरी पैदा कर दी हैं, कभी ध्यान देकर देखिए तो पता चल जाएगा। मा-बेटे के रिश्ते मे जहा आत्मीयता के मध्य किसी चीज की दूरी नही होती थी वहा अब औपचारिकताओ की दीवार खडी हो गई है। मम्मी बार बार अपने बेटे को 'प्लीज' कहकर सम्बोधित करती है और बेटा हर बार 'थैंक्यू' कहकर औपचारिकता का निर्वाह करता है। धूल से सना बालक दौडता हुआ आकर मा से लिपट नही पडता है, ना ही मा बच्चे को गोद मे उठाकर जी भरकर कलेजे स लगाती है। बच्चे को मा के पास आने के लिए पूछना पडता है—'मे आई कम इन मम्मी?'

नई पीढ़ी का सोच देखिए। गुरुजी को पढ़ाने घर आना चाहिए। आ भी रहे हैं और पढा भी रहे हैं। इधर बालक की झोली मे केवल विद्या ही भरी जा रही है। कुछ समय बाद विद्या देने वाला वह गुरुजी नही रह जाता, वरन् महीना पाने वाला नौकर हो जाता है, जिसे निश्चित समय पर पहुच कर अपना काय पूरा कर देता है और महीना पूरा होने पर नौकरी लेकर निश्चित हो जाता है।

मुझे तो कभी-कभी एसा लगता है जैसे इस देश की वैभवशाली संस्कृति को बडे ही योजना-बद्ध ढग से नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। टी० वी० पर वयस्क फिल्म भी दिखाई जाने वाली हैं। ठीक भी है। जहा पाश्चात्य संस्कृति इतनी समाहित हो गई हो कि मम्मी डैडी बच्चा के समक्ष एक-दूसरे की कमर में हाथ डालकर चलते हो वहा पूरा परिवार एक साथ बैठकर वयस्क फिल्मे क्यो नहीं देख सकेगा। वयस्क फिल्मों म यही कोई दो चार चुम्बन के दृश्य ही तो होंगे या अधिक-स-अधिक बिकनी पहनी महिलाए स्वीमिंग पुल म नहा रही होंगी। बच्चे तो रोज अपने इद गिद यह सब देखने के आदी हो गए हैं। सरकार बिना वजह की सजा पाल रही

बच्चो ने फिर सवाल किया—दिखने में तो राम लक्ष्मण जैसे वाले लगते हैं फिर भी ये लोग ऐसे खुले में पढ़ने क्यो जाते हैं? गुरुजी को ट्यूशन पढ़ाने घर पर क्या नही बुला लेते?

हुकुम भाई ने बताया कि उन्होंने बच्चो को समझाया—गुरुजनो की उस जमाने में बहुत इज्जत थी। उन्हे घर पर नही बुलाया जाता था बल्कि बच्चो को पढ़ने के लिए गुरुजी के आश्रम मे भेजा जाता था।

बच्चो ने सवाल किया—इसका मतलब हुआ, आजकल जो गुरुजी घर पर पढ़ाने आते हैं उनकी इज्जत नही है अंकल?

हुकुम भाई ने बताया कि वे उन बच्चो की तर्कसंगत बुद्धि से काफी प्रभावित हुए। उन्होने बच्चो को फिर समझाया—देखो गुरुजी की इज्जत तो आजकल भी है लेकिन जसे-जैसे जमाना बदल रहा है उसी के अनुसार बातें भी बदलती जाती हैं।

इसी तरह की कुछ बाते हुकुम भाई ने बताइ और थोडी देर म उठकर चले गए लेकिन हसी मजाक के लहजे म कही गई बातें कलजे मे चुभकर रह गइ। जसे काई नुकीली पिन चुभो कर निकाल ले और टीस अन्दर रह जाए। कुछ इसी तरह की पीड़ा से मन भर गया।

मैं सोचने लगा कि उन बच्चो की बातो म कितनी सपाट बयानी है। जैसे आज के मम्मी डैडी वैसे राम सीता के मम्मी डडी। इन बालको के मन मे किस तरह के विचार पल रहे हैं, इसके लिए जिम्मेदार कौन है? हमारी महान परम्परा रही है कि पिछले सैकडो वर्षों स भारतीय संस्कृति और संस्कार आने वाली पीढी को सुरक्षित सौंपे जाते हैं। क्या वतमान म भी यह सिलसिला बना हुआ है? इन्ही सब बातो पर दिमाग उलझ कर रह गया।

मुझे एक विद्वान की कही गई बातो का स्मरण हो आया—'ततीय विश्व म अब तोप बदूको से या किसी हथियारो से किसी देश को गुलाम करने की जरूरत नही रह गई है। यदि किसी देश को वश मे रखना है तो वहा की संस्कृति को नष्ट कर दो और उन्हें मानसिक गुलामी की जिंदगी जीने पर मजबूर कर दो।'

मैं सोचने लगा—क्या ऐसी ही कोई साजिश इस देश म रची जा रही

है ? सस्कृति के मूल पर चोट पहुचाने की कोई कार्यवाही तो नही हो रही है ?

मैं समझता हू इस देश की अधिकाश माताए आज अपने बच्चो से 'मां' सम्बोधन सुनने से वचित हो गई हैं और मा से मम्मी हो जाने पर न तो उनमे मा का वात्सल्य उमडता है और ना ही मा की ममता। मात्र इस सम्बोधन परिवर्तन ने मा बेटे मे कितनी दूरी पैदा कर दी हैं, कभी ध्यान देकर देखिए तो पता चल जाएगा। मा बेटे के रिश्ते मे जहा आत्मीयता के मध्य किसी चीज की दूरी नही होती थी वहा अब औपचारिकताओ की दीवार खडी हो गई है। मम्मी बार बार अपने बेटे को 'प्लीज' कहकर सम्बोधित करती है और बेटा हर बार 'थैंक्यू' कहकर औपचारिकता का निर्वाह करता है। धूल स सना बालक दौडता हुआ आकर मा से लिपट नही पडता है, ना ही मा बच्चे को गोद मे उठाकर जी भरकर कलेजे से लगाती है। बच्चे को मा के पास आने के लिए पूछना पडता है—'मे आई कम इन मम्मी ?"

नई पीढी का सोच देखिए। गुरुजी को पढाने घर आना चाहिए। आ भी रहे हैं और पढा भी रहे हैं। इधर बालक की झोली मे केवल विद्या ही भरी जा रही है। कुछ समय बाद विद्या देने वाला वह गुरुजी नहीं रह जाता, वरन् महीना पाने वाला नौकर हो जाता है, जिसे निश्चित समय पर पहुच कर अपना काय पूरा कर देना है और महीना पूरा होने पर नौकरी लेकर निश्चित हो जाना है।

मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे इस देश की वैभवशाली सस्कृति को बडे ही योजना-बद्ध ढग से नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। टी० वी० पर वयस्क फिल्म भी दिखाई जाने वाली हैं। ठीक भी है। जहा पाश्चात्य सस्कृति इतनी समाहित हो गई हो कि मम्मी डैडी बच्चो के समक्ष एक-दूसरे की कमर मे हाथ डालकर चलने हो, वहा पूरा परिवार एक साथ बैठकर वयस्क फिल्मे क्यो नही देख सकेगा। वयस्क फिल्मो म यही कोई दो चार चुम्बन के दृश्य ही तो होगे या अधिक स-अधिक बिकनी पहनी महिलाए स्वीमिंग पुल म नहा रही होंगी। बच्चे तो रोज अपने इद f यह सब देखने के आदी हो गए हैं। सरकार बिना वजह की

अधिकारी शासन का बचाव करते हुए बोले—"बिकाज, इन प्रजेट हमारे शासकीय कमचारी हिन्दी म वेल वस्ड नहीं हैं उन्ह सही ढग से निर्देश समझाने के लिए अंग्रेजी का सहारा लना ही पड़ेगा। दयर इज नो अदर आल्टरनेटिव ऐसा करते हुए ही हम हिन्दी को धीरे धीरे स्टबलिश कर पायेंगे।'

हिन्दी साहित्यकार ने जरा व्यग्यात्मक लहजे म कहा— ठीक उसी तरह ना जिस भांति फार्टी ईयस म हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा दने की कोशिश करते चले आ रहे हैं अरे भई जो हिन्दी जैसी सरल भाषा को नहीं समझता, वह आपकी कठिन अंग्रेजी भाषा को कसे समझ लगा ?'

अधिकारी थोड़ा मुस्कराते हुए बोले— आपको सरकारी काम काज से वास्ता नही पडता इसलिए ऐसी दलील दे रहे हैं। अंग्रेजी क सरकारी सकु लर भेजना और अंग्रेजी मे गवनमट वक्स करना तो एक रुटीन प्रोसेस है। ना तो कोई सकु लर पढता है और ना उस इपलीमेंट करता है। वो तो भला हो अंग्रेजो का जिन्होंने गवनमट वक्स क लिए हर काम का ढाचा बना दिया है। हम कमचारी तो बस उसी प्राफार्मा म काय करत चल आ रहे हैं। अब उन सब प्रोफार्मा को नय सिरे स बदल कर हिन्दी म करन की महनत न तो हम कर सकत हैं और ना ही आप कर सकते हैं। इसम रिस्क भी बढ जाएगा। अभी तो यह हाल है कि जो कमचारी अंग्रेजी नहीं जानता वह भी पुराने ढाचे को देखकर काम निकाल लता है। और मत्रीगण भी अंग्रेजी म कागज पुट अप होने पर ज्यादा ना नुकुर नहीं करत। अपनी समझदारी की पोल खुल जान के भय स अंग्रेजी के कागजो म चुपचाप सिग्नेचर कर देते हैं।

मत्री महोदय, अधिकारी की स्पष्टवादिता से थोड़ा नाराज होते हुए बोले—'यह कहना बिल्कुल गलत है कि हम लोग अंग्रेजी नही समझते हैं हम इंग्लिश अच्छी तरह स अडर स्टैंजत हैं और फिर हम इंग्लिश समझत हैं अथवा नहीं यह मुख्य बात नहीं है। प्रमुख यह है कि हम सही ढग स काम चला लेते हैं या नहीं। देख लो, फार्टी ईयस हो गए चला रह हैं कि नहीं ? हम तो जानबूझकर इंग्लिश म काम करते हैं क्योंकि इससे हिन्दी भाषा की अपेक्षा रोब अधिक पड़ता है। रही बात हिन्दी

मे कामकाज करने का इस्तेमाल अंग्रेजी में शुरू करने की, तो हमें इस पर खुश होना चाहिए कि देर से ही सही आखिर शासन ने इस दिशा में सोचने की शुरूआत तो की है। अंग्रेजी में ही सही, हिन्दी की स्थापना के लिए गंभीर पहल तो प्रारम्भ हुई है। हमें महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उद्देश्य की पवित्रता को ध्यान में रखना होगा, साधनों की पवित्रता तो गौण बात है। इस पहल के साथ ही मैं हिन्दी के साहित्यकार बन्धुओं से भी रिक्वेस्ट करूंगा कि वे हिंदी के शब्दकोश को रिवाईज करें तथा इंग्लिश के प्रचलित शब्दों का हिन्दी नामकरण देने का प्रोग्राम प्रारम्भ करें, ताकि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी भाषा का सही प्रचलन हो सके।"

मंत्री जी की बात से हिन्दी साहित्यकार एकदम हड़बड़ा उठे। वरिष्ठ स्थिति स्पष्ट करते हुए बोले—"अभी सरकार अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा स्थापित करने की मांग। हम भी नहीं कर रहे हैं। हमारे वरिष्ठ साहित्यकार बन्धु अंग्रेजी के पर्यायवाची हिन्दी शब्दों के अन्वेषण में लगे हुए हैं। उन कुछ पर्यायवाची शब्द घोषित भी हुए हैं, किन्तु मूलतः हम स्वयं असंतुष्ट हैं। उन पर्यायवाची शब्दों से भी इंग्लिश के प्रचलित शब्द ही भले हैं। अभी तो आप ऐसे ही चलने दीजिए। इंग्लिश इंस्ट्रक्शन के अनुसार हिन्दी में काम करने का आप सरकारी आदेश दे दीजिए। हम इंग्लिश में बड़े बड़े आर्टिकल लिखकर हिन्दी पाठकों को हिन्दी का महत्व समझाने की कोशिश करते रहेंगे तथा वे इंग्लिश पढ़कर, आप साहित्यकार व जनता के बीच मीडिया का कार्य करते हुए प्रजातांत्रिक व्यवस्था मजबूत बनाये रखेंगे।"

इस गम्भीर चर्चा की चिन्तन प्रक्रिया में डूबे मंत्री महोदय ने दीर्घ निःश्वास छोड़कर विचार गोष्ठी का समापन करते हुए कहा—"आज हिन्दी दिवस के महत्वपूर्ण अवसर पर आयोजित इस सेमिनार में सभी मनीषियों ने हिंदी की सम्मानजनक स्थापना के लिए जो चिन्तन करते हुए गम्भीर एवं उपयुक्त विचार व्यक्त किया है। उससे इस बात का पता चलता है कि सबके मन में हिन्दी के डिवलपमेंट के प्रति तीव्र इच्छा है। हिन्दी के सदृश दिवान एवं सम्मान की भावना है। जो हिंदी भाषा के

फ्यूचर की गुड साइन है। मैं गवनमेंट की ओर से यह विश्वास दिलाता हूँ कि आज इस सेमिनार मे जो इम्पार्टेन्ट पाइन्टस आय हैं उनका दढता पूर्वक इम्लीमेन्टेशन किया जायगा एण्ड इन फ्यूचर हिन्दी दिवस के अवसर पर हम पुन इसी भाति बैठकर इस सम्बन्ध मे हुए डेव्हलपमेन्ट पर डिस्कस करेंगे और भविष्य के प्रोग्राम निर्धारित करेंगे।' इसके पश्चात सभी लोगों ने मिलकर हिन्दी के सम्मान म नारे लगाये—

हिन्दी अमर हो।

हिन्दी 'राज भाषा बनाई जाय।

हिन्दी बोलेंगे, पढेंगे और लिखेग।

जय हिन्दी जय नागरी।

सभा समाप्त हो गई। हिन्दी भाषा की सम्मानजनक स्थापना को उस सकल्पबद्ध भीड से घबराकर मैं एक ओर दौड पडा। राह म एक कृश काया ने अपनी क्षीण आवाज मे पुकार कर मुझे पास बुलाया। पास पहुच कर मैंने प्रश्न किया—"तुम्हे पहचाना नही कौन हो तुम ?"

—"मैं हिन्दी भाषा हू।" वृद्धा ने जवाब दिया।

उत्तर पाकर मैं जरा चौंका। मैंन पूछा — क्या चाहती हो ?"

वह बोली—' दुर्बलता ज्यादा आ गई है। इसलिए विचार गोष्ठी तक पहुच नही पाई। चर्चा पहले ही खतम हो गइ। मेरा एक निवेदन है, अगले वष जब ऐसी ही गोष्ठी हो तो। मेरी ओर से एक अनुराध अवश्य कर देना। इन चालीस वर्षों मे मैं वैस ही काफी दुर्बल हा चुकी हू। य सब मेरी चिन्ता करके क्यों मुझे अहसाना के अतिरिक्त बोझ स लादे जा रहे हैं। मुझे ऐसा ही रहने दें। मैं किसी भाति घिसट घिसट कर चल लूगी। मुझे सहारा देन के लिए हर शहर हर गाव म राह चलत लोग, लोरी गाती माताए खेतों म काम करते किसान मिल जात हैं। मुझे न तो अग्रजी की वैशाखी की जरूरत है, और ना ही शासन साहित्यकार पत्रकार व बुद्धिजीवी क कन्धों की। मैं इतने वर्षों स पग पग, डगर डगर घूम रही हू अपनी सही जगह आप ही पहुच जाऊगी। वहां पहुचन से मुझे कोइ रोक भी नहीं पाएगा। बस य सब मुझ पर रहम करें और अहसान करना बन्द कर

दें।"

यह कहते हुए वह कृश काया मेरा प्रत्युत्तर सुने बिना ही आगे बढ गई। मैं खडा-खडा सोचता रहा—"वास्तव मे बैसाखियों की जरूरत किसे है—हिन्दी भाषा को या हमे?"

डॉग शो उर्फ कुत्ता प्रदर्शनी

अपने यहां के लोगों की बड़ी खराब आदत यह है कि किसी भी घटना को, किसी भी संदर्भ से कहीं भी जोड़ देते हैं और बैठे-बैठे चटखारे लेते रहते हैं। भले ही उन घटनाओं का आपस में कहीं कोई रिश्ता हो या न हो। दरअसल इस बार हुआ यह कि उधर राजधानी में राजनीतिक उथल-पुथल मची और नेताओं का जमघट लगना शुरू हुआ, इसी दौरान इधर अपने शहर में कुछ युवा प्रतिभाओं ने मिलकर 'डाग शो' आयोजन कर डाला। अब इसे केवल संयोग ही मानना चाहिए था। भला आप ही बताइए इन दोनों घटनाओं में कहां सामंजस्य है? दोनों अलग अलग स्थितियां और अलग अलग कार्यक्रम हैं लेकिन इन सिरफिरों को कौन समझाए जो आपस में दोनों घटनाओं की तुलना करने लगते हैं। ऐसे बद दिमाग लोगों को तो उनके हाल पर छोड़ देना ही बुद्धिमानी है। वे फिजूल की बातों पर अपना सिर खपाते रहें। आइए हम तो युवा प्रतिभाओं के इस रचनात्मक कार्यक्रम का आनन्द उठाएं।

नगर के युवा प्रतिभाओं ने मिलकर पिछले दिनों अपना एक संगठन बना लिया था और लगातार किसी रचनात्मक कार्यक्रम के आयोजन की तलाश में थे और जैसा कि युवा मानसिकता होती है, वे इसमें कुछ नयापन भी चाहते थे जो चर्चा का केन्द्र बने। इन प्रतिभाओं को अचानक यह सूझा कि कुत्तों के मामले में उनका नगर अब काफी विकसित हो गया है। वैसे चोरी डकैती हत्या बलात्कार आदि के मामले में तो नगर पहले ही आत्मनिर्भर हो चुका था लेकिन जगह-जगह दुम हिलाने और मुंह मारने वाले देशी कुत्तों की वजह से इनके नगर को अन्य नगरों को

तुलना मे सिर नीचा करके चलना पडता था और खामो खा नगर की छवि धमिल हुई जा रही थी। यह जानकारी मिलने पर कि अब अच्छी नस्ल के समझदार कुत्तो की काफी सख्या नगर मे हो गई है। युवा प्रतिभाओ को लगा कि नगर को गौरवान्वित करने का सही अवसर आ पहुचा है और उन्होने तत्काल ही डॉग शो का आयोजन करने की घोषणा कर दी।

युवको की कार्यकारिणी समिति मे इस रचनात्मक कार्यक्रम को मूतरूप देने पर विचार चल रहा था। कुछ मद-बुद्धि युवको न हिन्दी के प्रति श्रद्धा भाव दर्शाते हुए सुझाव दिया कि आयोजन का नाम 'कुत्ता प्रदर्शनी' रखा जाए। एसे कम अक्ल युवको को वरिष्ठ साथियो से तगडी झिडकी सुनने को मिली। ऐसा सुझाव देन वाले व बेचारे युवक सडको पर घूमन और जगह जगह मुह मारने वाले कुत्तो तथा एक ही दरवाजे पर दुम हिलान वाल डाग म कोई फर्क नही समझ रहे थे। ऐसे म स्वाभाविक था कि उन्ह डाट सुननी पडती।

कई दिनो के प्रचार प्रसार तथा भरपूर तैयारी के पश्चात् डाग शो की अन्तिम तिथि आ पहुची। डॉग शो का आकर्षण बडा जबरदस्त था। बहुत से मालिक और मालकिन अपन अपने प्यारे डाग को प्रदर्शित करने लाए थे। अच्छी तरह से सजे सवरे धुले हुए, गदगी से दूर साफ सुथरे डाग प्रदशनी म पधारे थ। कोई कोई डॉग तो अपने मालिक से भी ज्यादा साफ-सुथरा दिखाई दे रहा था।

प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई। प्रत्यक डाग को उसके मालिक के साथ सामन बुलाया गया। डाग की हल्थ हाइट सफाई, मैनर्स पर ध्यान दिया गया। डाग की नस्ल पर निर्णायको द्वारा विशेष ध्यान रखा जा रहा था, क्योकि प्रश्न प्रदशन का ही नही वरन उनके सस्कारो का भी था। इतना सब होन के पश्चात प्रतियोगिता का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ जिसम डॉग को अपन मालिक द्वारा दिए गए निर्देशो का सही ढग से पालन करना था।

लगभग सभी डाग काफी सधे हुए थे। मालिक जैसा आदेश अनुशासित ढग से उनका पालन कर रहे थे। उठने को कहन पर बैठन का आदेश मिलन पर तुरन्त बैठ जात थे। आदेश मिलने

पैरो पर खडे होकर डास दिखाते और अगला पैर बढ़ा कर हाथ मिलाते थे। भौंकने का आदेश मिलने पर पूरी ताकत से भौंकने लगते थे और जब तक कोई नया आदेश नहीं मिलता तब तक दुम हिलात खडे रहते थे।

शो देखने आए दो युवको का ध्यान शायद प्रदशनी की आर नही था। वे अपनी चर्चाओ म ही मशगूल थे। एक युवक दूसरे से कह रहा था—"आजकल नेतागिरी मे चमचो की सख्या बढती जा रही है और य नता चमचो को जैसा चाहे वैसा नचाते रहते हैं।"

वैसे इस डॉग शो मे कुछ डाग ऐसे भी आ गए थे जो अभी ठीक से अपने मालिको के इशारे को सीख नही पाए थे। ऐसे डॉग अपन मालिको की हसी उडवा रहे थे। *मालिक न इशारा किया डास के लिए ता व भौंकने* लगे। मालिक ने हाथ मिलाने का आदेश दिया तो डाग ने पिछली एक टाग उठा दी। प्रदशनी मे कुछ खुद्दार किस्म के डॉग भी आ गए थे जा सार्वजनिक रूप से दुम हिलाने मे शर्मा रहे थे।

उधर दूसरा युवक पहले युवक से सहमत होता हुआ कह रहा था—तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है लेकिन कुछ चमचे एसे भी देखने म आत हैं जो चमचागिरी मे मिसफिट हो जात हैं।"

डॉग शो की व्यवस्था इतनी अच्छी थी कि सडकों पर घूमन वाले लावारिस कुत्तो को वहा घुसने नही दिया गया था। वैस वे कुत्ते वहा पहुचने की भरसक कोशिश कर रहे थे और प्रदशनी स्थल के बाहर खड हुए भौंक रहे थे। प्रदशनी की व्यवस्था मे तैनात वालेन्टियरो ने उन्हें लाठी चालन *के साथ दूर तक बार-बार खदेडकर भगाया। चसे कभी कभी* उनका भौंकना सुनकर अदर प्रदशनी वाले डाग भी भौंकने लगत थ लेकिन मालिक की चढी हुई आंख देख सहम कर चुप हो जाते थे। वे समझ जात थ कि अभी भौंकने का सही समय नही आया है।

प्रतियोगिता के पश्चात अच्छी साफ सफाई, *बढ़िया नस्ल, आदेशा का* आस्थापूर्ण ढग से पालन करने वाले डाग पुरस्कृत किए गए। पुरस्कार के साथ ही उन्ह वरीयता क्रम भी दिया गया। जो डाग पुरस्कृत हुए थ उनके [illegible] खुशी देखते ही बनती थी।

प्रदर्शनी से लौटते वक्त एक पान दुकान पर ऊची आवाज म बज रहे रेडियो की ओर मेरा ध्यान गया। समाचार आ रहा था—"राजधानी मे नए मत्रियो का चुनाव कर लिया गया है और वे सभी कुछ दर पूव शपथ ग्रहण कर चुके हैं।"

लेखक के खेद व अभिवादन सहित

प्रिय सम्पादक जी,

आज की डाक से आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने वसन्त अंक के लिए रचना भेजने का आग्रह किया है। यकीन मानिए, आपका पत्र मिलने पर ही मुझे अहसास हुआ कि वसन्त आने वाला है। पत्र न मिलता तो हो सकता है वसन्त आकर चला भी जाता और हम पता ही नहीं चलता।

कैसे मशीनी वातावरण में जी रहे हैं हम लोग। ऋतुराज वसन्त के आगमन का भी नहीं जान पाते हैं। वसन्त क्या है? एक अहसास का नाम ही तो है वसन्त। जो अपने आगमन के साथ ही उत्साह की बाढ़ और उमंगों की लहर लेकर आता है। भिगो जाता है तन और मन। प्रफुल्लित कर देता है अंग अंग। जी करता है खूब हंसे, खूब खेलें कूदें और बतियाएं प्रकृति में चारों ओर बिखरी रंगीनी को समेट कर मन का रंगीन बनाए। मन में आकांक्षाओं के अनार फूटते रहें और उसके उन्मुक्त दानों सा दिमाग ऊंचाइयों से बातें करता रहे। लेकिन आप ही देख लीजिए किस तरह और कहां खो गया है यह अहसास। यांत्रिकता की शृंखला ने कहां ले जाकर दफन कर दिया है वसन्त की इन तमाम संवेदनाओं को। हम आपको पता ही नहीं चलता कि वसन्त कब आता है और कब चला जाता है। आकर क्या करता है कहां ठहरता है? किनके पास आता है और किनसे बतियाता है?

अब आपने पत्र लिखकर बरबस ही याद दिला दी ऋतुराज वसन्त की। केवल याद ही नहीं वरन वसन्त पर अपनी एक रचना शीघ्र भेजने की ... भी लाद दी है। सच कहूं, यह बात मेरे लिए बवाले जान हो गई

है। आपने बड़े घम सकट मे डाल दिया है मुझे। पिछले कुछ समय स एसा सयाग बना था कि आप मुझे सक्रिय और सृजनशील रचनाकार मान बैठे थे। साधारण मानवीय स्वभाव के कारण मैं भी इस गलतफहमी को दूर करने का इच्छुक नहीं था। किसी तरह कुछ लिखकर, छपकर मे अब तक इस गलतफहमी को बनाए रखने म सफल हो रहा था। इस अस्तित्व रक्षा के लिए पिछल दिना मुझे काफी सघप भी करना पडा है लेकिन इस बार बसन्त अक हेतु आपकी रचना की माग न मुझे पस्त कर दिया है। मेरे समस्त प्रयासो तथा सघर्षों को अस्तित्वहीन करके रख दिया। है

मेरी इस असमथता की नींव मे जो बातें हैं मैं उनका खुलासा भी कर देना चाहता हू, ताकि आप भी समझ लें कि वे बाते कितनी वजनदार थी जिन्होन गलतफहमी की हल्की दीवार को आसानी से ढहा कर रख दिया। वास्तव में सबसे अहम बात है—आपकी शत। आपने बसन्त अक के लिए यह बधन कर दिया कि रचनाए वसन्त से वसन्त की स्थितियो से ही सम्बधित होनी चाहिए। मेरी नजर मे यह शर्त राजा जनक क सीता स्वयवर और राजा द्रुपद के द्रौपदी स्वयवर की शत से भी अधिक जटिल शत है। अब देखिए ना, आप लोग दीपावली विशेषाक निकालत है होली विशेषाक निकालते हैं, क्या कभी यह बधन रखत हैं कि रचनाए होली दिवाली से ही सम्बधित होनी चाहिए? फिर वसन्त अक म ही वज्रपात क्यो? जनरल में चलने देते बसन्त को भी। दिवाली होली विशेषाको की तरह बसन्त विशेषाक नाम देकर चाहे जसी रचना प्रकाशित कर लेत। मैं भी अपने साथी लेखको की तरह कोई पुरानी, दूसरी जगह छपी रचना ठेलकर अपना अस्तित्व को बचाए रखता लेकिन आपक बधन ने मरी नकाब उतरवा ही दी।

आपने पिछले वर्षों मे जो दो-चार बसन्त अक निकाले हैं उनम तो किसी तरह रचनाए पाकर मैंने बात बना ली थी। बिना वजह लाल-पलाश, पीली सरसा गेंहू की सुनहरी बालिया, जूही की कली कोयल आदि आदि का सदम ठूस ठास कर आपको समझा दिया था कि रचना बसन्त ऋतु के सन्भ म ही लिखी गई है। अब आप ही बताइए, बार-बार प्रतीको का कितनी जगह और कितनी बार प्रयोग किया जा सकता है? वह भी इस

स्थिति मे जब कि इनके दशन तो हम होते ही नही हैं। किसी किस्म की प्रफुल्लता, अल्हडता और उमग मन मे तो छाती नही है बस केवल इसलिए कि वसत के सदभ म इन प्रतीको का उल्लेख किए बिना रचना म यथाथ का अहसास नही होगा, पिछली रचनाओ म इन सबका मनमाना उपयोग मैं कर चुका हू। साहित्य के बारे म आपसे अब कुछ छिपाना बेकार है। भोगे हुए यथाथ वास्तविकता से साक्षात्कार, सही अध्ययन के अभाव म अच्छे साहित्य का सजन सभव नही है। केवल वाक्यो के चमत्कार और तथ्यहीन बहस के द्वारा रची हुई रचना के आधार पर एक दो बार तो भ्रम मे रखा जा सकता है लेकिन आपका तगादा हर वर्ष आकर खडा हो जाता है। आखिर इन्ही सब बातो को घुमा घुमाकर कितनी बार लिखा जाए? आखिर यह कब तक?

पिछले वष भी जब आपने वसत अक के लिए रचना मगवाई थी तो मैं ऐसी ही परेशनी मे पडा था और यह पत्र आपको भेजने की मानसिकता मैंने बना ली थी लकिन भ्रम का नाम ही जीवन है। कुछ भ्रम हम एसे पाल लेते हैं जिनके दम पर पूरी जिंदगी राजी खुशी काट लेत हैं। एसा ही एक भ्रम मेरे लेखक होने का आपको हो गया है। आप सोचते होग कि मैं एक ही स्थिति पर बार बार रचना लिख लेता हू। पिछले वर्षों मे काफी प्रयत्न करके मैंने आपका यह भ्रम टूटने स बचाए रखा है इसके लिए मैंने नकारात्मक लेखन का भी सहारा लिया है। पिछले दो वर्षों से वसन्त अक मे प्रकाशित मरी रचनाओ को यदि आप देखेंगे तो स्वय इस नकारात्मक लखन को समझ जाएग और केवल मैं ही क्यो, वसत अक लगभग सभी लेखको न वसा ही करक अपनी प्रतिष्ठा को बचाए रखा है। शायद अन्य लेखको के समक्ष भी मरी तरह अस्तित्व रक्षा का सकट मौजूद है।

नकारात्मक लेखक से मेरा तात्पय यह है कि जिस स्थिति त्यौहार पर्व का आप उल्लेख करें उसे तथा उसके अस्तित्व को ही हम नकार दें। जैसे कि आपन वसत ऋतु से सम्बधित सदर्भों को समाहित करते हुए रचना की माग की। हमन अपनी आक्रोशपूण रचना म लिखा—कहा है वसत? इस जिन्दगी, इस माहौल इस व्यवस्था इस यान्त्रिकता म कहा दिखता है वसत? हम अपन चारा तरफ शहर गाव, महानगर खत-

खलिहान, बाग-बगीचे मे नजर दौडाते हैं, कही भी वसन्त ऋतु का अहसास दिखाई नही पडता है। हम किशोर बालक से युवती से (अल्हड युवती तो किसे कहते हैं इसका कोई उदाहरण मुझे अब तक दिखाई नहीं पडता है), किसानों स शिक्षक, मजदूर, नौकरीपेशा, व्यापारी सबसे पूछते हैं—वसन्त को कही देखा है ? सबका यही जवाब होता है—यह वसन्त कौन है ? कैसी होती है वसन्त ऋतु ? बस ऐसे ही नकारात्मक सदर्भो को भर कर और नकारा आश्वास दिखाकर हम लेखको ने वसन्त ऋतु पर आधारित वसन्त अक की रचनाए बनाकर आपको भेज दी और मन मे तसल्ली कर ली कि हमने तेज तवर वाली रचना मे वसन्त का स्वागत किया है।

परशानी की बात तो यह है कि अब य सब सदभ भी चुक गए हैं। हम सबने मिलकर इस नकारात्मक लेखन के सभी पहलुओ का इतना ज्यादा रिकार्ड बजा लिया है कि अब यह रिकाड भी घिस गया है। ऐसी परिस्थिति मे आप ही बताइए कि वसन्त ऋतु से सम्बन्धित कौन सा सदर्भ उठाकर रचना लिखी जाय ? अन्तत मजबूर होकर मुझे आपको यह पत्र लिखना पड रहा है और स्वीकार करना पड रहा है कि अब मैं इस काबिल नही रहा कि वसन्त पर कोई रचना लिख सकू। मेरे प्रति बना हुआ आपका भ्रम टूट जाएगा, इसका भय भी मुझे यह पत्र लिखने से नहीं रोक पा रहा है। इस अकेले उदाहरण से ही आप मेरी मन स्थिति का आकलन भली भाति कर सकते हैं।

खैर मन की बात आपको लिखकर मैं हल्का महसूस कर रहा हू। अन्य लेखक जो वसन्त से अब भी जूझ रहे हैं, वे केवल सहानुभूति के पात्र हैं लेकिन मैं आपको आश्वस्त कर रहा हू कि वसन्त के अतिरिक्त अन्य विषयो पर रचनाए लिखने की सभावनाए अभी चुकी नही है इसलिए अपने लेखको की लिस्ट स मेरा नाम एकदम से उडा मत दीजिएगा।

वस तो यह पत्र ही है, लेकिन मैं समझता हू कि वसन्त से सम्बन्धित कई सदभ इसम आ गए हैं इसलिए फालतू क्यो जाए जब कई वरिष्ठ लेखक इस छूट के हकदार हैं तो वसन्त की रचना के बदले मेरे इस पत्र को ही वसन्त की रचना समझ कर छपा लीजिएगा।

स्वस्थ सानन्द होगे तथा आगे के अको के लिए रचनाए मगाना नही

भूलेंगे।

आपका अपना ही,
ईश्वर शर्मा।

पुनश्च—पारिश्रमिक कई दिनों से नहीं आ रहा है। पारिश्रमिक के अभाव में वसन्त का उत्साह भी ढीला पड रहा है। चारों ओर पतझड ही पतझड नजर आ रहा है। यदि कुछ जम जाए तो देख लेंगे।

आपका
ईश्वर शर्मा।

एक अभिनन्दन ऐसा भी

मनुष्य अभिनन्द प्रेमी प्राणी है। जो आनन्दन गजे का नाखून से प्राप्त होता है लगभग वही मजा आदमी को अपना अभिनन्दन करवा कर प्राप्त होता है, हमने तो ऐसे लोग भी देखे हैं जो अपना अभिनन्दन करवाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। कुछ से मेरा मतलब आर्थिक कुछ से है।

अभिनन्दन मे सबसे बहुमूल्य वस्तु होती है—अभिनन्दन पत्र। जिसका अभिनन्दन हो रहा हो उसे आप चाहे जो दे दे, लेकिन यदि अभिनन्दन पत्र नही दिया तो कभी नहीं लगेगा कि उसका अभिनन्दन हुआ है। उसे अभिनन्दन पत्र नही मिलेगा तो वह घर मे टागेगा क्या? दीवाल पर खुद को तो नही टाग देगा?

अभिनदन पत्र लिखन से बडी कला और कुछ नही है और मैं इस कला म इतना दक्ष हो गया हू कि आप मुझे केवल आदमी का नाम और व्यवसाय बता दीजिए मैं तत्काल ऐसे अभिनदन लिख कर फेंक दूगा कि पाने वाले की सात पीढी धन्य हो जाएगी।

पिछले दिनों हुआ यह कि नगर के कुछ लोग सुबह सुबह मेरे यहा आ धमके। व मेरा सावजनिक अभिनदन करने का प्रस्ताव लेकर आए थे। मैं अभी-अभी सो कर उठा था। मुह भी नही धो पाया था कि यह प्रस्ताव सुनकर चौकन्ना हो गया। कही ये मेरा मसखरा अभिनदन करके मजा लूटना तो नहीं चाहते हैं क्योकि मेरी समझ से अभिनदन के लाइक कोई भी लक्षण मुझ म नहीं थे। चुनाव जीत कर न मैं वाइदो से मुकरा हू और ना ही कहीं कोई पुरुषाथ का काम किया है। छात्र आदोलन मे भाग लेकर बस जलाने जैसा मामूली काम भी तो मेरे खाते म जमा नहीं है। फिर

अभिनदन किस बात का ?

मैंन अधिक परशानी नही पालते हुए उनस ही पूछा— मरा अभिनन्न किस उपलब्धि के लिए करना चाहते हैं आप लोग ?"

वे बोले— श्रीमानजी आपने अभिनन्न पत्र लिखने का शतक पूण कर लिया है। हम अभिनदन शतक वीर के रूप म आपका अभिनदन करना चाहत है।" यह उपलब्धि सुनकर मुझे लगा कि अब मैं भी नगर का विशिष्ट व्यक्ति हो गया हू और मैं कुर्सी पर पसर कर बैठ गया।

ना नुकुर की कोई गुजाइश नही थी। मुझे स्वीकृति देनी ही पडी क्योंकि वे व्यावसायिक आयोजनकर्ता थे। उनका काम ही नए नए आयाजन करना और चदा वसूल कर खा जाना था। मैं यदि उनका आफर स्वीकार नही करता, तो वे और किसी व्यक्ति की कोई उपलब्धि ढूढ निकालते उसका अभिनदन करते और मुझसे चदा ले जाते। आयोजन तो उन्ह हर हाल म करना ही था। मैंन साचा, फिलहाल कोई काम भी नही है, खाली बैठे रहन से तो बेहतर है अभिनदन ही करवा लें और चदा भी बचा ल।

आखिर मर अभिनदन का दिन आ ही पहुचा। समारोह भवन जिसे कमरा होने के बावजूद कमरा कहना मेरी गरिमा के अनुकूल नहीं है खचाखच भरा था। समारोह म आधे गणमान्य तो वे थे जिनके अभिनदन मैंने लिखे थ। आधे म आयोजक भरे पडे थे क्योकि समारोह खत्म होन के बाद चदे का हिसाब होता था।

मुझे शाल और श्रीफल दिया गया। मैंन धीरे से शाल को छूकर दखा, कपडा अच्छा था। नारियल को मैंन बाजू मे रख लिया। घर म बच्चे खाएग। वैस अभिनदन क वक्त श्रीफल के साथ सिफाफा देने की परम्परा भी है। लिफाफा नही दखकर मुझे निराशा हुई लेकिन विशेष महत्व था अभिनदन पत्र का जो मुझे समर्पित किया जाने वाला था। उधार अभिनन्न पत्र को पढन की तैयारी प्रारम्भ हो गई थी।

मैं सच कहता हू यह अभिनन्न पत्र मैंन नही लिखा था। यह पहला अवसर था जब नगर म तयार किया गया अभिनदन मैंन नहीं लिखा था। वसे आयोजको ने इसका अवसर मुझ दिया था लकिन मैंने ही इकार कर दिया क्योकि मैं यह दखना चाहता था कि न होते हुए भी दूसरा क जिनन

गुणो का बखान मैंने किया है वैसे ही ये लोग मेरे कौन से गुण गोता मार-कर खोज निकालते हैं।

हा तो अभिनदन पत्र का पठन प्रारम्भ हुआ—

हे सम्मान्य

आपने अभिनदन लेखन का शतक पूर्ण कर न केवल स्वय की श्रेष्ठता सिद्ध की है वरन् इस नगर को भी गौरवान्वित किया है। यह छोटा नगर *आपकी इस महान उपलब्धि के कारण पूरे राष्ट्र मे हमशा हमेशा के लिए याद किया जाता रहेगा।*

हे प्रतिष्ठा वृद्धि के चारण

आपने अभिनदन लेखन के माध्यम से अल्प समय मे ही इतन अधिक लोगो की प्रतिष्ठा वद्धि की है वैसे कोई उदाहरण चिराग लेकर ढूढने पर भी प्राप्त नही होगा। आपकी यह चारण प्रवृत्ति न केवल प्रशसनीय है, वरन स्वागतय है। अनुकरणीय भी। अभी नगर मे बहुत से लोग बाकी हैं

हे मानव गुणो के उन्नायक

आपने अभिनदन पत्रो म जिनका गुणगान बखाना है वे सभी उसे पढ-पढकर वैसा ही बनने के प्रयास मे आज तक लगे हुए हैं। यह आपकी लेखनी का ही अद्वितीय गुण है कि आपने जिन विशेषताओं को प्रतिपादित किया है, उन्हे निर्विवाद रूप से अटल सत्य मान लिया गया है मानवीय गुणो की ऐसी अदभुत परख आप जैसा पारखी ही कर सकता है। साधारण मानवीय गुणो को मुगलिया अदाज म प्रस्तुत करने की आपकी अलौकिक प्रतिभा वर्षों बाद भी याद आती रहेगी।

हे गौरव गरिमा के प्रेरणा स्रोत,

यह आपकी कुशल लेखनी का ही परिणाम है कि आज कोई सवेदन-शील, कोई दढ निश्चयी और कोई त्याग मूर्ति के विशेषणों से सुशोभित हो रहा है। आपके द्वारा प्रवाहित विशेषणो का यह प्रेरणा स्रोत आज समाज मे विशाल धारा के रूप मे विकसित हो गया है। इसकी जितनी भी प्रशसा की जाए कम है। इस धारा मे जो लोग डूबे हैं निकल नही पा रहे हैं।

हे स्तुति गान के सवाहक

आपके द्वारा लिखे गए अभिनन्दन इस बात के साक्षी हैं कि आपकी लेखनी म साक्षात् स्तुति बैठी है। ऐसी अद्वितीय प्रतिभा बिरले लोगो को ही प्राप्त होती है। इसे जन्मजात गुण भी कहू तो अतिशयोक्ति नही होगी। हमारी हार्दिक शुभकामना है कि आपकी लेखनी इस भाति स्तुति गान की सवाहक बनी रहे और गौरवहीना को गौरवान्वित करती रह। बहुत से लोग रुपया लेकर इड़े ट लगाए बैठे हैं।

हे भाट परम्परा के महामान्य,

बदलते मानवीय मूल्यो के परिवेश म जबकि भाट परम्परा का अन्त हो रहा है आपका लेखन इस बात का प्रमाण है कि वतमान म भी इसकी नितान्त आवश्यकता और औचित्य है। इतना ही नही बल्कि जरूरत इस बात की भी है कि नष्ट होते जा रहे इस गुण को राष्ट्रीय नीति के तहत सरचित किया जावे, विकसित किया जावे नगर मे भाट सस्कृति की वृहद सभावनाए विद्यमान हैं।

अन्त मे हम पुन आपका आभार मानते हैं कि आपने अपने स्तुतिगान के व्यस्ततम क्षणो मे से कुछ अमूल्य क्षण स्तुतिगान हेतु हमे प्रदान किया और एक आयोजन का सुअवसर देकर हमारे विशाल उद्देश्यो की पूर्ति मे सहायक सिद्ध हुए। धन्यवाद।

हम हैं आपके,

नगर के व्यवसायिक बुद्धिजीवी।

इसके बाद आयोजक तो चदे का हिसाब करने और अगले आयोजन की रूपरेखा म लग गए और मैं अभिनन्दन पत्र की भाषा सुनकर सोच रहा ─गनीमत है इन्हे केवल यही मालूम है कि मैंने सो अभिनन्दन पत्र लिखे हैं। इन्हे अभी यह नहीं मालूम पड़ा है कि मैंने हजारो की सख्या म शोक पत्र भी लिख डाले हैं नहीं तो ये लोग शोक सन्देश हजारी क रूप म पता नहीं कैसा अभिनन्दन करते। शाल और श्रीफल का उपयोग तो मैंने पहले ही सोच लिया था अभिनन्दन पढ़ते वक्त यह सोच रहा था कि उसे घर म कहां टागूगा। पहले ता मैंने सोचा घर के पहले दरवाजे के सामन वाली दीवार म ही उसे टांग दूंगा जिसस घर म घुसते ही सबकी नजर पहले उस पर पड़ जाए। फिर यह विचार मैंने त्याग दिया क्योंकि वहीं ता

दीवार के पास ही हमशा एक कुत्ता दुम हिलाता बैठा रहता है। उस कुत्ते और अभिनन्दन पत्र को एक साथ देखते ही लोगो के मन म गलतफहमी हो सकती थी।

बहुत सोच विचार कर अन्त म मैंन उसे लिखने की मेज के सामने वाली दिवाल पर टाग दिया और आपसे सच कहता हू कि उसके बाद से मैं एक भी अभिनन्दन नही लिख पाया हू, क्योकि जब भी मैं लिखने बैठता हू तो मेरी नजर उस अभिनन्दन पर पडती है और पता नही क्यो मेरी कलम काप जाती है।

○○